जुलाई-सितंबर 2021 भाग XXXII संख्या: 2 ISSN 0971-1856

भारतीय नारियल पत्रिका

आज़ादी का अमृत महोत्सव

विश्व नारियल दिवस

वेबिनार

2 सितंबर 2021

विशेष रिपोर्ट

भारतीय नारियल पत्रिका

भाग XXXII, संख्या : 2
जुलाई - सितंबर 2021
कोची- 11

परामर्श मंडल

अध्यक्ष
राजबीर सिंह भा.व.से.

सदस्य
डा.बी.एन.एस. मूर्ति
संजीव कुमार सिंह
डा. वेंकटेश एन.हुब्बल्ली

संपादक मंडल

सदस्य
आर. मधु
डा.अल्का गुप्ता

मुख्य संपादक
राजीव भूषण प्रसाद

संपादक
एस. बीना

उप संपादक
संगीता टी.एस.

संपादन सहयोगी
विन्दु रानी एन.
डा. सूर्या प्रत्यूष

प्रकाशक :
नारियल विकास बोर्ड
(कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय,
कृषि, सहकारिता एवं किसान कल्याण विभाग,
भारत सरकार)
केरा भवन, कोची - 682 011, भारत
दू. भा. : 0484-2376265, 2377266, 2377267, 2376553.
फैक्स : 91-484-2377902
ग्राम्स : KERABOARD
ई-मेल : kochi.cdb@gov.in, cdbkochi@gmail.com
वेबसाइट : www.coconutboard.gov.in

नारियल कृषि एवं उद्योग के विभिन्न पहलुओं पर आधारित लेख, शोध निबन्ध और पत्र इस पत्रिका में प्रकाशन हेतु आमंत्रित किये जाते हैं। सभी स्वीकृत सामग्रियों को मानदेय दिया जाएगा। इस पत्रिका में प्रकाशित लेखों में प्रकट किए गए विचार लेखकों के अपने हैं और बोर्ड उनके लिए उत्तरदायी नहीं है। शुल्क और पत्र अध्यक्ष, नारियल विकास बोर्ड, केरा भवन, कोची - 682 011 के नाम पर भेज दें।

नारियल विकास बोर्ड

भारत सरकार ने देश में नारियल खेती एवं उद्योग के समन्वित विकास के लिए स्वायत्त निकाय के रूप में नारियल विकास बोर्ड की स्थापना की। बोर्ड, जो 1981 जनवरी 12 को अस्तित्व में आया, भारत सरकार के कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय के प्रशासनिक नियंत्रण में कार्यरत है। इसका मुख्यालय केरल के कोची में है और क्षेत्रीय कार्यालय कर्नाटक के बैंगलूर, तमिलनाडु के चेन्नई, असम के गुवाहटी और बिहार के पटना में हैं। बोर्ड के पाँचः राज्य केन्द्र भी हैं और ये ओड़िशा के भुबनेश्वर, पश्चिम बंगाल के कोलकात्ता, आँध्र प्रदेश के विजयवाड़ा, महाराष्ट्र के ठाणे एवं संघशासित क्षेत्र अंडमान व निकोबार द्वीप समूह के पोर्ट ब्लेयर में स्थित हैं। बोर्ड के प्रदर्शन सह बीज उत्पादन फार्म नेर्यमंगलम (केरल), वेगिवाड़ा (आँध्र प्रदेश), कोंडागाँव (छत्तीसगढ़), मधेपुरा (बिहार), अभयपुरी (असम), पित्तापल्ली (ओड़िशा), मंड्या (कर्नाटक), पालघर (महाराष्ट्र), धली (तमिलनाडु), साउथ हिच्चाचेरा (त्रिपुरा) तथा फुलिया (पश्चिम बंगाल) में हैं। इसके अलावा बोर्ड का बाज़ार विकास सह सूचना केन्द्र दिल्ली में है। केरल के आलुवा के पास वाष़क्कुलम में बोर्ड ने प्रौद्योगिकी विकास केन्द्र की स्थापना की है।

बोर्ड के मुख्य प्रकार्य

• नारियल उद्योग के विकास हेतु उपाय अपनाना। • नारियल एवं उसके उत्पादों का विपणन सुधारने हेतु उपायों की सिफारिश करना। • नारियल खेती एवं उद्योग में लगे लोगों को तकनीकी सलाह देना। • नारियल खेती के अधीन क्षेत्र विस्तार के लिए वित्तीय एवं अन्य सहायता देना। • नारियल एवं उसके उत्पादों के संसाधन के लिए आधुनिक प्रौद्योगिकियाँ अपनाने को प्रोत्साहित करना। • नारियल एवं उसके उत्पादों को प्रोत्साहन मूलक भाव मिलने हेतु उपाय अपनाना। • नारियल एवं उसके उत्पादों के आयात और निर्यात नियंत्रित करने हेतु उपायों की सिफारिश करना। •नारियल एवं उसके उत्पादों के लिए श्रेणी, विनिर्देश एवं मानक निर्धारित करना। •नारियल का उत्पादन बढ़ाने के लिए उपयुक्त योजनाओं को आर्थिक सहायता देना। • नारियल एवं उसके उत्पादों के कृषि, प्रौद्योगिकीय, औद्योगिक या आर्थिक अनुसंधानों को सहायता देना, प्रोत्साहन देना, बढ़ावा देना एवं आर्थिक सहायता देना। • केन्द्रीय सरकार तथा बड़े पैमाने में नारियल की खेती वाले राज्यों की सरकारों से विचार विमर्श करके नारियल का उत्पादन बढ़ाने, प्रजातीय गुणवत्ता और उपज सुधारने के लिए उपयुक्त योजनाओं को वित्तीय सहायता देना तथा इसी उद्देश्य के लिए नारियल कृषकों और नारियल उत्पादों के विनिर्माताओं को पुरस्कार और प्रोत्साहन राशि प्रदान करने के लिए योजनाएं बनाना और नारियल एवं नारियल उत्पादों के विपणन के लिए सुविधाएं उपलब्ध कराना। • नारियल एवं उसके उत्पादों के उत्पादन, प्रसंस्करण और विपणन संबंधी आँकड़े एकत्रित करना एवं उन्हें प्रकाशित करना। • नारियल एवं उसके उत्पादों से संबंधित प्रचार कार्य करना एवं पुस्तकें व पत्रिकाएं प्रकाशित करना।

बोर्ड द्वारा 'भारत में नारियल उद्योग के एकीकृत विकास' परियोजना के अधीन कार्यान्वित विकास कार्यक्रम हैं: रोपण सामग्रियों का उत्पादन व विपणन, नारियल के अधीन क्षेत्र विस्तार, उत्पादकता सुधारने के लिए एकीकृत खेती, प्रौद्योगिकी निदर्शन, बाज़ार संवर्धन और सूचना व सूचना प्रौद्योगिकी।

नारियल प्रौद्योगिकी मिशन के अधीन बोर्ड द्वारा कार्यान्वित कार्यक्रम हैं प्राणी कीटों व रोगों से ग्रस्त नारियल बागानों के प्रबंधन के लिए प्रौद्योगिकियों का विकास, निदर्शन तथा अंगीकरण, प्रसंस्करण, उत्पाद विविधीकरण, बाज़ार अनुसंधान व संवर्धन के लिए प्रौद्योगिकियों का विकास और अंगीकरण।

शुल्क

वार्षिक	40 रु.
एक प्रति	10 रु.
आजीवन (30 वर्ष)	1000 रु.

नारियल विकास बोर्ड द्वारा प्रकाशित तथा सर्वश्री केबीपीएस, काक्कनाट में मुद्रित

इस अंक में

04

अध्यक्ष की कलम से....

05

गर्मी के मौसम में नारियल बागों के प्रबंधन के लिए एकीकृत प्रौद्योगिकी
वी.वी.शिंदे, एस.एल.घावले, एस.एम.वानखेड़े और एच.पी.महेश्वरप्पा

12
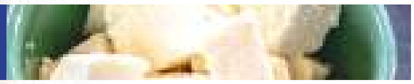
नारियल दूध पनीर का विकास एवं उसकी गुणात्मक विशिष्टताओं का मूल्यांकन
वर्षा क्लारा वर्गीस, डा. अनु जोसफ, श्रीमती अनीटा जोय

17
आ गयी है नई मशीन, अब बैठकर चढ़ें नारियल पेड़ पर और तुड़ाई करें
डा.सिंधु भास्कर

18

तालाबों की गाद - नारियल की उत्पादकता बढ़ाने का प्रभावी माध्यम
आर.श्रीनिवासन, एन.मद्दिलेती, एम.ललिता, बी.कलैसेल्वी और राजेंद्र हेगडे

23

पर्याप्त मात्रा में सिंचाई करें, थालों में पलवार लगाएं
अनिता कुमारी पी., जितिन षाजु और अंजु कृष्णन

26
नारियल बागों में मसाला फसलों की मिश्रित खेती
- उन्नतिशील ग्रामीण महिलाओं की सफलगाथा
वी. वी. शिंदे, एस.एल. घावले, एस.एम वानखेड़े, एच. पी. महेश्वरप्पा एवं पी.एम. हलदणकर

29

नारियल बाग में शीतकालीन सब्जियों की लाभदायक खेती
किसान समूह की बेहतर आजीविका के लिए
अरुण कुमार सित और संदीप शिल

31
नारियल बागों में मासिक कार्य

समाचार 45

बाज़ार समीक्षा 61

बाज़ार रिपोर्ट 65

अध्यक्ष की कलम से....

प्रिय पाठकों.......

मैं नारियल क्षेत्र के सारे हितधारकों को अपना हार्दिक आभार प्रकट करना चाहता हूँ जिन्होंने अपनी सक्रिय सहभागिता से विश्व नारियल दिवस 2021 के सिलसिले में आयोजित कार्यक्रम को सफल बनाया है। कल्पवृक्ष की अहमियत को मनाने के लिए एक समर्पित दिवस का होना मौजूदा परिस्थितियों में अत्यंत समीचीन लगता है क्योंकि इसके पौष्टिक और स्वास्थ्यदायक गुण दिन-ब-दिन बढ़ते जा रहे हैं। आज़ादी का अमृत महोत्सव समारोह में विश्व नारियल दिवस 2021 को शामिल करना सोने पे सुहागा जैसा हुआ और बोर्ड ने कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार के तत्वावधान में इंटरनेशनल कोकनट कम्यूनिटी(आईसीसी) के स्थापना दिवस के स्मरणोत्सव के सिलसिले में 23वें विश्व नारियल दिवस मनाया। इंटरनेशनल कोकनट कम्यूनिटी द्वारा कोकोटेक सम्मेलन के आखिरी दिवस विश्व नारियल दिवस भी मनाया गया जिसमें 20 सदस्य देशों ने और विश्व भर के हितधारकों ने भाग लिया। भारत ने भी इस समारोह में भाग लिया।

माननीय केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री, भारत सरकार ने सभा को संबोधित किया। उन्होंने हितधारकों को सूचित किया कि भारत सरकार का संकल्प है कि नारियल के उत्पादन और उत्पादकता में वृद्धि लायी जाए और साथ ही साथ नारियल के प्रसंस्करण और निर्यात को भी बढ़ाया जाए। इस दृष्टि से देश के कृषि बजट में काफी उल्लेखनीय वृद्धि की गई है। हमारा परम लक्ष्य किसानों की आय बढ़ाना और रोज़गार के लिए अधिकाधिक अवसर भी सृजित करना है, तद्वारा इस क्षेत्र से जुड़े सारे लोगों को आजीविका और समाजिक सुरक्षा प्रदान करना है। भारत नारियल की खेती, प्रसंस्करण और निर्यात के क्षेत्र में काफी आगे निकल चुका है। नारियल क्षेत्र के समग्र विकास और नारियल किसानों की समावेशी प्रगति को लक्षित करते हुए प्रयास किए जाने पर यह फसल देश की अर्थव्यवस्था में काफी ज़ोरदार प्रभाव डाल सकती है।

नारियल विकास बोर्ड का लक्ष्य देश में नारियल की खेती और संबद्ध उद्योग का एकीकृत विकास करना है और बोर्ड हमेशा नारियल किसानों की खुशहाली के बारे में चिंतित रहता है। गत चार दशकों से लेकर बोर्ड के संगठित और अनवरत प्रयासों के ज़रिए नारियल क्षेत्र ने प्रसंस्करण और मूल्य वर्धन, नवीन उत्पादों का विनिर्माण, आधुनिक प्रौद्योगिकियों की प्रस्तुति, गुणवत्ता मानदंड और नूतन विपणन रणनीतियों जैसे प्रमुख क्षेत्रों में कदम बढ़ाया है।

वास्तव में यह काफी सराहनीय है कि हितधारकों को अधिकतम आय सुनिश्चित करने हेतु इस क्षेत्र के एकीकृत विकास के लिए नीति निर्माता अपना भरपूर समर्थन और सहयोग दे रहे हैं। बोर्ड देश के करोड़ों लघु और सीमांत नारियल किसानों की उन्नति के लिए अपने प्रयास जारी रखेगा और नारियल क्षेत्र की विविध आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए और भी अधिक व्यवहार्य कार्यक्रम रूपायित करेगा।

राजबीर सिंह भा.व.से.
अध्यक्ष

गर्मी के मौसम में नारियल बागों के प्रबंधन के लिए एकीकृत प्रौद्योगिकी

वी.वी.शिंदे[1], एस.एल.घावले[2], एस.एम.वानखेड़े[3] और एच.पी.महेश्वरप्पा[4]

[1]कृषि वैज्ञानिक, [2]अनुसंधान अधिकारी और [3]कनिष्ठ कीटवैज्ञानिक,
भा.कृ.अनु.प.-अखिल भारतीय समन्वित ताड़ अनुसंधान परियोजना, प्रादेशिक नारियल अनुसंधान केंद्र, भाट्ये, रत्नागिरी,
[4]परियोजना समन्वयक, भा.कृ.अनु.प.-अखिल भारतीय समन्वित ताड़ अनुसंधान परियोजना,
भा.कृ.अनु.प.-केंद्रीय रोपण फसल अनुसंधान संस्थान, कासरगोड, केरल

महाराष्ट्र में नारियल क्षेत्र

नारियल महाराष्ट्र के कोंकण क्षेत्र की प्रमुख सिंचित बागवानी फसल है। कोंकण और पश्चिमी महाराष्ट्र की कृषि जलवायु परिस्थितियाँ नारियल की खेती के लिए काफी अनुकूल होती हैं। महाराष्ट्र सरकार ने 1990 में फलदार फसलों की खेती के लिए एक महत्वाकांक्षी रोज़गार गैरंटी योजना(ईजीएस) शुरू की है, जिसकी वजह से नारियल का खेतीगत क्षेत्र बढ़कर 43320 हेक्टर हो गया है और उत्पादकता प्रति हेक्टर 4885 नारियल *(स्रोतः संयुक्त कृषि निदेशक की रिपोर्ट 2019)* है। नारियल के अधीन क्षेत्र की दृष्टि से महाराष्ट्र सातवें स्थान पर है और सालाना कुल 2098.70 लाख नारियल के साथ उत्पादन में नवें स्थान पर है। 1986-87 से 2020-21 तक 33 वर्षों की अवधि के दौरान नारियल का खेतीगत क्षेत्र बढ़कर 6900 हेक्टर से 43320 हेक्टर हो गया है और उत्पादन 763.20 लाख नारियल से बढ़कर 2098.70 लाख नारियल हो गया है। नारियल के अधीन सबसे अधिक क्षेत्र सिंधुदुर्ग जिले में है और उसके बाद रत्नागिरी जिला आता है (सारणी 1)।

सारणी 1: महाराष्ट्र राज्य में नारियल के जिलेवार क्षेत्र, उत्पादन और उत्पादकता

क्र.सं.	जिला	क्षेत्र(हे.)	उत्पादन *(लाख नारियल)*	उत्पादकता *(फल/हे.)*
1.	सिंधुदुर्ग	17929.00	1457.00	
2.	रत्नागिरी	5556.00	406.00	
3.	रायगढ़	2248.00	107.00	
4.	ठाणे	1161.70	8.00	4845.0
5.	पालघर	1473.90	16.00	
6.	अन्य	148520	96.00	
	कुल	**43320.60**	**2090.00**	

(स्रोतः संयुक्त कृषि निदेशक की रिपोर्ट 2019)

वर्ष 1955 के दौरान अखिल भारतीय समन्वित ताड़ अनुसंधान परियोजना की स्थापना से लेकर उनकी मदद से महाराष्ट्र के रत्नागिरी जिले में स्थित प्रादेशिक नारियल अनुसंधान स्टेशन, भाट्ये और डा. बालासाहेब सावंत कोंकण

प्रादेशिक नारियल अनुसंधान केंद्र, भाट्ये

कृषि विद्यापीठ, दापोली उस क्षेत्र के नारियल किसानों की आवश्यकताओं की आपूर्ति कर रहे हैं। इस अनुसंधान केंद्र ने प्रताप किस्म और कोंकण भाट्ये नारियल संकर (गंगाबोंदम हरा बौना X पूर्व तटीय लंबा) किस्म विकसित करने में और नारियल की सात अनुशंसित किस्में तैयार करने में योगदान दिया है जिनका रोपण इस क्षेत्र के नारियल किसान सामान्यतया करते आ रहे हैं। इस केंद्र में विकसित नारियल की प्रौद्योगिकी नारियल किसानों के लिए काफी गुणकारी है। अखिल भारतीय समन्वित ताड़ अनुसंधान परियोजना के अधीन नारियल आधारित बहुमंज़िली फसल प्रणाली पर अध्ययन चलाया गया और डा. बालासाहेब सावंत कोंकण कृषि विद्यापीठ, दापोली की सिफारिश के साथ प्रादेशिक नारियल अनुसंधान केंद्र, भाट्ये में यह प्रणाली विकसित हुई। किसानों के बीच 'लाखी बाग' के नाम से यह काफी लोकप्रिय हुई क्योंकि इससे प्रति वर्ष प्रति एकड़ क्षेत्र से एक लाख रुपए की आय प्राप्त होती है। गर्मी के मौसम में जो समस्याएं उत्पन्न होती हैं उन्हें दूर करने के लिए जो प्रौद्योगिकियाँ अपनायी जानी हैं, उनके बारे में किसानों को जानकारी होनी चाहिए।

कृषीय फसल प्रबंधन

1) स्वच्छ खेती

नारियल की स्वच्छ खेती करने की सिफारिश की जाती है क्योंकि निराई-गुड़ाई जैसी अंतरखेती प्रक्रियाएं निरंतर चलाकर स्वच्छ खेती करने से नारियल पेड़ों की बढ़वार और पैदावार पर गुणकारी प्रभाव देखा गया है। खेती प्रक्रियाएं अपनाए बगैर नारियल पेड़ से प्रति वर्ष मात्र 15 फल ही प्राप्त होते थे जब कि इन पेड़ों के लिए तीन बार अंतरखेती प्रक्रियाएं अपनाए जाने से प्रति वर्ष प्रति ताड़ 48 नारियल प्राप्त हुए (अर्थात् 68.66 प्रतिशत वृद्धि)।

2) पौधा स्वास्थ्य प्रबंधन

गर्मी के मौसम में ताड़ों का स्वास्थ्य सुरक्षित रखने के लिए ताड़ की आयु और इसके पूर्व पैदावार विवरणों के मुताबिक सामयिक सिंचाई प्रबंधन सहित समुचित पोषण प्रदान करना अत्यंत महत्वपूर्ण होता है।

नारियल के साथ नरगिस फूल की अंतर खेती

क) उर्वरकों का प्रयोग

महाराष्ट्र के कोंकण क्षेत्र की बलुई मृदा में नारियल खेती करने के लिए प्रति वर्ष प्रति ताड़ 1000 ग्राम नत्रजन, 500 ग्राम फोस्फरस और 1000 ग्राम पोटेश तीन भागों में देने की सिफारिश दी जाती है। यदि ताड़ को पौष्टिक तौर पर मज़बूत और तंदुरुस्त बनाया जाए तो ताड़ गर्मी का मौसम झेलने में सक्षम हो जाता है।

ख) संकर नारियल के लिए उर्वरकों की अपेक्षाएं

संचित पैदावार और आर्थिकी के आधार पर नारियल संकर पौधों के लिए निम्नप्रकार से खुराक देने की सिफारिश की गई है।

सारणी 2

क्र. सं.	आयु	घूरे की खाद कि.ग्रा/ ताड़	नत्रजन/फोसफरस/पोटेशियम ग्रा./ताड़/वर्ष			
			नत्रजन (ग्रा.)	फोसफरस पेंटोक्साइड (ग्रा.)	पोटेशियम ऑक्साइड (ग्रा.)	
					उन्नत किस्म	संकर किस्म
1.	पहला वर्ष	10	200	100	200	400
2.	दूसरा वर्ष	20	400	200	400	800
3.	तीसरा वर्ष	30	600	300	600	1200
4.	चौथा वर्ष	40	800	400	800	1600
5.	पाँचवां वर्ष	50	1000	500	1000	2000

उर्वरकों का प्रयोग तीन भागों में किया जाना चाहिए। जून महीने में नत्रजन और पोटेशियम ऑक्साइड का एक तिहाई भाग, फोसफरस पेंटोक्साइड और घूरे की खाद की पूरी खुराक का प्रयोग और नत्रजन और पोटेशियम ऑक्साइड के शेष दो तिहाई भाग का प्रयोग दो भागों में (अक्तूबर और फरवरी) किया जाना चाहिए।

ग) सूक्ष्म सिंचाई तकनीक के ज़रिए उर्वरकों का प्रयोग

अक्तूबर से मई के दौरान सूक्ष्म सिंचाई के ज़रिए प्रति वर्ष प्रति ताड़ 1 कि.ग्रा. नत्रजन, 0.5 कि.ग्रा. फोसफरस पेंटोक्साइड और 1 कि.ग्रा. पोटेशियम ऑक्साइड (अनुशंसित मात्रा) का प्रयोग आठ भागों में बाँट कर करना चाहिए।

घ) सूक्ष्म पौष्टिकतत्वों का प्रयोग

1.5 कि.ग्रा. सूक्ष्म पौष्टिकतत्वों (जिंक 3.15 प्रतिशत, मैगनीशियम 1.8 प्रतिशत, कोपर 0.65 प्रतिशत, आयरन 1.97 प्रतिशत, मैंगनीज़ 2 प्रतिशत, मोलिब्डिनम 0.05 प्रतिशत और बोरोन 0.68 प्रतिशत) के साथ अनुशंसित मात्रा (1:0.5:1 कि.ग्रा.) में प्रति वर्ष प्रति ताड़ नत्रजन, फोसफरस और पोटेश का प्रयोग करने पर अधिकतम पैदावार (प्रति वर्ष प्रति ताड़ 129 नारियल) रिकार्ड की गई और उपचार पूर्व अवधि की पैदावार की तुलना में उपचार के बाद की पैदावार में वृद्धि प्रतिशत अधिक रहा। इसलिए वयस्क नारियल ताड़ों के लिए 1.5 कि.ग्रा. सूक्ष्म पौष्टिकतत्वों के साथ अनुशंसित मात्रा में उर्वरकों का प्रयोग तीन भागों में करने की सिफारिश दी जाती है।

3) सिंचाई प्रबंधन

क) नारियल पौधों की अतिजीविता और बढ़वार पर जल की गुणवत्ता का प्रभाव

तटीय बलुई मिट्टी में रोपित पश्चिम तटीय लंबी किस्म के एक वर्षीय नारियल पौधे की बढ़वार पर पानी की गुणवत्ता का मूल्यांकन करने के लिए एक परीक्षण चलाया गया। परीक्षण की अवधि के दौरान समुद्री पानी से सिंचाई करने से वृद्धि के सभी चरणों में प्राथमिक लवणीय तनाव के कारण नुकसानदेह प्रभाव देखा गया और यह झिल्ली विघटन और चयापचयी क्रियाओं में बाधा उत्पन्न करने का कारण बन गया। समुद्री पानी के साथ ताज़ा पानी मिलाने से प्राथमिक तनाव कुछ हद तक कम हुआ किंतु इससे लवणीय तनाव की समस्या उत्पन्न

केले की अंतर खेती

हुई जिसकी वजह से खनिजों का अवशोषण कम हुआ। इसके कारण पौधों की बढ़वार कमज़ोर हुई।

ख) ड्रिप विधि द्वारा नारियल ताड़ की सिंचाई

कोंकण क्षेत्र के तटीय बलुई मिट्टी में वयस्क नारियल ताड़ों के लिए नीचे भाग से 1.25 मीटर की दूरी में स्थापित छह ड्रिपरों के साथ अक्तूबर से जनवरी के दौरान प्रति दिन प्रति ताड़ 30 लीटर और फरवरी से मई के दौरान 40 लीटर पानी से ड्रिप सिंचाई अनुशंसित है।

ग) नारियल में सूक्ष्म-सिंचाई तकनीक के ज़रिए उर्वरकों का प्रयोग

नारियल पेड़ से उच्च पैदावार प्राप्त करने के लिए अक्तूबर से मई के दौरान ड्रिप सिंचाई के ज़रिए प्रति वर्ष प्रति ताड़ अनुशंसित अनुसार 1 कि.ग्रा. नत्रजन, 0.5 कि.ग्रा. फोसफरस पेंटोक्साइड और 1 कि.ग्रा. पोटेशियम ऑक्साइड का प्रयोग आठ भागों में करना चाहिए।

4) नारियल आधारित फसल प्रणाली

क) नारियल के साथ मिर्च की अंतरखेती

नारियल बाग में अंतर फसल के रूप में हरी मिर्च (ज्वाला और कोंकण कीर्ति किस्में) की अंतर खेती करने से उच्च पैदावार और सर्वाधिक शुद्ध आय प्राप्त होती है।

ख) नारियल के साथ सब्जियों की अंतरखेती

प्रति हेक्टर प्रति श्रम दिवस प्राप्त आर्थिक आय के आधार पर, सेमफली को सबसे ज्यादा लाभकर सब्जी फसल मानी जाती है जब कि टमाटर की खेती से रोज़गार के बृहत अवसर और आकर्षक पैदावार प्राप्त होती है।

ग) नारियल के साथ बारानी सब्जियों की अंतरखेती

नारियल बागानों में बारिश के मौसम में तुरई, खीरा, चिचिण्डा और करेला जैसी बारानी सब्जियों की अंतरखेती करने की सिफारिश दी जाती है।

घ) नारियल के साथ मसाला फसलों की मिश्रित खेती

नारियल पेड़ों के बीच अंतरफसलों के रूप में रोपित दालचीनी, जायफल, काली मिर्च और लौंग की बेहतर बढ़वार और अच्छी फलदायी क्षमता से यह साबित हुआ है कि महाराष्ट्र के कोंकण क्षेत्र में वाणिज्यिक तौर पर इनकी खेती की जा सकती है। नारियल बागों में अंतरफसल के रूप में मसाला फसलों का रोपण करने के बाद प्रति नारियल पेड़ से प्राप्त औसत पैदावार गत चार परीक्षण वर्षों की औसत पैदावार की तुलना में 26वें वर्ष के अंत में 25 से 93 प्रतिशत बढ़ गया। जायफल (22 वर्ष की आयु में) नारियल बाग की सर्वोत्तम अंतरफसल साबित हुई है। जायफल और नारियल दोनों का मिलाकर प्रति हेक्टर प्राप्त शुद्ध आय 1,23,970 रुपए था जब कि मात्र जायफल से 47,240 रुपए की आय प्राप्त हुई। एकल फसल के रूप में नारियल से प्रति हेक्टर 31,349 रुपए की आय प्राप्त हुई। विमोचित शुद्ध आर्थिक आय के बलबूते यह अनुशंसा दी जाती है कि महाराष्ट्र के कोंकण

सारणी 3: डा. बालासाहेब सावंत कोंकण कृषि विद्यापीठ, दापोली द्वारा निकाली गई किस्में					
क्र. सं.	नाम	जनक	विमोचित/ सिफारिश किया गया वर्ष	पैदावार(फल/ ताड़/वर्ष)	खास विशेषताएं
विमोचित किस्में					
1.	प्रताप	-	1987	140-145	पहले पुष्पण की आयु(वर्ष)-6-7 प्रति फल औसत सूखा खोपरा(ग्रा.)-120-160 तेल का प्रतिशत - 68
2.	कोंकण भाट्ये नारियल संकर 1	गंगाबोंदम हरा बौना x पूर्व तटीय लंबा	2007	120-122	पहले पुष्पण की आयु(वर्ष)-4.5-5 प्रति फल औसत सूखा खोपरा(ग्रा.)-160-169 तेल का प्रतिशत - 67.10
अनुशंसित किस्में					
1.	लक्षद्वीप साधारण (चंद्रकल्पा)	-	1985	146-150	पहले पुष्पण की आयु(वर्ष)-6-7 प्रति फल औसत सूखा खोपरा(ग्रा.)-140-180 तेल का प्रतिशत - 72
2.	केरा संकरा (लं x बौ.)	पश्चिम तटीय लंबा x चावक्काट नारंगी बौना	1989	135-140	पहले पुष्पण की आयु(वर्ष)-4.5-5 प्रति फल औसत सूखा खोपरा(ग्रा.)-170-190 तेल का प्रतिशत - 68
3.	फिलीपीन्स साधारण (केरा चंद्रा)	-	1995	100-105	पहले पुष्पण की आयु(वर्ष)-6-7 प्रति फल औसत सूखा खोपरा(ग्रा.)-215-225 तेल का प्रतिशत - 69
4.	बनावली	-	2007	80-150	पहले पुष्पण की आयु(वर्ष)-7-8 प्रति फल औसत सूखा खोपरा(ग्रा.)-100-195 तेल का प्रतिशत - 68-70
5.	चंद्र संकरा (बौ. x लं.)	चावक्काट नारंगी बौना x पश्चिम तटीय लंबा	2003	145-150	पहले पुष्पण की आयु(वर्ष)-4.5-5 प्रति फल औसत सूखा खोपरा(ग्रा.)-160-200
6.	फिजी (केरा बस्तर)	-	2007	116-120	पहले पुष्पण की आयु(वर्ष)-6-7 प्रति फल औसत सूखा खोपरा(ग्रा.)-169 तेल का प्रतिशत - 67.10
7.	गोदावरी गंगा	-	2007	96	पहले पुष्पण की आयु(वर्ष)-4.5-5 प्रति फल औसत सूखा खोपरा(ग्रा.)-230 तेल का प्रतिशत - 64.05

क्षेत्र में पेड़ों के बीच पर्याप्त दूरी छोड़कर लगाए गए नारियल बागों में जायफल, दालचीनी और लौंग की अंतरखेती करना लाभदायक होती है।

ङ) लाखी बाग

मसालों पर किए गए मिश्रित खेती परीक्षणों के आधार पर विश्वविद्यालय ने लाखी बाग संकल्पना का प्रचार किया है। इसका तात्पर्य नारियल बागों में मसाला फसलों की, खासतौर पर दालचीनी, जायफल और कालीमिर्च की अंतरखेती करने से है और यह प्रणाली अपनाने से एक एकड़ ज़मीन से किसानों को एक लाख रुपए की आय प्राप्त हो सकती है और इसलिए इसे लाखी बाग कहा जाता है जो मोडल 1 में दर्शाया गया है।

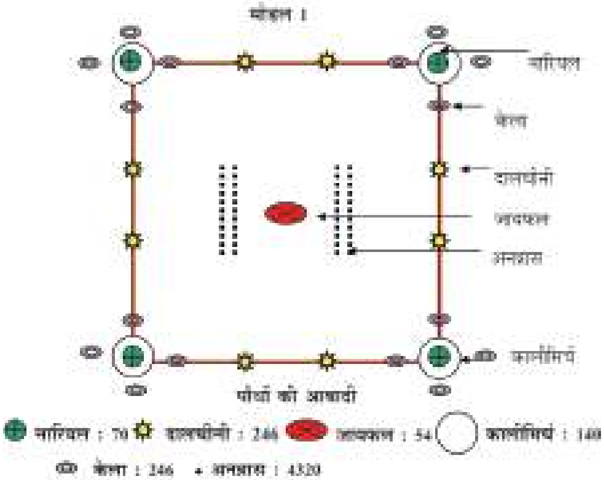

च) फलदार फसलों और कंद मूल फसलों से अंतरखेती

आर्थिक तौर पर अधिक आय प्राप्त करने के लिए महाराष्ट्र के कोंकण क्षेत्र के नारियल बागानों में चार अंतरफसलें जैसे कि हल्दी, केला, अनन्नास और कसावा की खेती करने की सिफारिश की जाती है।

छ) जैवभार का एकत्रीकरण और नारियल आधारित फसल प्रणाली में उपयोग

नारियल की जैवभार उत्पादकता प्रति हेक्टर 3.4 से 5.1 टन है जबकि विभिन्न मसालों से प्रति हेक्टर 161 कि.ग्रा. से 4450 कि.ग्रा. तक जैवभार प्राप्त होता है। नारियल की वेर्मीकंपोस्ट उत्पादकता प्रति हेक्टर 2 से 3 टन के बीच है जबकि विभिन्न मसाला फसलों में यह 48 कि.ग्रा. से 1.5 टन तक है। उपलब्ध जैवभार का समुचित उपयोग करने पर प्रति हेक्टर नारियल बाग का पौष्टिकतत्व

नारियल के थाले में गिरिपुष्प का प्रयोग

बोर्डो पेस्ट का प्रयोग

वर्मीकंपोस्ट का प्रयोग

पुनर्चक्रण दर 43.62 कि.ग्रा. नत्रजन, 9.64 कि.ग्रा. फोस्फरस, 30.13 कि.ग्रा. पोटेशियम, 21.81 कि.ग्रा. कैल्शियम और 16.56 कि.ग्रा. मैगनीशियम है। जैविक पुनर्चक्रण से नारियल के लिए अपेक्षित लगभग 33 प्रतिशत नत्रजन, 2.7 प्रतिशत फोस्फरस पेंटोक्साइड और 22.96 प्रतिशत पोटेशियम ऑक्साइड और मसाला फसलों के लिए अपेक्षित लगभग 20.40 प्रतिशत नत्रजन, 2.7 प्रतिशत फोस्फरस पेंटोक्साइड और 20.67 प्रतिशत पोटेशियम ऑक्साइड जैसी अजैविक उर्वरकों की आपूर्ति जैविक पुनर्चक्रण से हो सकती है।

ज) नारियल बागों में औषधीय और सगंध फसलों का उत्पादन

अंतरफसल के रूप में विभिन्न औषधीय फसलों की बढ़वार और उनकी बाज़ार माँग के मद्देनज़र महाराष्ट्र के कोंकण क्षेत्र के नारियल बागानों में अंतरफसल के रूप में शिशुमूल, लेमनग्रास, शतावरी, अडूसा और गंजनी की खेती की सिफारिश की जाती है।

5) देशी तकनीकी जानकारी

गर्मी के मौसम के दौरान सूखे नारियल पत्तों से पलवार करना, छिलका गाड़ना और कयर गूदा का प्रयोग प्रचलित और अधिकतर नारियल किसानों द्वारा अपनायी जाने वाली विधियाँ हैं। ये स्पंज के रूप में कार्य करते हैं और इनके वजन से छह गुना अधिक पानी का अवशोषण करते हैं। इस समय ताड़ों के प्रबंधन के संबंध में कुछ जानकारी आधारित सूचनाएं नारियल किसानों के पास अपनी पसंद और अनुभव के आधार पर उपलब्ध हैं। ये ऐसी अनूठी तकनीकी जानकारियाँ हैं जो किसी खास परिस्थिति के लिए अपनायी जा सकती हैं। ये जानकारियाँ सारणी 4 में दी गई हैं।

सारणी 4

क्र.सं.	देशी तकनीकी जानकारी	जानकारी के पीछे के वैज्ञानिक कारण
1.	नियमित रूप से ताड़ के थाले में हल्के ढलान के साथ मिट्टी की भराई ताकि जड़ें मिट्टी से बाहर प्रकट न हों।	नारियल एकबीजपत्री फसल है। इसकी जड़ प्रणाली रेशेदार होती है, इसमें मूसला जड़ मौजूद नहीं होती है। यदि इसे मिट्टी से अच्छी तरह ढक कर सुरक्षित रखा जाए तो, जड़ तंत्र बेहतर होता है। पानी और पौष्टिकतत्वों का अवशोषण करने के लिए यह तंत्र काफी सक्रिय हो जाता है जिससे ताड़ की उत्पादकता और वृद्धि बेहतर होती है। जड़ तंत्र सक्रिय बना रहता है।
2.	सतही सिंचाई/बाढ़ सिंचाई बंध विधि से और ताड़ के मूल भाग से 1.25 मीटर की दूरी पर	कई स्थानों में नहरों के ज़रिए सतही पानी ताड़ के जड़ क्षेत्र से होकर बह जाता है। इससे रेशे के ऊतक नम हो जाते हैं। इसके कारण गर्मी के मौसम में ताड़ के धड़ क्षेत्र में दरारें और सूक्ष्म ज्वलन उत्पन्न होता है जहाँ से लाल ताड़ घुन और फफूँद ताड़ के अंदर प्रवेश करते हैं। यही नहीं बारिश के मौसम में भूस्तर से ऊपर भी जड़ें निकलने लगती हैं जो देखने में भद्दा और विकृत लगती हैं।
3.	थालों की खुदाई और सतही पानी के भंडारण हेतु चारों ओर नालों का निर्माण।	तीन साल में एक बार थाला क्षेत्र में जड़ तंत्र की खुदाई करने से पुराने जड़ों को काटकर निकालने में मदद मिलती है और जड़ तंत्र में बेहतर अवशोषण के लिए नई सक्रिय जड़ों का विकास होता है।
4.	अंकुरण के लिए बुआई करने से पहले एक महीने तक बीजफलों को पानी में भिगोकर रखना।	गर्मी के दिनों में पानी का तापमान सामान्य से थोड़ा अधिक हो जाता है, जो छिलके के निम्नीकरण के लिए सहायक होता है, ठोस छिलका आवरण नष्ट हो जाता है और एकसमान वृद्धि के साथ प्रांकुर आसानी से उग जाता है और बढ़वार बेहतर हो जाती है।
5.	गर्मी के दौरान ताड़ के तने पर 10 प्रतिशत बोर्डो पेस्ट का प्रयोग	इससे ताड़ का 1.25 मीटर तक मूल तना क्षेत्र ढक जाता है जहाँ से गर्मी के मौसम के दौरान विविध फफूँदों और कीटों का प्रवेश होता है। यह आतपदाह/धूप आघात से ताड़ों को बचाने के लिए सुरक्षा परत के रूप में भी कार्य करता है।

नारियल पत्रिका की ग्राहकी के लिए ऑनलाइन भुगतान प्रणाली

नारियल विकास बोर्ड ने नारियल पत्रिकाओं की ग्राहकी के लिए ऑनलाइन भुगतान प्रणाली शुरू की है। नए ग्राहक और मौजूदा ग्राहक दोनों ऑनलाइन से भुगतान कर सकते हैं और नई ग्राहकी ले सकते हैं या अपनी ग्राहकी का नवीकरण कर सकते हैं।

अधिक जानकारी के लिए www.coconutboard.gov.in या https://www.coconutboard.in/journalsubscription/home.aspx देखें। बोर्ड के बैंक खाताः स्टेट बैंक ऑफ इंडिया, इय्याट्टिल जंक्शन, एरणाकुलम शाखाः खाता सं. 61124170321, आईएफएससीः SBIN0031449 में डिमांड ड्रैफ्ट/नेफ्ट/भीम/फोन पे/गूगल पे या पे टीएम के द्वारा राशि का भुगतान कर सकते हैं।

देय ग्राहकी (कर मिलाकर)		
	वार्षिक ग्राहकी	आजीवन ग्राहकी*
वैयक्तिक ग्राहक		
इंडियन नालिकेरा जर्नल	40 रुपए	1000 रुपए
इंडियन कोकनट जर्नल	60 रुपए	1600 रुपए
भारतीय नारियल पत्रिका**	40 रुपए	1000 रुपए
संस्थाएं/पुस्तकालय		
इंडियन कोकनट जर्नल	200 रुपए	5000 रुपए
**30 वर्ष, **तिमाही*		

नारियल दूध पनीर का विकास एवं उसकी गुणात्मक विशिष्टताओं का मूल्यांकन

वर्षा क्लारा वर्गीस[1], डा. अनु जोसफ[1], श्रीमती अनीटा जोय[2]

[1]सेंट तेरेसास कॉलेज, एरणाकुलम एवं [2] नाविबो प्रौद्योगिकी संस्था, आलुवा

नारियल से कई उत्पादें बनाए जाते हैं और इनके बहुविध उपयोग भी हैं। नारियल दूध में उच्च मात्रा में प्रोटीन, शर्कराएँ, वसाएँ, विटामिन और खनिज निहित होते हैं। नारियल दूध से बने पनीर के कुछ फायदे ये भी हैं कि लैक्टोज़ असहनशील लोग दूध के बदले इसका उपयोग कर सकते हैं, कुपोषण से पीड़ित लोगों के लिए यह फायदेमंद होता है और यह प्रतिरक्षी तंत्र को समर्थन देता है। डेयरी उत्पाद के लिए अच्छे विकल्प के रूप में नारियल दूध पनीर विकसित करने हेतु एक अध्ययन चलाया गया। इस अध्ययन से यह निष्कर्ष निकला कि सोय दूध एवं नारियल दूध के मिश्रण से खानेयोग्य पनीर बनाया जा सकता है। साधारण पनीर की तुलना में नारियल दूध से बने पनीर में उच्च मात्रा में प्रोटीन, कैलशियम एवं आयरन निहित थे। पनीर बनाने के लिए नारियल दूध के साथ सोय दूध मिलाने से इसकी गुणवत्ता और भी बढ़ गई। विकसित उत्पाद में 1.27 प्रतिशत राख संघटक, 9.43 प्रतिशत प्रोटीन, 12.20 प्रतिशत वसा, 56.2 प्रतिशत नमी एवं 1.15 प्रतिशत शर्करा निहित थे। पनीर की सूक्ष्मजीवाणु गुणवत्ता का विश्लेषण कुल प्लेट काउंट और कुल कॉलीफॉर्म काउंट के आधार पर भी किया गया जो अनुमत सीमा के अंदर पाया गया एवं *एशेरिकिया कोलाई, साल्मोनेला* एवं *स्टेफाइलोकोक्कस* ऑरियस का भी विश्लेषण किया गया। विकसित नारियल दूध पनीर के 25 ग्राम नमूने में ये सारे सूक्ष्मजीवाणु नहीं पाए गए। विकसित उत्पाद की स्वीकार्यता परखने हेतु साधारण पनीर के साथ उसकी गुणवत्ता की तुलना जैवरासायनिक एवं सूक्ष्मजैविक दोनों मानदंडों के आधार पर की गई। विश्लेषण करने पर नारियल दूध पनीर में वसा संघटक एवं नमी संघटक साधारण पनीर की मानक सीमा से कम पाया गया। परंतु नारियल

दूध पनीर में प्रोटीन, राख एवं शर्करा की मात्रा अधिक थी। इसप्रकार अध्ययन का निष्कर्ष यह निकला कि नारियल दूध पनीर, जो कि नारियल से विकसित मूल्य वर्धित खाद्य पदार्थ है, का उपयोग बेहतर उपचारात्मक स्वास्थ्य के लिए किया जा सकता है और लैक्टोस असहनशीलता से पीड़ित लोगों में प्रोटीन की कमी पूरी करने के लिए यह बेहतरीन विकल्प है। इसके फलस्वरूप नारियल उद्योग की संपत्ति भी बढ़ जाती है।

आमुख

दक्षिण एवं दक्षिण पूर्वी एशिया तथा पसफिक द्वीपों के करोड़ों निवासियों के लिए नारियल एक बहुउपयोगी एवं ज़रूरी खाद्य पदार्थ है। इसके लगभग हरेक नुसख़े में नारियल का उपयोग किया जाता है, अतः यह रसोई में सर्वाधिक लोकप्रिय सामग्री है। नारियल आहार होने के साथ साथ तिलहन फसल भी है। नारियल के विभिन्न उत्पादों की आगे विकास, मूल्य वर्धन एवं वाणिज्यकरण की बहुत बड़ी गुंजाइश होती हैं।

नारियल फसल का फायदा है कि यह छोटे बागों के साथ साथ बड़े बागों के लिए भी उपयुक्त है। गरीबी कम करने एवं रोज़गार सृजन में नारियल अहम भूमिका निभाता है।

कई दशक पहले प्रसंस्करण क्षेत्र मुख्यतः खोपरा, नारियल तेल, डेसिकेटड नारियल एवं कयर आदि कतिपय पारंपरिक उत्पादों तक सीमित था। आज प्रसंस्करण क्षेत्र की क्रमानुगत प्रगति के फलस्वरूप नारियल के उत्पादों एवं उपोत्पादों से कई नूतन उत्पादों की लंबी श्रेणी विकसित हुई है। आधुनिक नारियल उद्योग अन्य उत्पादों के साथ साथ खाद्य प्रयोजनों के लिए नारियल से दो अनमोल मौलिक उत्पाद याने परंपरागत नारियल तेल और नारियल प्रोटीन बनाने में भी सक्षम है। पारंपरिक तौर पर अधिकांश नारियल प्रोटीन नारियल दूध के रूप में प्राप्त होता था और संपूर्ण वसायुक्त या निर्वसीकृत (या स्किम्ड) रूप में इस दूध का उपयोग होता था। तथापि कुछ प्रकााशित रिपोर्टों में सूचित किया गया है कि अत्यधिक स्वीकार्य एवं अपेक्षाकृत सस्ते नए प्रकार के डेयरी आहार जैसे कि कस्टर्ड, विभिन्न प्रकार के चीज़ (सोफ्ट, चेद्दार एवं ब्लू चीज़), योगर्ट, पनीर एवं पानीय तैयार करने हेतु नारियल वसा के साथ नारियल प्रोटीन का उपयोग किया जा सकता है। नारियल दूध निहित संतुलित आहारक्रम हृदय को स्वस्थ रखता है और हृदयरोग संबंधी समस्याओं से सुरक्षा प्रदान करता है।

नारियल दूध में निहित मुख्य पौष्टिकतत्व लारिक अम्ल उच्च रक्तचाप से पीड़ित चूहों में ऑक्सीकर तनाव एवं रक्तचाप कम करते पाया गया है। इस वसा अम्ल में ऑक्सीकरणरोधी गुण भी निहित हैं जो वज़न कम करने में सहायक है और इससे यह हृदय को सुरक्षित रखने में अधिक असरदार हो जाता है। यह रोगप्रतिरोधी क्षमता बढ़ाता है। नारियल दूध में मध्यम श्रृंखला ट्राइग्लिसराइड निहित हैं जिसमें अनुसंधानकर्ताओं ने वज़न कम करने के गुण पाए हैं। मध्यम श्रृंखला वसा अम्ल थेर्मोजेनेसिस या ताप उत्पादन प्रक्रिया के ज़रिए ऊर्जा उत्पन्न करता है। इस प्रकार मध्यम श्रृंखला वसा अम्ल वज़न एवं कमर का आकार कम करने में सहायता करता है। यह पेट के अस्थिर सूक्ष्मजीवों को संतुलित रखता है। वैंग वाई आदि (2010) के अनुसंधान निष्कर्ष में सुझाया गया है कि मध्यम श्रृंखला ट्राइग्लिसराइड इंसुलिन संवेदनशीलता बढ़ाते हैं और कई अनुसंधानकर्ताओं का यह मानना है कि यह संवेदनशीलता वज़न कम करने में मददगार है। इंसुलिन एक अनिवार्य हॉर्मोन है जो ग्लूकोस विघटित करता है और रक्त में शर्करा का स्तर नियंत्रित रखता है।

नारियल में लारिक अम्ल नामक लिपिड निहित होता है और कई अनुसंधानकर्ताओं का यह मानना है कि लारिक अम्ल रोगप्रतिरोधी क्षमता बढ़ाने में सहायता करता है। लारिक अम्ल में सूक्ष्मजीवाणुरोधी एवं सूजनरोधी गुण निहित हैं और

यह स्तन एवं गर्भाशय कैंसर कोशिकाओं में एपोप्टोसिस याने कोशिका मृत्यु त्वरित करता है।

वर्तमान अध्ययन आहार पदार्थों की तैयारी में वैविध्य प्रदान करने में सहायक रहा है। पनीर के नुसखों से विविध प्रकार के व्यंजन बनाए जा सकते हैं और अधिकांश शाकाहारियों के लिए यह कैल्शियम का अच्छा स्रोत है। शाकाहारी (वीगन) आहारक्रम में यह प्रोटीन का स्रोत है। पनीर को भूनकर या कड़ी के रूप में तैयार किया जा सकता है। विभिन्न मसालों का उपयोग करके और तरह तरह की विधियों के ज़रिए पनीर के कई स्वादिष्ठ व्यंजन बनाए जा सकते हैं। आखिरकार इसको वे लोग भी खा सकते हैं जिन्हें डेयरी उत्पादों से एलर्जी होती है। लैक्टोज़ असहिष्णुता से पीड़ित लोगों को नारियल दूध पनीर दिया जा सकता है। लैक्टोज़ असहिष्णुता ऐसी स्थिति है जब किसी व्यक्ति के शरीर में अपने आहार में निहित लैक्टोज़ को विघटित करने के लिए पर्याप्त रूप से लैक्टेस का उत्पादन नहीं होता है। इसका कारण यह है कि प्रत्येक व्यक्ति में लैक्टोज़ को पचने की क्षमता अलग अलग होती है। लैक्टोज़ असहिष्णुता के कारण आहार क्रम से जब दूध उत्पादों को छोड़ा जाता है तब कैल्शियम तथा अन्य विटामिनों एवं खनिजों का स्रोत नष्ट हो जाता है। इस स्थिति से बचने के लिए उपभोक्ता नारियल दूध पनीर को बेहतर विकल्प के रूप में अपना सकते हैं जो कैल्शियम तथा अन्य विटामिन एवं खनिज प्रदान कर सकता है। अध्ययन का मुख्य उद्देश्य गाय के दूध के बदले नारियल दूध का उपयोग करके पनीर तैयार करना, संवेदी मूल्यांकन से पनीर की स्वीकार्यता को परखना, नारियल पनीर के रासायनिक संघटकों का अध्ययन, नारियल पनीर में निहित सूक्ष्मजीवाणुओं का निर्धारण और अंततः गाय के दूध एवं नारियल दूध से बने पनीर के जैव रासायनिक एवं सूक्ष्मजैविक मानदंडों की तुलना करना था।

सामग्रियाँ एवं प्रणालियाँ

अध्ययन के लिए नमूने स्थानीय बाज़ार से उचित भाव पर खरीदे गए। उसके बाद इन नमूनों का उपयोग करके अध्ययन के लिए उत्पाद विकसित किया गया।

नारियल दूध पनीर बनाने हेतु एक मानक एवं पारंपरिक विधि का अनुसरण किया गया। नारियल दूध पनीर की सफलतापूर्वक तैयारी के लिए दूध के ठोस पदार्थों को संतुलित बनाने हेतु हरेक परीक्षण के दौरान निष्कर्षित नारियल दूध के कुल ठोस संघटकों का विश्लेषण किया गया। नारियल दूध पनीर बनाने के दौरान नारियल दूध का कुल ठोस संघटक निर्धारित करने हेतु दो क्रमानुगत परीक्षण चलाए गए। पहले परीक्षण में नारियल दूध का कुल ठोस पदार्थ 20.7 प्रतिशत था तथा दूसरे परीक्षण में कुल ठोस पदार्थ 24.7 प्रतिशत था। दोनों परीक्षणों में पनीर का गाढ़ापन लगभग एकसमान था। नारियल दूध पनीर की बनावट एवं गुणवत्ता सुधारने के लिए इसकी तैयारी में नारियल दूध के मानक कुल ठोस पदार्थ मूल्य को बरकरार रखा गया। दूसरे परीक्षण में नारियल दूध पनीर का कुल ठोस पदार्थ साधारण पनीर के कुल ठोस पदार्थ के लगभग समान रहा।

प्रक्रिया

मानकीकृत दूध को समान मात्रा में सोय दूध के साथ 50 : 50 अनुपात में मिलाया गया। इस मानकीकृत दूध को सोय दूध के साथ 85^0 सेल्शियस तक गरम किया गया तथा यांत्रिक रूप से निरंतर फेंटकर एकरूप (होमोजीनाइस) बनाया गया। होमोजनीकृत दूध को फिर 5 से 10 मिनटों के लिए 85^0 सेल्शियस पर गरम होने दें। दूध को उबलने मत दें। उबलने के तापमान के ठीक पहले 20 मिलीलीटर सिरका मिला दें ताकि दही और दही का पानी(व्हे) अलग हो जाए। आगे दो तीन मिनटों के लिए फेंटें और गरम करें और मिश्रण को पूरी तरह जमने दें। तकरीबन पाँच मिनटों के लिए मिश्रण को ठंडा होने दें और व्हे से अलग हुए दही को मस्लिन कपड़े से छान लें। अतिरिक्त पानी को निकाल दें। पनीर को जमने के लिए रातभर पर्याप्त वज़न के तले दबाकर रखें ताकि वांछित गाढ़ापन प्राप्त किया जा सके। अब पनीर को घनाकार में काटकर कुछ सेकंडों के लिए पानी में भिगो दें और फिर निकाल दें। पनीर के टुकड़ों की वायुरोधक पैकिंग करें और रेफ्रिजरेटर में रखें।

जैवरासायनिक विश्लेषण

जैव रासायनिक विश्लेषण स्वास्थ्यवर्धक, सुरक्षित एवं स्वादिष्ठ खाद्य उत्पादों के विकास हेतु एक महत्वपूर्ण कदम है। किसी उत्पाद में एक खास संघटक की मौजूदगी उसके स्वास्थ्य वर्धक गुणों का और वह सुरक्षित होने का सूचक होना ज़रूरी नहीं हैं। वर्तमान अध्ययन खाद्य नमूने में मौजूद विभिन्न

जैवरासायनिक पैरामीटर जैसे राख (मफिल फरनस), प्रोटीन (जेलडाल्स विधि), वसा (सोक्सलेट निष्कर्षण), नमी (गरम हवा अवन) और शर्करा (कैलोरीमीटर में अवशोषण) की मात्रा का मूल्यांकन करने हेतु भी जैवरासायनिक विश्लेषण से किया गया था।

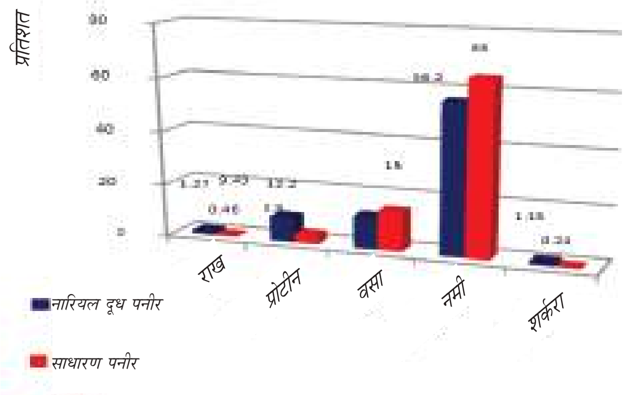

जैव रासायनिक पैरामीटर

सूक्ष्मजैविक विश्लेषण

सूक्ष्मजैविक विश्लेषण से तात्पर्य है किसी एक सामग्री में निहित सूक्ष्मजीवाणुओं का पता लगाने, पहचान या प्रगणना करने के लिए जैविक, जैव रासायनिक, आणविक या रासायनिक विधियों का प्रयोग। इसका प्रयोग अक्सर बीमारी और खराबी के कारक सूक्ष्मजीवों का पता लगाने के लिए किया जाता है। यह संदूषण एवं विषाक्तता पैदा करने वाले वायरस, बैक्टीरिया, सूक्ष्मजीवाणु आदि की वृद्धि नियंत्रणाधीन रखने में और आहार नमूने की निधानी आयु का विश्लेषण करने में मददगार होता है। अध्ययन में कुल प्लेट काउंट, *स्टेफाइलोकोकस ऑरियस*, *ई कोली, साल्मोनेला* एवं कुल कॉलिफॉर्म का सूक्ष्मजैविक विश्लेषण भी किया गया।

निष्कर्ष

1. नारियल दूध पनीर का विकास

परीक्षण 2 के कुल ठोस पदार्थ प्रतिशत (24.7 प्रतिशत) से सर्वाधिक मात्रा में पनीर प्राप्त होता है जो कि लगभग 25 ग्राम है। परीक्षण 1 के कुल ठोस पदार्थ (20.7 प्रतिशत) से सबसे कम मात्रा में पनीर प्राप्त हुआ जोकि 20.5 ग्राम था। प्रत्येक परीक्षण पर पनीर का गाढ़ापन एकसमान था।

परीक्षण 1

परीक्षण 2

2. साधारण पनीर के मुकाबले नारियल दूध पनीर का संवेदी विश्लेषण

एक नुसखे के रूप में तैयार किए गए पनीर पर स्वाद पैनल के सदस्यों द्वारा रूप, स्वाद, महक, बनावट, गंध एवं समग्र स्वीकार्यता के लिए 9-बिंदु हेडोनिक मान प्रणाली के अनुसार संवेदी मूल्यांकन किया गया। मूल्यांकन के निष्कर्ष में पाया गया कि नारियल दूध पनीर के रूप, स्वाद एवं महक के लिए अच्छे अंक प्राप्त हुए और स्वाद पैनल के सदस्यों को इसका स्वाद अत्यधिक पसंद आया। इसकी बनावट एवं गंध के लिए भी अच्छा अंक प्राप्त हुआ। उत्पाद की समग्र स्वीकार्यता बहुत अच्छी रही।

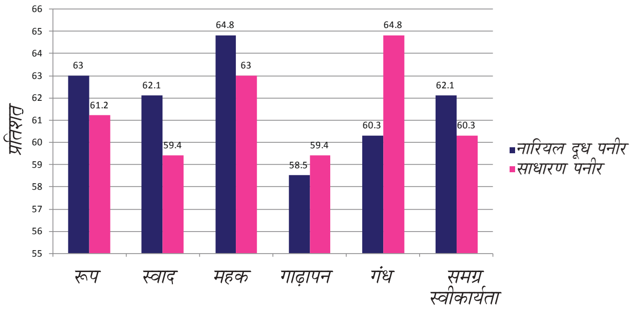

संवेदी पैरामीटर

3. साधारण पनीर के मुकाबले नारियल दूध पनीर का जैव रासायनिक विश्लेषण

नारियल दूध पनीर के नमूने में नमी संघटक एवं वसा संघटक क्रमशः 56.2 प्रतिशत एवं 12.2 प्रतिशत पाया गया। अतः उच्च नमी संघटक के कारण उसकी निधानी आयु बहुत कम है। नारियल दूध पनीर में शक्कर संघटक अत्यंत कम होता है जो कि लगभग 1.15 प्रतिशत है। नमूने में प्रोटीन संघटक 9.43 प्रतिशत और राख संघटक 1.27 प्रतिशत है जबकि एफएसएसएआई मानदंडों के अनुसार साधारण पनीर का नमी संघटक एवं वसा संघटक क्रमशः लगभग 65 प्रतिशत

एवं 15 प्रतिशत है। नारियल दूध पनीर के नमी एवं वसा संघटक इन अनुमत सीमाओं के अंदर था। अतः यह पाया गया कि नारियल दूध से कम वसा युक्त पनीर तैयार किया जा सकता है।

4. साधारण पनीर के मुकाबले नारियल दूध पनीर का सूक्ष्मजैविक विश्लेषण

कुल प्लेट काउंट :	कुल प्लेट काउंट का विश्लेषण पाँच बार तनुकरण के बाद किया गया और काउंट 2.5 x 10-4 से 4.1 x 10-4 सीएफयू प्रति ग्राम की मानक अनुमत सीमा के अंदर था।
नारियल दूध पनीर	2.9 x 10-4 सीएफयू प्रति ग्राम (25 ग्राम नमूना)
साधारण पनीर (गाय का दूध)	2.2 x 10-4 सीएफयू प्रति ग्राम (25 ग्राम नमूना)
कुल कॉलीफॉम काउंट	
नारियल दूध पनीर	4.1 x 10-1 सीएफयू प्रति ग्राम (25 ग्राम नमूना)
साधारण पनीर (गाय का दूध) (मानक अनुमत सीमा)	3.9 x 10-1 से 7.6 x 10-1 सीएफयू प्रति ग्राम (25 ग्राम नमूना)

नारियल दूध पनीर एवं गाय के दूध से बने साधारण पनीर के 25 ग्राम नमूने में सारे अन्य पैरामीटर, *ई. कोली, साल्मोनेला* एवं *स्टेफाइलोकोकस ऑरियस* मौजूद नहीं थे।

विकसित उत्पाद में 1.27 प्रतिशत राख संघटक, 9.43 प्रतिशत प्रोटीन, 12.20 प्रतिशत वसा, 56.20 प्रतिशत नमी एवं 1.15 प्रतिशत शर्करा निहित था। कुल प्लेट काउंट, कुल कॉलिफोर्म काउंट, *एशेरिकिया कोलाई, साल्मोनेला* एवं *स्टेफाइलोकोकस ऑरियस* संबंधी पनीर की सूक्ष्मजीवीय गुणवत्ता का भी विश्लेषण किया गया। कुल प्लेट काउंट एवं कुल कॉलिफोर्म काउंट अनुमत सीमाओं के अंदर था अतः बाजार में इसकी अच्छी स्वीकार्यता होती है और यह सुरक्षित है। सारे अन्य सूक्ष्मजीवाणु नारियल दूध से विकसित पनीर के 25 ग्राम नमूने में मौजूद नहीं है। नारियल दूध पनीर की गुणवत्ता की साधारण पनीर के साथ तुलना जैवरासायनिक एवं सूक्ष्मजैविक पैरामीटरों में भी किया गया ताकि विकसित उत्पाद की स्वीकार्यता का पता लगाया जा सके।

यह पाया गया कि नारियल दूध पनीर में निहित वसा एवं नमी संघटक साधारण पनीर की मानक अनुमत सीमा के अंदर है। परंतु प्रोटीन संघटक, राख एवं शर्करा नारियल दूध पनीर में अधिक है। साधारण पनीर के 100 ग्राम नमूने में प्रोटीन संघटक 3.5 प्रतिशत राख, 0.46 प्रतिशत एवं शर्करा 0.24 प्रतिशत था।

पनीर में नमी संघटक अधिक होने के कारण आमतौर पर यह जल्दी खराब हो जाता है। पहले के तीन-चार दिनों के लिए पनीर ताजा रहता है और धीरे धीरे इसकी गुणवत्ता कम हो जाती है। साधारण पनीर की तुलना में नारियल दूध पनीर प्रोटीन का बेहतर स्रोत होता है, इसलिए यह साधारण पनीर के मुकाबले अधिक स्वीकार्य हो सकता है। संवेदी मूल्यांकन करने पर पैनल सदस्यों ने गाय के दूध से बने साधारण पनीर से अधिक नारियल दूध पनीर को स्वीकार्यता दी। दिखावट और स्वाद में नारियल दूध पनीर साधारण पनीर से थोडा सा भिन्न है, परंतु नारियल दूध पनीर की महक, गाढ़ापन एवं गंध साधारण पनीर के साथ तकरीबन मिलता जुलता था। हालांकि नारियल दूध पनीर का भाव साधारण पनीर से थोड़ा अधिक होता है परंतु नारियल दूध पनीर की गुणवत्ता एवं पौष्टिक संघटक साधारण पनीर से उत्कृष्ट होता है। इसलिए बाज़ार में उत्पाद की स्वीकार्यता काफी अच्छी होती है।

नारियल एक बहु उपयोगी उत्पाद है और इसके कई प्रयोजन होते हैं। नारियल दूध विटामिनों एवं खनिजों का समृद्ध स्रोत होता है। इसमें पर्याप्त मात्रा में विटामिन सी एवं ई निहित होता है। नारियल दूध वास्तव में उच्च मात्रा में प्रोटीन, एमिनो अम्ल, पानी, शर्करा, वसाएं, विटामिन, खनिज पदार्थ आदि के संयोजनों से बना है। नारियल एवं नारियल उत्पादों से कई प्रकार के खाद्य उत्पाद तैयार किए जा सकते हैं। वर्तमान अध्ययन में नारियल दूध से एक नया उत्पाद पनीर विकसित किया गया है और उसकी स्वीकार्यता की जाँच की गई। अतः अध्ययन का निष्कर्ष यह निकाला जा सकता है कि गाय के दूध से बने पनीर की तुलना में नारियल दूध पनीर अधिक पसंदीदा उत्पाद है। नारियल दूध पनीर आदर्श साधारण पनीर की तुलना में प्रोटीन का बेहतरीन स्रोत है।

नारियल दूध से कम वसायुक्त पनीर भी तैयार किया जा सकता है। इसमें 1.27 प्रतिशत राख, 9.43 प्रतिशत प्रोटीन एवं 12.20 प्रतिशत वसा, 56.20 प्रतिशत नमी एवं 1.15 प्रतिशत शर्करा निहित होता है जिसमें सारे पैरामीटर एफएसएसएआई मानदंडों द्वारा दिए गए मानक सीमा के अंतर्गत पाया गया और अतः इसके उत्पादन और विपणन को वाणिज्यीकृत करने की काफी बड़ी गुंजाइश है। ■

आ गयी है नई मशीन, अब बैठकर चढ़ें नारियल पेड़ पर और तुड़ाई करें ......

डा.सिंधु भास्कर, प्रोफसर
केलप्पजी इंस्टिट्यूट ऑफ एग्रि. इंजीनियरिंग, केरल कृषि विश्वविद्यालय, तवनूर, मलप्पुरम

नारियल के लिए मशहूर केरल में परंपरागत तौर पर नारियल की खेती की जाती है। किंतु आजकल इस क्षेत्र की सबसे बड़ी चुनौती नारियल पेड़ पर चढ़ने वालों की कमी है। आंकड़ों के अनुसार केरल में 16 करोड़ नारियल पेड़ों से 530 करोड़ नारियल का उत्पादन किया जाता है। किंतु केरल के कई गाँव ऐसे हैं जहाँ नारियल पेड़ पर चढ़ने वाले विरले ही मिलते हैं। इस कारणवश समय पर नारियल की तुड़ाई करने में किसान असमर्थ हो जाते हैं। इससे काफी अधिक आर्थिक नुकसान हो जाता है।

बाज़ार में नारियल पेड़ पर चढ़ने के लिए बहुत सारे मशीन उपलब्ध हैं। किंतु जो मशीनें प्रचलित हैं इन सभी को हस्तचालित रूप से चलाना पड़ता है। इसके लिए काफी कठिन शारीरिक श्रम लगता है। इस परिस्थिति में शिमोगा के मेबन इंजीनियरिंग वर्क्स ने एक नई मशीन की रूपकल्पना की है। इसकी अहमियत का कारण यह है कि इसे चलाने में इनसान का श्रम नहीं लगता है बल्कि यह मोटर के सहारे चलायी जा सकती है। इसका वज़न 50 किलोग्राम है और इसे चलाने के लिए 2 एचपी इंजन की आवश्यकता है। इसकी बनावट काफी सरल है और यह आसानी से चलता है।

इस यंत्र के मुख्य भाग हैं एक ढांचा, इंजन, नारियल पेड़ पर घूमकर चढ़ने वाले पहिए, एक्सिलरेटर, क्लच, लिवर, बैठने की सीट आदि। इस यंत्र को स्कूटर चलाने के समान आसानी से चलाया जा सकता है। इसमें ईंधन के रूप में पेट्रोल का उपयोग किया जाता है। नारियल पेड़ के साथ इस यंत्र को लगाकर लॉक करके सीट पर बैठने के बाद यंत्र को स्टार्ट करके एक्सिलरेटर दबाने पर यह ऊपर की ओर चढ़ता है। नीचे आने के लिए यंत्र का मोटर चलाने की आवश्यकता नहीं है।

30 फुट की ऊँचाई के नारियल पेड़ पर चढ़ने के लिए औसतन 30 सेकंड का समय लगता है। इसे खोलकर नारियल पेड़ से निकालने के लिए 20 सेकंड का समय लगता है। यदि दो नारियल पेड़ों के बीच का फासला 7 मीटर हो तो एक पेड़ से निकालकर इस यंत्र को दूसरे पेड़ पर लगाने के लिए 52 सेकंड का समय लगता है। एक नारियल पेड़ पर चढ़कर नीचे उतरने के लिए लगभग 1 मिनट 20 सेकंड लगता है। एक लीटर पेट्रोल का उपयोग करके 80-85 नारियल पेड़ों पर चढ़ा जा सकता है।

इस मशीन की कीमत एक लाख सात हज़ार रुपए है। केरल में सरकार इस के लिए सब्सिडी दे रही है।

अधिक जानकारी के लिए इसके विनिर्माता से 8147194388 नंबर पर संपर्क कर सकते हैं।

दू.भा. : 9446113559

तालाबों की गाद - नारियल की उत्पादकता बढ़ाने का प्रभावी माध्यम

आर.श्रीनिवासन, एन.मह्दिलेती, एम.ललिता, बी.कलैसेल्वी और राजेंद्र हेगडे
भा.कृ.अनु.प.-राष्ट्रीय मृदा सर्वेक्षण और भूमि उपयोग नियोजन ब्यूरो, प्रादेशिक केंद्र,
बैंगलूर-560024, कर्नाटक, भारत

कर्नाटक में ग्रामीण अर्थव्यवस्था का मुख्य सहारा कृषि है। कृषि से जुड़ी गतिविधियाँ आजीविका चलाने में सहारा देती हैं और लोगों की कुल आमदनी का अधिकांश हिस्सा इसी से प्राप्त होता है। नारियल भारत की अर्थव्यवस्था में योगदान देने वाली प्रमुख रोपण फसल है जो लाखों लोगों के लिए आजीविका का ज़रिया भी है। यह फसल विश्व के उष्णकटिबंधीय और उपोष्णकटिबंधीय क्षेत्रों में हर जगह पायी जाती है और विश्वभर के 80 राज्यों में इसकी खेती की जाती है। विश्व में 1.22 करोड़ हेक्टर भूमि में नारियल की खेती हो रही है, जो विश्व के सकल खेतीगत क्षेत्र का 0.7 प्रतिशत है। नारियल पेड़ वैश्विक तौर पर, विशेषतया एशिया पैसफिक देशों के अधिकतर लोगों को खाद्य सुरक्षा एवं आजीविका प्रदान करता है। विश्व में नारियल के अधीन क्षेत्र का 15.46 प्रतिशत और उत्पादन में 26.3 प्रतिशत भारत का योगदान है। भारत में नारियल की खेती 19.7 लाख हेक्टर (2014-15) क्षेत्र में की जाती है और उत्पादन 2043.9 करोड़ नारियल है और उत्पादकता प्रति हेक्टर 10,345 नारियल है। देश के सकल घरेलू उत्पाद में इस फसल का योगदान लगभग 15,000 करोड़ रुपए हैं। भारत में लगभग 1.2 करोड़ लोग नारियल की खेती, प्रसंस्करण और व्यापार गतिविधियों के ज़रिए नारियल क्षेत्र पर प्रत्यक्ष रूप से निर्भर हैं। नारियल की खेती मुख्यतः केरल, कर्नाटक, तमिलनाडु और आँध्र प्रदेश आदि चार दक्षिणी राज्यों में की जाती है। इन राज्यों में नारियल के अधीन क्षेत्र (4.40 लाख हेक्टर) और उत्पादन (393.1 करोड़ नारियल) की दृष्टि से कर्नाटक दूसरे स्थापन पर है।

कर्नाटक में नारियल की खेती के अधीन क्षेत्र मुख्यतः तुम्कूर (32.76), हासन (12.84), चित्रदुर्ग (11.48), मंड्या (5.83), चिकमगलूर (5.22), दक्षिण कन्नड (4.81), मैसूर (4.71), रामनगर (4.71), उडुप्पि (4.31) और दावणगेरे (2.96) जिलों से हैं। राज्य के कुल नारियल उत्पादन में लगभग 85 प्रतिशत का योगदान इन दस जिलों से हैं और इनमें से भी 45 प्रतिशत का योगदान तुम्कूर और हासन जिलों का है।

नारियल एक उष्णकटिबंधीय फसल है और गरम जलवायु में अच्छी तरह बढ़ता है। अच्छी तरह जल रिसाव युक्त सभी प्रकार की मिट्टियों में याने जलोढ़, लाल बलुई दुम्मट, तटीय रेतीली मिट्टी में जो कि हल्की सी अम्लीय से उदासीन प्रतिक्रिया दर्शाती है, इसकी खेती की जा सकती है। तथापि

कृषि क्षेत्र में तालाब

मिट्टी की उर्वरता और भौतिक गुणधर्म नारियल उत्पादन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। कर्नाटक में नारियल की बढ़वार और पैदावार के मुख्य कारक जलनिकास, मिट्टी की गहराई, पौष्टिकतत्व और जैविक कार्बन की स्थिति आदि जैसी मृदा की विशेषताएं हैं। मिट्टी में जड़ों का घुसना और इनका विकास मुख्यतः मिट्टी की भौतिक विशेषताओं पर निर्भर होता है जो पानी का अवशोषण और फलों की गुणवत्ता एवं आकार को बेहतर बनाता है।

कर्नाटक के दक्षिणी शुष्क इलाकों की मिट्टी लाल कंकट मिश्रित सतही से अत्यंत गहरी अच्छी जल रिसाव युक्त मिट्टी होती है और यहाँ मिट्टी का कटाव मध्यम से गंभीर होता है। अधिक रेतीली और महीन कंकरीली होने के कारण इनकी जल धारण क्षमता, जैविक कार्बन और पौष्टिकतत्वों की स्थिति खराब होती है। अतः तालाब की गाद जैसे मिट्टी संशोधकों का प्रयोग करके मिट्टी की भौतिक विशेषताओं को सुधारा जा सकता है और इन क्षेत्रों में नारियल की उत्पादकता में भी वृद्धि लायी जा सकती है।

तालाब की गाद

मानसून की अवधि के दौरान सतही अपवाह से और मिट्टी के कटाव के कारण जलधारक क्षेत्र से फसल के अपशिष्टों के साथ बहकर आने वाली महीन मिट्टी को तालाब की गाद कही जाती है जो तालाब के पानी के नीचे अवसाद के रूप में जमा होती है। जमी मिट्टी और फसल के अपशिष्ट समय के चलते अपघटित होते हैं और पौष्टिकतत्वों से समृद्ध मिट्टी सुधारक बन जाते हैं। यह गाद बेहतर भौतिक विशेषताओं वाली जैविक सामग्रियों से समृद्ध होती है। लहरदार मैदानी इलाकों या जलाशयों में पौष्टिकतत्वों का बहाव, विशेष तौर पर जल प्रवाहों के साथ साथ मिट्टी के पौष्टिकतत्वों का निक्षालन और टंकियों, तालाबों, गड्ढ़ों, झीलों और नदियों जैसे प्राकृतिक या मानवनिर्मित ढांचों में जमाव सदैव घटित होता रहता है।

कई सदियों पहले मानसून की अनिश्चितताओं से निपटकर सिंचित खेती में उपयोग करने हेतु बरसाती पानी का संचयन करने के लिए तालाबों का निर्माण किया जाता था। अधिकतर जलधारक क्षेत्र कृषि भूमि ही बनते हैं और ये तालाबों में

तालाब की गाद निकालने की प्रक्रिया

तालाब की गाद

बरसाती पानी के संचयन में अपना योगदान देते हैं। मानसून के दौरान पारी पारी से और अत्यंत तेज़ी से होने वाली बारिश के कारण सतही मिट्टी बह जाती है और आसपास के कृषि क्षेत्रों से पौष्टिकतत्वों से समृद्ध ऊपरी मिट्टी का कटाव हो जाता है। मिट्टी के ये कण पौष्टिकतत्वों सहित तालाब में गाद के रूप में जमा हो जाते हैं।

तालाबें प्राथमिक प्राकृतिक स्रोतों जैसे कि मिट्टी और पानी के संरक्षण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं जो सिंचाई, बाढ़ नियंत्रण, भौमजल पुनर्भरण और अन्य सामूहिक, आर्थिक और पारितंत्रिक क्रियाओं को सुगम बनाते हैं। किंतु तालाब में समय के चलते इसप्रकार गाद के जमाव से इसकी संचयन क्षमता कम हो जाती है।

तालाब की गाद के लाभ

बारानी कृषि भूमियों में तालाब की गाद का प्रयोग दक्षिण भारत के किसानों की बरसों पुरानी परंपरागत विधि है और भूमि की उत्पादन क्षमता टिकाऊ रखने के लिए मिट्टी के कटाव से ग्रस्त भूभागों को भरने हेतु इसका उपयोग किया जाता है। हाल के समय तक कर्नाटक के दक्षिणी जिलों में यह आम बात थी कि किसान अपने खेत में खुले कंपोस्ट

मिट्टी की भौतिक विशेषताओं में सुधार

मिट्टी की रिसाव क्षमता में सुधार

गड्ढे बनाते थे और उनमें गोशाला के अपशिष्टों और फसल अपशिष्टों के साथ तालाब की गाद की भी एक परत बनाकर बारी बारी से भरे जाते थे। एक के बाद एक करके बारिश और हवा बीच बीच में मिलने के कारण जैविक अपशिष्ट और गाद नम हो जाते हैं और ये अपघटित होने लगते हैं। पूरी तरह सड़ जाने के बाद इस मिश्रण का प्रयोग मानसून शुरू होने से पहले कृषि भूमि में किया जाता है ताकि मिट्टी में पौष्टिकतत्वों की पुनःपूर्ति की जा सके, मिट्टी की संरचना और नमी धारण क्षमता सुधारी जा सके। शुष्क भूमि में रासायनिक उर्वरकों का निरंतर प्रयोग करने से और मिट्टी का कटाव होने से मृदा के स्वास्थ्य पर विपरीत असर पड़ता है। इस प्रसंग में तालाब की गाद के अनुप्रयोग के परंपरागत ज्ञान की ओर नवीन तरीके से ध्यान केंद्रित करने और इस विधि को बढ़ावा देने से नारियल उत्पादन में वृद्धि लाने के साथ साथ इसे टिकाऊ भी बनाया जा सकता है। कृषि के लिए पर्याप्त मात्रा में पानी का संचयन और संभरण करने के लिए परंपरागत तालाबों से गाद निकालकर संरक्षण और पुनरुज्जीवन करना अनिवार्य है और कृषि भूमियों में मृदा का सुधार करने के लिए इस तालाब की गाद का प्रभावी उपयोग किया जा सकता है। विगादन प्रक्रिया के दो लाभ होते हैं कि इससे जल संचयन क्षमता बढ़ती है और शुष्क भूमि की मिट्टी की उर्वरता भी बेहतर हो जाती है।

तालाब की गाद की प्रभावोत्पकता इसके पौष्टिकतत्वों की क्षमता के कारण है जो रेतीली और रेतीली दुम्मट मिट्टियों के मिश्रण द्वारा होती है। रासायनिक विशेषताओं से मिट्टी के पीएच और विद्युत चालकता में कमी और जैविक

वर्धित पैदावार

कार्बन, कुल और उपलब्ध नत्रजन, फोस्फरस, उपलब्ध पोटेशियम और सूक्ष्मपौष्टिकतत्वों की वृद्धि सूचित होती है। इससे दक्षिण भारत के कई भूभागों में फसल पैदावार और फल की गुणवत्ता में उच्चतर औसत दर्शित हुआ।

तालाब की गाद के प्रयोग के ज़रिए मृदा की गुणवत्ता में सुधार

- तालाब की गाद मिश्रित करने से मृदा की जल धारण क्षमता बेहतर हो जाती है।
- तालाब की गाद के साथ जैविक खाद मिश्रित करके प्रयोग करने से मृदा का स्थूल घनत्व कम हो जाता है।
- तालाब की गाद और घूरे की खाद का प्रयोग करने से जैविक सामग्रियों के खनिजीकरण के दौरान जैविक अम्ल उत्पादित होने की वजह से मृदा का पीएच कम हो जाता है।

- मृदा में निहित जैविक कार्बन की वृद्धि होती है।
- तालाब की गाद का प्रयोग करने से फसल भूमि की मृदा उपलब्ध नत्रजन, फोस्फरस और सूक्ष्म पौष्टिकतत्वों से समृद्ध होती है।
- मिट्टी में तालाब की गाद का प्रयोग करने से मिट्टी के पौष्टिकतत्व बरकरार रहते हैं और फसल के लिए पौष्टिकतत्वों की उपलब्धता भी बढ़ जाती है।
- यह जल की उपयोग क्षमता और उत्पादकता सुधारने के लिए बेहतरीन जैविक सुधारक है।

नारियल उत्पादन के लिए तालाब की गाद

- छोटे और बड़े ताड़ वाले नारियल बागों में तालाब की गाद का प्रयोग करके मिट्टी का कटाव कम किया जा सकता है और पानी का मिट्टी की रिसाव दर बढ़ जाती है।
- तालाब की गाद में चिकनी मिट्टी अधिक निहित होने से लाल कंकरीली मिट्टियों की जल रिसाव क्षमता सुधर जाती है।
- तालाब की गाद को घूरे की खाद, केंचुआ खाद और अन्य उर्वरकों के साथ मिश्रित करके प्रयोग करने से नारियल को पौष्टिकतत्वों की धीरे से प्राप्ति सुनिश्चित हो जाती है।
- तालाब की गाद मिट्टी के स्थूल घनत्व, संरंध्रता और वायु संचारण को सुधारती है जिससे उथली मिट्टी में नारियल पेड़ की जड़ों का विकास बेहतर हो जाता है।
- मृदा की संरचना में सुधार और जल धारण क्षमता में वृद्धि नारियल फसल को पानी के अभाव को झेलने में सहायक बनते हैं।
- फोस्फरस के अप्राप्य रूप को प्राप्य रूप में परिवर्तित करता है और नारियल की जड़ें इसका आसानी से अवशोषण कर सकती हैं।
- चिकनी-खाद मिट्टी का मिश्रण नारियल पौधों के लिए सूक्ष्म पौष्टिकतत्वों की उपलब्धता बेहतर बनाता है और नारियल का उत्पादन और गुणवत्ता बढ़ाती है।
- मृदा की भौतिक स्थिति बेहतर हो जाने और जैविक क्रियाएं बढ़ जाने से नारियल की सूखा सहनशीलता एवं फलन क्षमता बढ़ती है और बड़े आकार के नारियल प्राप्त होते हैं।

तालाब की गाद की लागत

परिवहन के लिए जो खर्च लगती है वही तालाब की गाद की लागत बनती है, जो खेत से तालाब तक की दूरी और ईंधन के भाव में उतार-चढ़ाव आदि पर निर्भर होती है। कितने लोड़ तालाब की गाद की आवश्यकता है, यह ताड़ों की संख्या या क्षेत्र के आकार पर निर्भर होती है। यदि एक एकड़ ज़मीन में 70 ताड़ हो तो, 70 से 100 ट्रैक्टर लोड तालाब की गाद की आवश्यकता पड़ती है और हरेक बार 10000 से 15000 रुपए तक खर्च होता है। नारियल बाग में तालाब की गाद का प्रयोग करने के बाद बाग को समतल बनाने और बाँध को मज़बूत बनाने का कार्य किया जाता है जिसके लिए प्रति एकड़ 2000 से 3000 रुपए की लागत लग सकती है। इसप्रकार एक एकड़ के लिए 15000 से 18000 रुपए की आवश्यकता होती है। मुख्य बाग में तालाब की गाद का प्रयोग करने के बाद किसान नारियल के साथ अंतर फसल के रूप में मकई, ज्वार, रागी और केले की खेती करते हैं जिससे मिट्टी की गुणवत्ता और किसानों की आजीविका सुधरने की उम्मीद है।

निष्कर्ष

तालाब की गाद कर्नाटक के शुष्क क्षेत्रों में स्थानीय रूप से उपलब्ध और महँगे मिट्टी सुधारकों के बदले में कम लागत पर उपयोग करने योग्य सामग्री है। शुष्क मृदाओं में इसके कई लाभ होने के कारण तालाब की गाद के प्रयोग की अनुशंसा दी जाती है। नारियल की खेती किए जाने वाले क्षेत्रों में तालाब की गाद का प्रयोग करने से मिट्टी की संरचना, जल धारण क्षमता, मिट्टी में निहित जैविक कार्बन और मिट्टी की उर्वरता सुधर जाती हैं। गाद का समुचित उपयोग नारियल की पैदावार और गुणवत्ता सुधारता है और इस क्षेत्र के नारियल किसानों की आय में वृद्धि लाती है। ■

सेवानिवृत्ति

श्री के.के.सुभाष, सहायक पुस्तकालय सह सूचना अधिकारी, मुख्यालय, कोची 31 जुलाई 2021 को अधिवर्षिता प्राप्ति पर नारियल विकास बोर्ड की सेवाओं से सेवानिवृत्त हुए। उन्होंने लगभग 30 वर्ष बोर्ड में सेवा की।

नारियल नुसखे

आम-नारियल फ्रेंच ब्रेड स्पेशल

इंदु नारायण, तिरुवनंतपुरम

सामग्री :

आम के टुकड़े	- 32
नारियल तेल, चुपड़ने के लिए	- 2 बड़ी चम्मच
फ्रेंच ब्रेड के स्लाईस	- 6
नींबू का रस	- 2 चम्मच
सूखी लाल मिर्च के फ्लैक्स	- छिड़कने के लिए
नमक	- छिड़कने के लिए

सजावट के लिए :

ताज़ा कद्दुकस नारियल	- 8 बड़ी चम्मच

पाकविधि : बेकिंग ट्रे नारियल तेल से चुपड़ने के बाद उस पर फ्रेंच ब्रेड के सारे स्लाईस रख कर हरेक स्लाईस पर थोड़ा नारियल तेल चुपड़ लीजिए।

इन्हें पहले से गरम अवन में 200 डिग्री सेल्शियस (400) के तापमान पर 15 मिनट तक या जब तक वे हल्के भूरे रंग का हो जाए तब तक बेक कर लीजिए। बेक किए गए ब्रेड स्लाईस को पूरी तरह से ठंडा होने दीजिए और प्रत्येक टोस्टड ब्रेड स्लाईस के ऊपर 4 आम के टुकड़े रखिए। प्रत्येक टोस्ट पर ऊपर से 1/4 चम्मच नींबू का रस, थोड़े सूखे लाल मिर्च के फ्लेक्स और नमक छिड़किए। प्रत्येक टोस्ट को 1 चम्मच ताज़ा कद्दुकस नारियल से सजाकर तुरंत परोसिए।

बोर्ड की पत्रिकाओं की विज्ञापन दर

नारियल विकास बोर्ड के प्रकाशन हैं इंडियन कोकोनट जर्नल (अंग्रेज़ी मासिक) इंडियन नालिकेरा जर्नल (मलयालम मासिक), भारतीय नारियल पत्रिका (हिंदी त्रैमासिक), भारतीय तेंगु पत्रिका (कन्नड़ त्रैमासिक), इंडिया तेंग्रे इदष़ (तमिल त्रैमासिक), भारतीय कोब्बारी पत्रिका (तेलुगु अर्ध वार्षिक) तथा भारतीय नारल पत्रिका (मराठी अर्धवार्षिक)। इन पत्रिकाओं में वैज्ञानिक नारियल कृषि तथा नारियल उद्योग से संबंधित लेख प्रकाशित करते आ रहे हैं। इन पत्रिकाओं के अधिकांश ग्राहक किसान, अनुसंधानकर्ता, उद्योगपति, व्यापारी, पुस्तकालय आदि हैं।

विज्ञापन के आकार	इंडियन कोकनट जर्नल (अंग्रेज़ी पत्रिका)	इंडियन नालिकेरा जर्नल (मलयालम पत्रिका)	इंडिया तेंग्रे इदष़ (तमिल त्रैमासिक)	भारतीय तेंगु पत्रिका (कन्नड़ त्रैमासिक)	भारतीय नारियल पत्रिका (हिंदी त्रैमासिक)	भारतीय कोब्बारी पत्रिका (तेलुगु अर्धवार्षिक)	भारतीय नारल पत्रिका (मराठी अर्धवार्षिक)
पूरा पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	शून्य	शून्य	5000	5000	शून्य	5000	5000
पूरा पृष्ठ (रंगीन)	20000	20000	10000	10000	5000	10000	10000
आधा पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	शून्य	शून्य	3000	3000	शून्य	3000	3000
चौथाई पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	शून्य	शून्य	1500	1500	शून्य	1500	1500
बाहरी पृष्ठ का भीतरी भाग (रंगीन)	25000	25000	10000	10000	8000	10000	10000
बाहरी पृष्ठ (रंगीन)	30000	30000	15000	15000	10000	15000	15000

पत्रिका के किन्ही दो अंकों में एक ही समय विज्ञापन देने पर 10 प्रतिशत की तथा तीन या अधिक अंकों में एक ही समय विज्ञापन देने पर 12 प्रतिशत की छूट दी जाएगी। मान्य विज्ञापन एजेंसियों को 15 प्रतिशत की छूट दी जाएगी।

पर्याप्त मात्रा में सिंचाई करें, थालों में पलवार लगाएं

अनिता कुमारी पी., जितिन षाजु और अंजु कृष्णन
प्रधान वैज्ञानिक, परियोजना स्टाफ, केंद्रीय रोपण फसल अनुसंधान संस्थान, कायंकुलम

मानवजाति और वनस्पति जगत का स्वास्थ्य संरक्षण हरेक ऋतुओं के अनुसार करना काफी अहम होता है और इसका अनुसरण हमेशा से करता आ रहा है। नारियल एक दीर्घकालीन फसल है और इसके संरक्षण में इन गतिविधियों का अनुसरण अत्यंत महत्वपूर्ण है। किंतु यह संदेह है कि इसके पालन-पोषण में इन गतिविधियों का अनुसरण पूरी तरह हो पा रहा है या नहीं। जहाँ तक कृषि क्षेत्र का सवाल है, गर्मी के मौसम में फसलों की विशेष देखभाल की आवश्यकता होती है और नारियल पेड़ भी इससे भिन्न नहीं है। नारियल की खेती में बारिश और सिंचाई सुविधाएं काफी महत्वपूर्ण होती हैं। अच्छी पैदावार प्राप्त करने और नारियल पेड़ों को स्वस्थ रखने के लिए मिट्टी में नमी बरकरार रखना अत्यंत अनिवार्य होता है। फसल के अनुरक्षण में साल में कुल मिलने वाली बारिश से ज्यादा महत्वपूर्ण है इसकी अवधि और वितरण। मिट्टी में नमी बरकरार रखने से फसलों को अधिक मात्रा में पौष्टिकतत्वों की उपलब्धता सुनिश्चित होती है। हालांकि नारियल की खेती अधिकांशतः बारिश पर निर्भर होती है, किंतु सिंचाई, जल संरक्षण और जल संभरण के तरीके अपनाकर गर्मी के मौसम को झेल सकता है। नारियल पेड़ों के लिए दूसरी फसलों की अपेक्षा पानी की आवश्यकता अधिक होती है।

दिसंबर से मई महीनों के दौरान गर्मी की प्रखरता खेती पर अधिक पड़ती है। गर्मी के मौसम में अपनाए जाने वाले खाद प्रयोग के तरीके और अन्य कृषीय गतिविधियाँ बारिश के मौसम में अपनायी जाने वाली विधियों से भिन्न होती हैं। ऐसी भूमि में जहाँ नमी बरकरार रखी गयी हो नारियल पेड़ से टिकाऊ उपज सुनिश्चित की जा सकती है। नारियल पेड़ के लिए पानी इतना अधिक महत्वपूर्ण होता है कि पेड़ की पर्याप्त मात्रा में सिंचाई करने से ही शिखर पर फल उतनी ही अधिक लगते हैं। नारियल को अपनी कोशिका अवस्था से पककर पूर्ण विकसित फल बनने में 40 से 44 महीने का समय लगता है जबकि नारियल पत्तों के लिए यह 30 महीने होता है। इसलिए गर्मी के समय पेड़ की देखभाल में यदि कोई चूक हो जाती है तो नारियल की बढ़वार और उपज पर विपरीत असर पड़ता है।

अतः पेड़ की समुचित देखभाल न करने पर और सूखे की तीव्रता अधिक होने पर छोटे ताड़ों के सूख जाने की और नारियल के पत्ते पीला होकर बढ़वार कम होने की संभावना रहती है। गर्मी अधिक तीव्र होने पर वयस्क और फलदायी नारियल पेड़ों की बढ़वार कम होना, बुतामों का झड़ना, गुच्छों का टूटना, जड़ों का सूखना आदि जैसी समस्याएं उत्पन्न होती हैं। अध्ययनों से पाया गया है कि गर्मी के महीनों में यदि

समुचित रूप से पेड़ों की देखभाल सुनिश्चित नहीं किए गए तो पौष्टिकतत्वों का अवशोषण कम हो जाता है। इसलिए छोटे ताड़ों और फलदायी ताड़ों की समुचित देखभाल सुनिश्चित करके ताड़ों का स्वास्थ्य संरक्षण करना चाहिए।

गर्मी के दिनों में ताड़ का अनुरक्षण - निदर्शन बागों में

एकीकृत प्रबंधन विधि अपनाकर नारियल पेड़ों के स्वास्थ्य संरक्षण और उपज बढ़ाने के प्रति नारियल किसानों को जागरूक बनाने के लिए केंद्रीय रोपण फसल अनुसंधान संस्थान, कायंकुलम ने केरल में आलप्पुष़ा जिले के पत्तियूर ग्राम पंचायत में जड़मुर्झा रोग प्रकोपित क्षेत्रों में निदर्शन बाग स्थापित किए हैं। इस प्रकार के निदर्शन बागों में जो गतिविधियाँ अपनायी जानी होती हैं, उन पर केंद्रीय रोपण फसल अनुसंधान संस्थान द्वारा की गई मुख्य सिफारिशें नीचे प्रस्तुत हैं:

गर्मी के मौसम में छोटे ताड़ों की देखभाल

गर्मी के मौसम की तीव्रता से बचाने के लिए नारियल पौधों की खास देखभाल करनी चाहिए।

पौधों को छाया प्रदान करें। पौधे के मूलभाग को नम रखने के लिए पलवार लगाना चाहिए। थाले में 30 नारियलों के छिलके बाहरी भाग ऊपर की ओर करके रखकर पलवार लगाया जा सकता है। छोटे नारियल पौधों को नारियल पत्तों से ढककर गर्मी की तीव्रता से बचाने का तरीका पुराने ज़माने से अपनाता आ रहा है।

नारियल पौधों पर कड़ी नज़र रखना चाहिए और कीटों एवं रोगों का प्रकोप होने पर निवारणात्मक उपाय अपनाना चाहिए।

पलवार लगाना

गर्मी के मौसम में फलदायी नारियल पेड़ों के थालों में पलवार लगाना जल संरक्षण सुनिश्चित करने का बेहतरीन उपाय है।

बारिश का मौसम समाप्त होने के तुरंत पहले याने मिट्टी सूख जाने से पहले पलवार लगाना चाहिए। यदि सही समय पर पलवार नहीं लगा पाए तो 300 से 400 लीटर पानी से थालों की सिंचाई करने के बाद पलवार लगाना चाहिए।

अध्ययनों से पता चला है कि कयरगूदे से 10 से 15 सेंटीमीटर मोटाई में पलवार लगाने से पानी की आवश्यकता 45-50 प्रतिशत तक कम की जा सकती है।

नारियल पेड़ के थालों में पलवार

पलवार लगाने के लिए नारियल पत्तों का भी इस्तेमाल किया जा सकता है। डंठल काटकर हटाने के बाद 15 से 20 नारियल पत्तों को टुकड़ा करके तीन परतों में पलवार लगाया जा सकता है। इसके साथ सिंचाई भी करती रहनी चाहिए। अध्ययनों से थालों में छिलके का बाहरी भाग ऊपर की ओर करके एक के ऊपर एक रखकर परत बनाने से 50 प्रतिशत तक पानी का नुकसान कम करने में और यह मिट्टी का तापमान 1.6-1.7 डिग्री सेल्शियस तक कम करने में और जड़ों की संख्याएं बढ़ाने में सहायक पाया गया है।

बाग में नारियल पेड़ों के बीच की जगह में नाले बनाकर (4 फुट चौडी और 2 फुट गहरी, आवश्यकतानुसार लंबी) उनमें नारियल छिलके और अन्य जैविक सामग्रियाँ भरकर उसके ऊपर नारियल पत्ते रखकर मिट्टी से ढकना चाहिए।

सिंचाई

गर्मी के दिनों में नारियल बागों में सिंचाई करना नारियल की उपज बढ़ाने के लिए उत्तम है। दिसंबर से मई तक के महीनों में पर्याप्त मात्रा में सिचाई करना आवश्यक होता है। होज़ से सिंचाई करने का परंपरागत तरीका, ड्रिप सिंचाई/ड्रिप सिंचाई में पानी के साथ साथ उर्वरकों के प्रयोग की फेर्टिगेशन विधि आदि भी प्रचलित हैं। नारियल पौधों के लिए मटके में छेद बनाकर उसमें बत्ती डालकर सिंचाई करने की विधि भी अपनायी जा सकती है।

होज़ से सिंचाई

	होज़ से सिंचाई	ड्रिप सिंचाई
छोटे नारियल पेड़	चार दिनों में एक बार 75-80 लीटर पानी	प्रति दिन 32 - 40 लीटर पानी

नारियल बागों में गर्मी के मौसम में दूसरी संरक्षण विधियाँ

- नारियल बागों में मानसून शुरू होने से पहले निराई-गुड़ाई करें।
- बागों में जलसंचयन गड्ढ़े बनाकर बारिश के मौसम में मिलने वाले अतिरिक्त पानी का संभरण करें।
- एकीकृत खाद प्रबंधन प्रणाली अपनाएं।
- वैज्ञानिक तरीके से जैविक खाद और मिट्टी की जाँच आधारित रसायनिक उर्वरकों का प्रयोग करें।
- मानसून की शुरुआत में थाला खोलकर पलवार करना भी जलसंभरण करने का बेहतरीन उपाय है।

नारियल पेड़ के लिए नारियल पेड़ ही खाद है

एक हेक्टर के नारियल बाग से लगभग 15 टन जैविक सामग्रियाँ प्राप्त होती है। अर्थात् एक नारियल पेड़ से औसतन 60-80 कि.ग्रा. तक जैविक अपशिष्ट प्राप्त होने की संभावना है। इन्हें मिट्टी में मिलाकर मिट्टी के जैविक तत्वों का स्तर बढ़ाया जा सकता है।

बाग में एकीकृत खेती विधियाँ अपनाने से मिट्टी/पानी के संरक्षण में, जैव विविधता बनाए रखने में और तापमान नियंत्रित रखने में मदद मिलती है।

किसान अपने बागों में कई परंपरागत जानकारियों का भी अनुसरण करते आ रहे हैं। कयरगूदा अपने वज़न से 6 गुना अधिक पानी सोख लेने में सक्षम है और इसका उपयोग, मिट्टी के टीले बनाने का तरीका, नारियल पत्तों का अग्रभाग काटकर उसे नारियल पेड़ के तने पर बाँधकर पानी का संभरण जैसी परंपरागत विधियाँ इसके अंतर्गत आते हैं।

गर्मी के महीनों में सफेदमक्खी, एरियोफिड माइट, गैंडा भृंग, लाल ताड़ घुन और शल्क कीट जैसे कीड़ों का प्रकोप गंभीर हो सकता है और इसलिए इनके नियंत्रणोपाय अनिवार्य रूप से अपनाया जाना चाहिए।

तालाबों के ज़रिए पानी का संभरण

गर्मी के दिनों में पानी की विविध प्रकार की आवश्यकताओं (इनसान, जानवर, वनस्पतियाँ, अन्य जीव जंतुओं) को पूरा

थाले में पलवार लगाना-जलसंभरण का बेहतरीन उपाय

करने के लिए हरेक पंचायत को एक एक इकाई के रूप में मानकर पानी का संरक्षण/संभरण करने के उपायों को अपनाना चाहिए। केंद्रीय रोपण फसल अनुसंधान संस्थान केरल में आलप्पुषा जिले के पत्तियूर पंचायत में फार्मर फस्ट प्रोग्राम कार्यान्वित कर रहा है जिसके अंतर्गत पंचायत के 19 वार्डों में 88 तालाबों को (घरों के तालाब और सार्वजनिक तालाब) साफ-सुथरा बनाया गया है। पानी का संभरण करके गत दो वर्षों के दौरान यहाँ लाभकर तरीके से मछलीपालन किया जा रहा है।

पंचायत का सामान्य जल स्तर नीचे गिरने से रोकने में, अधिकाधिक तालाबों का पुनरुज्जीवन करने में और लोगों को जागरूक बनाने के लिए कि पानी सार्वजनिक संपत्ति है, ये गतिविधियाँ सहायक रहीं। गर्मी के समय किसानों की सहभागिता से इसप्रकार के उपचारात्मक उपाय अपनाए जाते हैं। सुस्थिर रूप से खेती प्रक्रियाएं चलाने के लिए जैविक अपशिष्टों को बिना जलाए मिट्टी में मिला देना और मानसून के समय मिलने वाले जल का संभरण करके प्रादेशिक तौर पर ही इसका उपयोग अत्यंत अनिवार्य होता है। गर्मी के मौसम में बुताम झड़ने की समस्या अधिक पायी जाती है। बुतामों का झड़ना नियंत्रित करने, मिट्टी का तापमान कम करने और लाभकर तरीके से उत्पादन बढ़ाने के लिए पलवार लगाना, सिंचाई, जैविक पुनर्चक्रण और प्रादेशिक तौर पर पानी का संभरण आदि सहायक होता है। वर्धित पैदावारयुक्त, पर्यावरण अनुकूल और जैवविविधता सम्मिलित नारियल आधारित खेती प्रणाली अपनाने के लिए सामयिक और जलवायु परिवर्तन आधारित खेती विधियों का अनुसरण करना अत्यंत महत्वपूर्ण होता है। *मोब: 9887160570* ■

नारियल बागों में मसाला फसलों की मिश्रित खेती - उन्नतिशील ग्रामीण महिलाओं की सफलगाथा

वी. वी. शिंदे, एस.एल. घावले, एस.एम वानखेड़े, एच. पी. महेश्वरप्पा एवं पी.एम. हलदणकर
अखिल भारतीय समन्वित ताड़ अनुसंधान परियोजना, क्षेत्रीय नारियल अनुसंधान केंद्र, भाट्ये,
डा.बाला साहेब सावंत कोंकण कृषि विद्यापीठ, दापोली, रत्नागिरी

पृष्ठभूमि

महाराष्ट्र के कोंकण क्षेत्र में कृषि उत्पादन के दो मुख्य तरीके हैं लघु जोत एवं पारिवारिक खेती। पारिवारिक खेती कृषि एवं उससे जुड़ी गतिविधियाँ चलाने का ऐसा तरकीब है जो आमतौर पर किसी परिवार द्वारा संचालित और परिवार के सदस्यों के श्रम पर मुख्यतया निर्भर होता है।

बारह वर्ष पहले रत्नागिरी जिले के रत्नागिरी तहसिल में हतीस गाँव की निवासी श्रीमती प्रियंका नागवेकर (34) ने पारिवारिक खेती शुरू की थी। प्रियंका और उनके पति दोनों स्नातक हैं और उनके पति रत्नागिरी में एक प्राइवेट कंपनी में नौकरी करते थे। वे अपने 22 हेक्टर फार्म में पारंपरिक विधि से चावल, रागी, सब्जियाँ आदि जीवन निर्वाह फसलों की खेती करती थीं। उन्नत कृषि प्रौद्योगिकियाँ विशेषकर नारियल एवं मसाला फसलों के बारे में जानकारी एवं कौशल की कमी की वजह से उनके फार्म से प्राप्त आय बहुत सीमित थी। वे अपनी फसल से पूरी उत्पादकता से पैदावार लेने एवं अधिकतम आय प्राप्त करने की महत्वाकांक्षा रखती थी। एक दिन उन्हें नारियल अनुसंधान केंद्र, भाट्ये, रत्नागिरी द्वारा तैयार किया गया एक लीफलेट प्राप्त हुआ जो फसल की उत्पादकता बढ़ाने में वर्मिकंपोस्ट की भूमिका और फार्म की आय बढ़ाने के लिए 'लाखी बाग' संकल्पना, याने नारियल बाग में मसाला फसलों की मिश्रित खेती के बारे में था। वे नारियल बाग में मसाला फसलों की मिश्रित खेती करना एवं वर्मिकंपोस्ट उत्पादन प्रौद्योगिकी अपनाना चाहती थी। उन्होंने नारियल बाग में मिश्रित फसल के रूप में मसाला फसलों की खेती शुरू की और मिश्रित फसल के तौर पर जायफल एवं सुपारी का रोपण किया ताकि अतिरिक्त आय प्राप्त की जा सके। उन्होंने नारियल एवं मिश्रित फसलों के लिए प्रयोग करने हेतु अपने बाग में ही वर्मीकंपोस्ट का उत्पादन शुरू किया। शुरुआती तौर पर उठाए गए इस कदम ने उनका हौसला बढ़ा दिया और आय वर्धक गतिविधि के रूप में मिश्रित फसल प्रणाली एवं वर्मिकंपोस्ट उत्पादन शुरू करने का उनका इरादा और बुलंद हुआ। नारियल बाग में मिश्रित फसल प्रणाली और वर्मिकंपोस्ट इकाई स्थापित करने के लिए पर्याप्त जानकारी एवं कौशल प्राप्त करने के बाद इसके लिए आवश्यक पूँजी जुटाना उनके सामने मुख्य चुनौती बन गई थी।

प्रशिक्षण एवं प्रेरणात्मक समर्थन

प्रियंका ने क्षेत्रीय नारियल अनुसंधान केंद्र, भाट्ये, रत्नागिरी में नारियल और मसाला फसल खेती प्रौद्योगिकी एवं वर्मिकंपोस्ट उत्पादन पर पाँच दिवसीय व्यावसायिक प्रशिक्षण में भाग लिया। क्षेत्रीय नारियल अनुसंधान केंद्र के वैज्ञानिकों ने उन्हें नारियल एवं मसाला फसलों की खेती एवं वर्मिकंपोस्ट उत्पादन अपनाने के लिए प्रेरित किया। क्षेत्रीय नारियल अनुसंधान केंद्र, भाट्ये, रत्नागिरी ने उन्हें निदर्शन हेतु विभिन्न मसाला फसलें एवं *आयसेनिया फेटिडा* प्रजाति के केंचुए प्रदान किए। उन्होंने नारियल विकास बोर्ड, कोची के सहयोग से क्षेत्रीय नारियल

अनुसंधान केंद्र, भाट्ये, रत्नागिरी में नारियल ताड़ारोहण पर आयोजित छह दिवसीय व्यावसायिक प्रशिक्षण, एफओसीटी कार्यक्रम में भी भाग लिया। उसके बाद वे नारियल अनुसंधान केंद्र, भाट्ये, रत्नागिरी में एवं कोंकण क्षेत्र में एफओसीटी कार्यक्रम का मास्टर प्रशिक्षक बन गईं।

श्रीमती प्रियंका नागवेकर नारियल पेड़ पर चढ़ती हुई

श्रीमती प्रियंका नागवेकर एफओसीटी प्रशिक्षण प्रमाणपत्र प्राप्त करती हुई

परिणाम

इनके वित्तीय लाभ के बारे में जानने के बाद उन्होंने अपने पुराने नारियल बाग में वाणिज्यिक रूप से मसाला फसलों की मिश्रित खेती एवं वर्मिकंपोस्ट इकाई शुरू की। उन्हें लगा कि जैविक नारियल के लिए काफी बड़ी मांग है और मसालों की खेती किसान समुदाय के बीच प्रचलित हो रही है। उन्हें पता चला कि लोग जैविक आहार को पसंद करते हैं विशेषकर डाब और काली मिर्च, जायफल, कोक़म जैसे मसाले और केले आदि। इसलिए उन्होंने अपने इस छोटे पैमाने की गतिविधि को वाणिज्यिक व्यावसायिक उद्यम के रूप में बदलने का निर्णय लिया।

परिवार चलाने के लिए उनके पति की आय काफी नहीं थी, इसलिए उन्होंने अपने पति से मिश्रित खेती एवं नर्सरी गतिविधियों में अपना साथ देने का आग्रह किया। उसके बाद दोनों मिलकर मसाला फसलों की कलमें बाँधने के लिए प्रकंदों का उत्पादन करते हुए धीरे धीरे अपनी गतिविधियों का विस्तार किया। उन्होंने खेतीगत कार्यों के लिए एक चार पहिया गाड़ी खरीद ली। कोविड-19 महामारी के दौरान बाज़ार एवं घरों में कृषि उत्पादों के वितरण के लिए इस गाड़ी का उपयोग किया गया।

नर्सरी प्रबंधन : अगले कृषि आधारित स्टार्ट अप की ओर छलांग

नारियल एवं मसाला फसलों की मिश्रित खेती में अपने पैरों पर खड़ा हो जाने के बाद श्रीमती प्रियंका नागवेकर काली मिर्च की कलमों/पौधों के साथ मसाला फसलों की नर्सरी स्थापित करने के उद्देश्य से आगे बढ़ी। वर्मीकंपोस्ट मसाला फसलें उगाने का माध्यम था जो उनके पास पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध था। मसाला फसलों की नर्सरी शुरू करने का दूसरा कारण था रत्नागिरी और शहरी क्षेत्र में गमले के पौधे के रूप में मसाला पौधे विशेषकर काली मिर्च की झाड़ीनुमा किस्म की बढ़ती माँग। रत्नागिरी में उनका एक बिक्री आउटलेट भी था। उन्होंने क्षेत्रीय नारियल अनुसंधान केंद्र, भाट्ये, रत्नागिरी में नर्सरी प्रबंधन में एक और प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग लिया। उनके अनुसार ग्रामीण महिलाओं के लिए वर्मिकंपोस्ट एवं केंचुओं का उत्पादन उत्तम विकल्प है क्योंकि यह शुरू करने के लिए न्यूनतम निवेश लागत एवं कम समय लगता है।

सब्जी फसलों की खेती

निष्कर्ष

कृषि व्यापार की आर्थिकी सारणी 1 में दी गई है।

प्रभाव- वे एहसानमंद हैं, तनावग्रस्त नहीं

श्रीमती प्रियंका नागवेकर अपनी नवीन कृषि रीतियों से अपने परिवार को आर्थिक स्थिरता दे पाई। हर वर्ष मिश्रित

सारणी 1 : कृषि व्यापार की आर्थिकी					
स्टार्ट अप का नाम	उत्पादन क्षमता	बिक्री दर (रु.)	प्रति वर्ष कुल बिक्री (रु.)	उत्पादन लागत (रु.)	शुद्ध लाभ (रु.)
नारियल एवं मसाले की मिश्रित खेती	फल 6000 दालचीनी 6 कि.ग्रा.	22 रुपए की दर पर 500 रुपए की दर पर	132000 3000	46000 1140	86000 1860
वर्मिकंपोस्ट इकाई	12.0 टन	प्रति कि.ग्रा. 15 रु. की दर पर वर्मिकल्चर 800 रुपए की दर पर	225000 8000	68000 3600	156000 4400
नर्सरी प्रबंधन	कालीमिर्च 5000 झाडीनुमा 1000 कालीमिर्च नारियल 1200	15 60 70	75000 60000 70000	28000 18000 19000	47000 42000 51000
कुल योग			573000	184740	388260

खेती, वर्मीकंपोस्ट इकाई एवं मसाला फसलों की नर्सरी से उनका कुल आय 5.73 लाख रुपए है। वे मात्र खेती से 3.82 लाख रुपए का शुद्ध लाभ प्राप्त कर रही है। हालाँकि वर्तमान में उनकी वार्षिक आय सीमित है किंतु भविष्य में बेहत्तर आय प्राप्त करने के लिए वे विर्जिन नारियल तेल का उत्पादन शुरू करने की योजना बना रही है। वे कृषि व्यवसाय स्टार्ट अप में एक नौसिखिया है।

उन्हें अपने पति से जो प्रेरणा, प्रोत्साहन एवं योगदान प्राप्त हो रहे हैं, काफी उल्लेखनीय हैं। उन्होंने अपने परिवार को स्वावलंबी ही नहीं बनाया है बल्कि अपने परिवार के सदस्यों के लिए रोज़गार भी सुनिश्चित किया है।

सहायक एवं समर्थनकारी तत्त्व

कृषि व्यवसाय में अपने अनुभव बाँटते हुए उन्होंने कहा कि मात्र जीवन निर्वाह फसलों की खेती से गरीब किसानों की समस्याओं का समाधान नहीं हो पाता। इसके लिए पूरक फसलों की खेती एवं कृषि व्यवसाय को बढ़ावा देने की आवश्यकता है। ■

वाणिज्य उत्सव

नारियल विकास बोर्ड, क्षेत्रीय कार्यालय, गुवाहटी ने टी बोर्ड द्वारा विदेश व्यापार महानिदेशालय एवं असम सरकार के सहयोग से 21 से 22 सितंबर 2021 तक श्री श्री महादेव अंतर्राष्ट्रीय सभागार, पंजाबारी, गुवाहटी में आयोजित वाणिज्य उत्सव (आज़ादी का अमृत महोत्सव) में भाग लिया। नारियल विकास बोर्ड ने अपने स्टाल में विभिन्न प्रकार के नारियल सुविधाजनक आहार, नारियल गरी, नारियल खोपड़ी एवं नारियल पानी से बने मूल्य वर्धित उत्पाद, नारियल खोपड़ी/लकडी आधारित हस्तशिल्प एवं नारियल पर विभिन्न पुस्तिकाएं, पुस्तक तथा प्रकाशन एवं नारियल और उसके उत्पादों के पौषणिक व स्वास्थ्य लाभ पर पोस्टर प्रदर्शित किए। दो नारियल उद्यमियों ने बोर्ड के स्टाल में अपने उत्पाद तथा सेवाएं प्रदर्शित कीं। स्पाइसेस बोर्ड, टी बोर्ड, कॉफी बोर्ड, रबड़ बोर्ड, डीसी हस्तशिल्प, भारत सरकार, इंडियन चैम्बर ऑफ कोमेर्स, एसबीआई आदि ने भी प्रदर्शनी में भाग लिया और अपने स्टाल में उत्पादों की प्रदर्शनी लगायी। वाणिज्य उत्सव का विषय "भारत को उभरती हुई आर्थिक शक्ति के रूप में प्रदर्शित करना और असम की निर्यात संभावनाओं की खोज करना" था। मुख्यातिथि श्री चंद्र मोहन पटवारी, माननीय उद्योग, वाणिज्य एवं उद्यम मंत्री, असम सरकार ने कार्यक्रम का उद्घाटन किया और श्री कामाख्या प्रसाद टासा, माननीय सांसद (राज्य सभा) सम्माननीय अतिथि रहे। मंत्री और सांसद ने नाविबो के स्टाल का दौरा किया।

श्री चंद्र मोहन पटवारी, माननीय उद्योग, वाणिज्य एवं उद्यम मंत्री, असम सरकार प्रदर्शनी स्टाल में

नारियल बाग में शीतकालीन सब्जियों की लाभदायक खेती किसान समूह की बेहतर आजीविका के लिए

अरुण कुमार सित और संदीप शिल
भा.कृ.अनु.प- केंद्रीय रोपण फसल अनुसंधान संस्थान, अनुसंधान केंद्र, जलपाईगुड़ी, पश्चिम बंगाल

कल्पवृक्ष नारियल एक महत्वपूर्ण रोपण फसल है और मानवजीवन में अनुष्ठानों से लेकर आजीविका तक इसका गहरा संबंध है। पश्चिम बंगाल में 30.82 हज़ार हेक्टर क्षेत्र से 384.14 दशलक्ष फल प्राप्त होते हैं। नारियल के अनुकूलतम उत्पादन हेतु चौकोर प्रणाली में नारियल पेड़ों के बीच 7.5 मीटर की दूरी अनुशंसित है (प्रति हेक्टर 175 पेड़)। नारियल के जड़तंत्र की विशेषता के कारण ज़मीन के मात्र 23 प्रतिशत का ही प्रभावी उपयोग हो पाता है। अन्य एकबीजपत्रियों की भाँति नारियल पेड़ का भी खास अपस्थानिक जड़तंत्र होता है। अच्छी प्रबंधन स्थिति में एक नारियल पेड़ द्वारा उत्पादित जड़ों का 74 प्रतिशत चारों ओर 2 मीटर की दूरी तक ही फैलता है और 82 प्रतिशत जड़ें ज़मीन में 30 से 120 सेंटीमीटर की गहराई तक सीमित रहती हैं। अतः नारियल का सक्रिय जड़क्षेत्र उपलब्ध ज़मीन के 25 प्रतिशत तक सीमीत रहता है और लगभग 75 प्रतिशत ज़मीन अंतर/मिश्रित फसलों की खेती के लिए उपलब्ध होती है जिससे अधिक आय एवं रोज़गार का सृजन हो सकता है। यह अनुमानित है कि लगभग पच्चीस वर्षीय नारियल पेड़ के पर्णवितान से गुज़र कर दिन में 10.00 बजे से 16.00 बजे तक सूर्य प्रकाश का 56 प्रतिशत ज़मीन पर पड़ता है। अतः उपलब्ध प्राकृतिक संसाधनों जैसे ज़मीन (75 प्रतिशत), सूर्यप्रकाश (56 प्रतिशत) एवं पौष्टिकतत्व के बेहत्तर उपयोग के लिए नारियल बाग में अंतर फसलें उगाने की पर्याप्त गुँजाइश होती है।

नारियल बाग में सब्जियों की खेती

सब्जियाँ हमारे दैनिक आहार में मुख्य भूमिका निभाती हैं जो हमें विभिन्न खनिज, आहारीय रेशे, होर्मोन एवं प्रति ऑक्सिकारक प्रदान करती हैं। भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद - केंद्रीय रोपण फसल अनुसंधान संस्थान, मोहित नगर में नारियल बाग में विभिन्न शीतकालीन सब्जियों का निष्पादन, नारियल की उपज पर अंतर फसलों का प्रभाव, इस प्रणाली में उत्पादकता में वृद्धि एवं इससे प्राप्त शुद्ध आय आदि देखने के लिए नारियल बाग में इन सब्जियों की खेती की गई। नारियल पेड़ों के बीच की जगह में पेड़ के सक्रिय जड़क्षेत्र के 2 मीटर की दूरी को छोड़ते हुए प्रत्येक सब्जी हेतु 0.3 मीटर ऊँचाई, 1.2 मीटर चौड़ाई एवं 4 मीटर लंबाई की उभरी क्यारियाँ तैयार की गईं। जाड़े के महीने में बंदगोभी, फूलगोभी, गाँठ गोभी, पालक, मूली, सेमफली, हरा साग-सोंचाला, टमाटर एवं गाजर के बीज/पौधे बोए/ प्रतिरोपित किए गए। फसलों की बढ़वार की पूरी अवधि के दौरान अनुशंसित कृषि रीतियों का अनुपालन किया गया।

पालक

मूली

सेमफली

नारियल बाग में सब्जियों की उपज

अध्ययन से पता चला कि बंदगोभी की उपज खुली जगह की तुलना में कम

टमाटर

सोंचाला

गांठ गोभी

बंद गोभी

थी। खुली स्थिति की तुलना में टमाटर एवं गाजर की उपज भी कम पाई गई। पालक, गाँठ गोभी एवं सेमफली की उपज खुली जगह की उपज के तकरीबन समान पाया गया। नारियल की छाया तले इन सारी सब्जियों की वानस्पतिक वृद्धि अधिक थी। खुली जगह की तुलना में छाया के कारण टमाटर, सेमफली एवं बंदगोभी में पहला फूल/कली निकलने के समय में विलंब पाया गया। सारी फसलों की फसल अवधि अधिक रही जिसके फलस्वरूप तुड़ाई की अवधि भी बढ़ गई। किसान फसल की तुड़ाई लंबे समय तक कर सके। नारियल बाग में अंतर फसलों की खेती किए गए क्षेत्र में मिट्टी की वाष्पीकरण दर कम पायी गयी। अतः अंतर फसलों की वृद्धि के लिए सिंचाई की आवश्यकता बहुत कम हुई। अंतर फसलों की खेती करके ज़मीन का भरपूर उपयोग करने से खाली जगह में खरपतवार की बढ़वार कम हो जाती है। इससे इस प्राणाली में खेती की लागत कम हो गई।

अंतर फसल प्रणाली में नारियल की उपज

विभिन्न अंतर फसल प्रणालियों के अंतर्गत नारियल की उपज में वृद्धि दर्ज की गई। एकल फसल के रूप में नारियल की उपज की अपेक्षा अंतर फसल प्रणाली में 14.8 प्रतिशत से 25.9 प्रतिशत वृद्धि दर्ज की गई। नारियल + गाजर संयोजन में सबसे अधिक वृद्धि (25.9 प्रतिशत) दर्ज की गई एवं उसके उपरांत नारियल + फूलगोभी (24.2 प्रतिशत), नारियल + मूली (22.4 प्रतिशत) दर्ज की गई। नारियल पेड़ों के बीच की जगह के लिए बेहतर प्रबंधन विधियाँ अपनाए जाने के कारण अंतर फसल प्रणाली के अंतर्गत नारियल की उपज में वृद्धि हुई। अतः किसान नारियल से अधिक आय प्राप्त कर सकते हैं और साथ साथ अंतर फसलों से भी आय प्राप्त होती है।

प्रणाली की कुल उत्पादकता का वृद्धि प्रतिशत

हालांकि अंतर फसल के रूप में सब्जियों की उपज खुली जगह की तुलना में कम रही फिरभी सब्जी फसलों की खेती करके नारियल बाग में पेड़ों के बीच की जगह का उचित उपयोग किया जा सकता है। अंतर फसलों की उपज को जब नारियल की उपज में परिवर्तित किया जाता है तो इस प्रणाली की उत्पादकता कई गुना बढ़ जाती है। इस प्रणाली की उत्पादकता का वृद्धि प्रतिशत 80 प्रतिशत से 276 प्रतिशत तक दर्ज किया गया है। प्रणाली की उत्पादकता का अधिकतम वृद्धि प्रतिशत (276 प्रतिशत) नारियल + टमाटर की खेती में और उसके उपरांत नारियल + मूली (231 प्रतिशत) एवं नारियल + फूलगोभी (211 प्रतिशत) में दर्ज किए गए।

शुद्ध आय में वृद्धि प्रतिशत

सारे संयोजनों की और एकल फसल प्रणाली की शुद्ध आय परिकलित की गई और यह पाया गया कि सारे संयोजनों से प्राप्त शुद्ध आय एकल फसल प्रणाली की तुलना में 100 प्रतिशत से अधिक थी। शुद्ध आय में अधिकतम वृद्धि प्रतिशत नारियल + टमाटर संयोजन में (323 प्रतिशत) दर्ज की गई जिसमें प्रति रुपए निवेश पर आय भी अधिक थी (6.3)। उसके बाद नारियल + मूली (251 प्रतिशत) और नारियल + फूलगोभी (214 प्रतिशत) में वृद्धि दर्ज की गई। तथापि नारियल + पालक संयोजन में प्रति रुपए निवेश पर आय सबसे अधिक दर्ज की गई (7.7)।

इस प्रणाली में विभिन्न अंतर फसलों (शीतकालीन सब्जियाँ) का निष्पादन विभिन्न रहा। कुछ सब्जियों का निष्पादन बढ़िया रहा और कुछ सब्जियों का कम। परंतु प्रकाश, जल एवं पौष्टिकतत्व जैसे संसाधनों की उपयोगिता करके सही समय पर पेड़ों के बीच की जगह पर उचित वितरण के ज़रिए विभिन्न अंतर फसलों की खेती करने से किसान समूह की आय में वृद्धि ज़रूर होती है। इससे प्रणाली की कुल उत्पादकता और शुद्ध आय भी बढ़ जाती है जिससे बाग से प्राप्त आय दुगुनी हो जाती है। यह किसान समूह को उत्पादन एवं भाव के खतरे से आर्थिक स्थिरता प्रदान करती है। ■

ई-मेल : aruncpcrircm@gmail.com

नारियल बागों में मासिक कार्य

अक्तूबर

रोपण

निचले क्षेत्रों में, नारियल पौधों का रोपण किया जा सकता है। पौधों के गड्ढ़ों में बारिश के पानी का जमाव रोक दें। उत्तर पूर्वी मानसून की शुरुआत के साथ तमिलनाडु जैसे क्षेत्रों में नव रोपण शूरू किया जा सकता है।

नारियल पौध का रोपण

खाद प्रयोग

सिंचित परिस्थितियों में, यदि सितंबर के दौरान रासायनिक उर्वरकों का प्रयोग नहीं किया गया हो तो अनुशंसित मात्रा के एक चौथाई भाग का प्रयोग किया जा सकता है। जून के दौरान लगाए गए नारियल पौधों के लिए रासायनिक उर्वरकों का (सामान्य सिफारिश का दसवाँ भाग याने 100 ग्राम यूरिया, 200 ग्राम म्यूरिएट ऑफ पोटेश और 200 ग्राम रॉक फोस्फेट) पहला प्रयोग किया जा सकता है। हमेशा यह अनुशंसा दी जाती है कि सामान्य सिफारिशों का अनुसरण करने के बजाय मिट्टी की जाँच करके इसके परिणाम के अनुसार रासायनिक उर्वरकों का प्रयोग करें।

जहाँ भी बोरोन की कमी पायी जाती है थालों में 100 ग्राम बोरेक्स का प्रयोग करें। मग्नीशियम की कमी के कारण जिन ताड़ों के पत्तों का रंग पीला दिखने लगा है, ऐसे ताड़ों के लिए दूसरे उर्वरकों के साथ साथ 0.5 कि.ग्रा मैगनीशियम सल्फेट का प्रयोग किया जा सकता है।

सिंचाई

पूर्वी और उत्तर-पूर्वी राज्यों में नारियल की खेती किए जाने वाले गैर परंपरागत क्षेत्रों में सुरक्षित सिंचाई के रूप में न्यूनतम तापमान 200 सें. से कम हो जाने पर नारियल ताड़ों की सिंचाई शुरू की जा सकती है। सिंचाई शुरू करने से पहले नारियल पेड़ के थालों में 1.8 मीटर के घेरे में कम से कम 15 सें.मी. की ऊँचाई तक मोटा पलवार लगाना चाहिए। नारियल की खेती किए जाने वाले शेष क्षेत्रों में मिट्टी में नमी की उपलब्धता और मानसून खत्म होने के आधार पर सिंचाई शुरू की जानी चाहिए।

हरी खाद प्रयोग

उत्तर पूर्व मानसून का लाभ प्राप्त होने वाले तमिलनाडु जैसे क्षेत्रों में सनई (*क्रोटलेरिया जनसिया*) या ढैंचा (*सेसबानिया एकुलेटा*) या लोबिया (*विगना अनगुइकुलेटा*) या जंगली नील (*टेफ्रोसिया परपुरिया*) जैसी हरी खाद फसलें उगायी जा सकती हैं। एकल फसल के रूप में नारियल की खेती किए जाने वाले बागों में पेड़ों के बीच की जगह में हरी खाद फसलों की बीजदर निम्नप्रकार से अनुशंसित है। सनई-प्रति हेक्टर 20 कि.ग्रा., ढैंचा-प्रति हेक्टर 30 कि.ग्रा., लोबिया-प्रति हेक्टर 25 कि.ग्रा. और जंगली नील-प्रति हेक्टर 15 कि.ग्रा.।

हरी खाद फसल की खेती

यदि अंतर फसलों की खेती की जा रही है तो 1.8 मीटर घेरे के नारियल थालों में हरी खाद फसलें उगाई जा सकती हैं। लोबिया और ढैंचा के लिए प्रति थाला बीज दर 100 ग्राम है जबकि अन्य हरी खाद फसलों के लिए प्रति थाला 75 ग्राम बीज बो सकते हैं।

खेती प्रक्रियाएं

यदि सितंबर में नहीं किया गया हो तो बागान को खरपतवार मुक्त रखने के लिए अंतर जगह की जुताई/खुदाई की जानी चाहिए। यह ध्यान रखा जाए कि जुताई करते समय नारियल पेड़ों को कोई घाव न लगें।

नर्सरी प्रबंधन

नर्सरी की निराई गुड़ाई करें। पाँच महीने आयु के अनंकुरित फलों और मृत अंकुरों को नर्सरी से निकाल दें। नारियल पत्तों से या सूखे घास से या फिर थालों में हरी खाद फसलों की खेती करके सजीव पौधों से पलवार लगाया जा सकता है। नारियल पौधों के लिए सिंचाई की जानी चाहिए। उत्तर-पूर्वी मानसून का लाभ मिलने वाले क्षेत्रों में बीजफलों की बुआई की जा सकती है।

पलवार लगाना

यदि सितंबर के दौरान पेड़ों के थालों में पलवारा नहीं लगाया गया हो तो अब पलवार लगाएं। पलवार लगाने के लिए नारियल बाग में उपलब्ध गिरे सूखे नायिल पत्तों का उपयोग किया जा सकता है।

नारियल के पत्तों से पलवार

नारियल के छिलकों से पलवार

नारियल में कीट और रोग प्रबंधन

लगातार शुष्क और नम अवधि के साथ पारी पारी से अवक्षेपण के कारण फलों पर कीटों और रोगों का प्रकोप अधिक होता है जिसके लिए व्यवस्थित हस्तक्षेप की ज़रूरत होती है। लगातार बारिश मिलने वाले और छोटी अवधि में शुष्क गरम मौसम होने वाले क्षेत्रों में अपक्व फलों का गिराव और बुतामों का झड़ना गंभीर होते देखा गया है। सामान्य रूप से इस चरण में बहुत कम संख्या में फल लगते हैं। जलवायु संवेदनशीलता के साथ साथ ये समस्याएं और भी गंभीर हो जाती हैं और इन समस्याओं से निपटने के लिए पौष्टिकतत्वों का विभाजित करके प्रयोग व्यवस्थित करना चाहिए और इन फल कीटों और रोगों से निपटने के लिए सामयिक हस्तक्षेप करना इस महीने के दौरान अनिवार्य है। नारियल एरियोफिड माइट, कोरिड बग जो फल को झुर्रिदार बनाता है और फल छेदक कीटों का प्रकोप देश के कुछ नारियल उत्पादक इलाकों में रिपोर्ट किया गया है। फल पर होने वाली इन समस्याओं की प्रबंधन विधियाँ आगे बतायी जाती हैं:

नारियल एरियोफिड माइट, *एसेरिया गुरुरोंनिस*

नारियल एरियोफिड माइट एक आक्रामक कीट है जिसके बारे में सबसे पहले 1998 में रिपोर्ट की गई थी और जाड़े के मौसम पूर्व इसका प्रकोप अधिक होता है। यह मकड़ी परिवार का कीट है जिसके दो युगल पैर होते हैं। इसका आकार इतना छोटा है (200-250 माइक्रोन) कि माइक्रोस्कोप से ही इसको देख सकते हैं। यह 100-150 अंड़े डालता है और इसका जीवनचक्र 7-10 दिन में पूरा हो जाता है। परागण के बाद विकासशील फलों पर माइट का प्रकोप तुरंत होता है और यह पत्राभ के अंदर सीमित रहता है और परिदलपुंज के निचले भाग के मेरिस्टमी ऊतकों को खा लेता है। परिदलपुंज के नीचे लंबाकार में सफेद लकीरें दर्शित होती हैं जो कि इसके प्रकोप का पहला लक्षण है। कुछ ही दिनों में परिदलपुंज के चारों ओर पीला मंडल प्रकट होता है जो मस्से जैसा बन जाता है और अंत में वहाँ पर दरारें, छेद और गोंदार्ति(गम्मोसिस) उत्पन्न होता है। बुतामों और अपक्व फलों का झड़ना और फलों की कुरूपता आदि माइट के प्रकोप के अन्य लक्षण हैं।

फलों पर माइट का प्रकोप

प्रबंधन

- सूखे शूकीछद, पुष्पक्रम के अपशिष्ट, गिरे फल आदि को हटाएं और इन्हें मिट्टी में गाड़ देना या जला देना कीट की आबादी कम करने के लिए अनिवार्य है।
- नीम तेल-लहसुन-साबुन मिश्रण 2 प्रतिशत गाढ़ता पर (10 लीटर पानी में नीम तेल 200 मि.ली., साबुन 50 ग्राम और लहसुन 200 ग्राम का मिश्रण) या 0.004 प्रतिशत की दर पर एज़ाडिरेक्टिन 10000 पीपीएम छिड़कना या 10 मि.ली. की दर पर एज़ाडिरेक्टिन 10000 पीपीएम तुल्य मात्रा में पानी के साथ जड़ों द्वारा साल में तीन बार याने मार्च-अप्रैल, अक्तूबर-नवंबर और दिसंबर-जनवरी के दौरान देना अनुशंसित है। रोगरोधी उपाय के रूप में गर्मियों में तापमान बढ़ने से पहले का प्रयोग भी उचित होता है।

- नीम दवा के साथ साथ प्रति ताड़ प्रति लीटर 20 ग्राम की दर पर 1.6 X 10^8 सीएफयू माइट पर रोगजनक फफूँद (एकरोपैथोजन) *हिरसुटेल्ला थोमसोनी* निहित टैल्क आधारित दवा का प्रयोग।
- बाग में कल्प हरिता (कुलशेखरम लंबे से चयनित) किस्म पर माइट का प्रकोप अत्यंत कम पाया गया है।
- अनुशंसित मात्रा में उर्वरकों का प्रयोग, जैवभार का पुनर्चक्रण, नारियल थालों में हरी खाद फसलें उगाना और इनमें फूल निकलने पर उन्हें उखाड़कर वहीं मिट्टी में मिला देना, गर्मी के समय सिंचाई और समुचित उपायों से मिट्टी और जल संरक्षण करने से ताड़ों का स्वास्थ्य सुधरता है और कीट का प्रकोप कम होता है।

कोरिड बग, *पैराडैसिनस रोस्ट्रेटस*

निम्फ और वयस्क कीट कोमल बुतामों (1-3 महीने आयु के) के मेरिस्टमी क्षेत्र को छेद लेता है और खाए गए स्थानों के चारों ओर विष इंजेक्ट करता है जिससे ऊतकक्षय होता है। काटे गए छेद बढ़कर ऊतकक्षयी घाव बन जाता है और जब झड़कर गिरे बुतामों के परिदलपुंज भाग को हटाया जाता है तो धुरी आकार के धब्बे प्रकट होते हैं। परागण के पहले ही मादा फूलों पर आक्रमण होता है और ये फूल सूख जाते हैं और शिखर पर पुष्पक्रम में ऐसे फूलों को देखा जा सकता है और इसके परिणामस्वरूप बंध्या फलों का उत्पादन होता है। अधिकांश कीट प्रकोपित बुताम और डाब गिर जाते हैं। गुच्छों पर शेष फलों के छिलकों पर झुर्रियाँ और शिकन नज़र आने लगते हैं और फल कुरूप हो जाते हैं।

कोरिड बग

प्रबंधन

- अंड़े तथा अवयस्क कीटों का नाश करने के लिए शिखर की सफाई करें।
- एज़ाडिरेक्टिन 300 पीपीएम (निंबिसिडिन) का 0.0004 प्रतिशत की दर पर (प्रति लीटर 13 मि.ली.) छिड़काव करने से कीट का प्रकोप कम होता है। मई-जून और सितंबर-अक्तूबर के दौरान 1-5 महीने की आयु के नारियल गुच्छों पर दो बार छिड़काव करना संतोषजनक रूप से कीट का नियंत्रण करने के लिए अनिवार्य होता है।

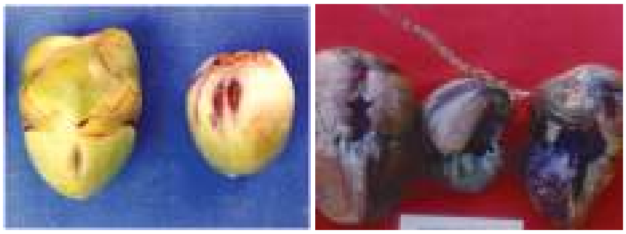

कोरिड बग के प्रकोप से नुकसानग्रस्त फल

- बाग में कोरिड बग के कुदरती शत्रुओं में वीवर चींटी, ओयकोफैला स्मेराग्डिना सबसे प्रभावी परभक्षी पाए गए हैं।
- दो अंडा परजीवियों जैसे *क्राइसोकैल्सिसा ओविसेप्स* और *ग्रयोन होमियोसेरी* को संभाव्य अंडा परजीवी के रूप में पहचाने गए हैं। बाग से एकत्रित कुल अंडों का 40 प्रतिशत तक परजीवियों का आहार बनते पाया गया है।
- गंभीर प्रकोप के मामले में परागण किए गए गुच्छों पर प्रति लीटर 0.3 मि.ली. की दर पर क्लोरएंट्रानिलिप्रोल या प्रति लीटर 1.0 मि.ली. की दर पर लैम्बडा साइहलोथ्रिन का छिड़काव प्रभावी पाया गया है।

फल छेदक कीट, *साइक्लोडस ओम्मा*

पोल्लाची (तमिलनाडु) के कुछ बागानों में फल छेदक का प्रकोप पाया गया है। यह एक छिटपुट कीट है जो आमतौर पर बौने जीनप्ररूपों और संकरों में पाया जाता है। नत्रजनयुक्त उर्वरकों के अतिरिक्त पोषण से जो रसीलापन आता है वह भी कीट के प्रकोप का प्रमुख कारण है। परागण के बाद बुतामों को तथा अपक्व फलों को छेदकर इल्ली अंदर घुस जाती है और रात के समय इसके भीतरी भागों को खा जाती है जिसके फलस्वरूप बुताम झड़ जाते हैं। जिन ताड़ों पर कृत्रिम परागण होता है, वे इस कीट के प्रकोप का शिकार जल्दी हो जाते हैं। ताड़ के शिखर के अपशिष्टों पर प्यूपा अवस्था में कीट पाए जाते हैं।

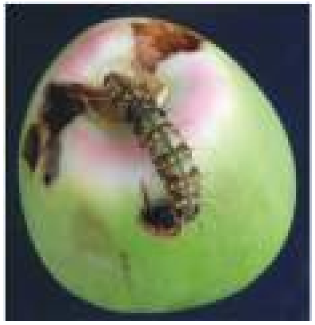

फल छेदक कीट

कीट प्रकोपित बुताम

प्रबंधन

- शिखर की सफाई करके अपक्व अवस्था के कीटों को हटाना चाहिए।
- रसीलापन से बचने के लिए नत्रजनयुक्त उर्वरकों का प्रयोग विवेकपूर्ण रूप से तथा आवश्यकता के आधार पर करना चाहिए।
- हस्त चालित स्प्रेयर का प्रयोग करके कीट-रोगाणु *बैसिलस थुरिंजियेंसिस* प्रति लीटर 20 ग्राम की दर पर और नीम तेल 0.5 प्रतिशत (10 ग्राम साबुन पाउडर के साथ 5 मि.ली. प्रति लीटर) का छिड़काव करने से कीट का प्रकोप कम होता है।

कली सड़न या अपक्व फल का गिराव

(फाइटोफ्थोरा पामिवोरा)

कतिपय नम क्षेत्रों में कली सड़न रोग का शिकार होकर सैकड़ों पेड़ मर जाते हैं। भारत में कली सड़न रोग का प्रकोप एक प्रतिशत से कम रिपोर्ट किया गया है। रोगाणु कलिका क्षेत्र पर वार करता है जिससे कलिका क्षेत्र सड़ने लगता है और ताड़ मर जाते हैं। पीले रंग का होकर कोंपल का मुर्झाना इस रोग का पहला प्रकट लक्षण है। कोंपल भूरे रंग का हो जाता है और नीचे की ओर झुक जाता है। प्रकोपित कोंपल को आसानी से खींचकर निकाला जा सकता है क्यों कि इसका मूल भाग पूरी तरह सड़कर बदबू उत्पन्न करने लगता है। 20^0-24^0 सेल्शियस तापमान और 98-100 प्रतिशत के बीच आपेक्षिक आर्द्रता कली सड़न रोग के लिए अनुकूल वातावरण पैदा करता है। बारिश के मौसम में इसप्रकार के अनुकूल दिन लगातार बना रहना यह निर्धारित करता है कि रोग का विकास और प्रकोप की तीव्रता कहाँ तक हो सकता है। फाइटोफ्थोरा रोग अत्यंत घातक होने के कारण मानसून के दौरान ताड़ के स्वास्थ्य का खासतौर पर कोंपल वाले क्षेत्र का निकट संवीक्षण करना अत्यंत अनिवार्य है।

कली सड़न से प्रकोपित ताड़

प्रबंधन

- नियमित रूप से शिखर की सफाई और मानसून की शुरुआत में रोगरोधी उपाय के रूप में शिखर पर एक प्रतिशत बोर्डो मिश्रण का छिड़काव करना और 35 से 40 दिनों बाद एक बार फिर छिड़काव करना कली सड़न रोग का प्रकोप कम करने के लिए सहायक होता है।
- बाग की सफाई और बारिश के मौसम में समुचित जलनिकासी सुविधा प्रदान करना।
- मानसून शुरू होने के एकदम पहले सबसे भीतरी पर्ण कक्षों में ट्राइकोडेर्मा (*ट्राइकोडेर्मा हार्जियानम* सीपीटीडी 28) संपुष्ट कयर गूदा खली रखनी चाहिए और दो महीने बाद एक बार फिर यह दोहराना चाहिए।
- एक तेज़ चाकू से कोंपल के पूरे सड़े हुए भाग को काटकर हटाएं और घाव पर 10 प्रतिशत बोर्डो पेस्ट का लेप करें और बारिश का पानी अंदर आने से बचाने के लिए घाव को एक पोलिथीन शीट से ढक दें। सामान्य अंकुर निकलने तक सुरक्षा आवरण को वैसे ही रहने दें।

फलों का गिराव

फलों के गिरने के कई कारण हो सकते हैं जैसे कि आनुवंशिक/कायिक, पौष्टिक असंतुलन/कमी, परागण ठीक तरह से न होना, कीटों या माइट का प्रकोप, जल जमाव/सूखा या फफूँद का प्रकोप आदि। फल गिराव के कारक प्रमुख फफूँद प्रजातियाँ *फाइटोफ्थोरा पामिवोरा* और *लैसियोडिप्लोडिया थियोब्रोमे* हैं। *फाइटोफ्थोरा पामिवोरा* के प्रकोप से फलों पर जलसिक्त घाव प्रकट होता है। ये घाव भूरे रंग के हो जाते हैं और फल गुच्छों से अलग हो जाते हैं। फाइटोफ्थोरा का प्रकोप बारिश के मौसम में और उच्च आर्द्रता वाले क्षेत्रों में आमतौर पर पाया जाता है।

फलों पर *लैसियोडिप्लोडिया थियोब्रोमे* का प्रकोप होने पर उस पर गहरे धूसर रंग से भूरे रंग के घाव प्रकट हो जाते हैं

लैसियोडिप्लोडिया प्रकोप का लक्षण

फाइटोफ्थोरा प्रकोप का लक्षण

जिसकी सीमाएं लहरिया और विषम होती हैं। जैसे जैसे प्रकोप बढ़ता है फल की मध्यफलभित्ति और भ्रूणपोष सड़कर बदरंग हो जाते हैं। गंभीर प्रकोप होने पर फल शुष्कित, झुर्रिदार और कुरूपित हो जाता है और पकने से पहले ही गिर जाता है। माइट प्रकोपित फलों पर लैसियोडिप्लोडिया का प्रकोप काफी गंभीर हो जाता है और सालभर रहता है। शुष्क इलाकों में भी इसका प्रकोप देखा गया है।

प्रबंधन

- प्रकोपित फलों को निकालकर नष्ट कर देना।
- मानसून शुरू होने से एकदम पहले शिखर की सफाई करें और गुच्छों पर एक प्रतिशत बोर्डो मिश्रण का छिड़काव करें।

नवंबर

पौधों की सिंचाई

पौधों को ड्रिप या थाला सिंचाई विधि से पानी देना चाहिए। यदि ड्रिप सिंचाई अपनाई जा रही है तो प्रति दिन प्रति पौध औसतन 10 लीटर पानी देना चाहिए। थाला सिंचाई जैसी दूसरी विधियों के ज़रिए चार दिनों में एक बार 40 लीटर पानी देना पर्याप्त होता है।

वयस्क ताड़ों के लिए सिंचाई

उत्तर पूर्व मानसून बारिश मिलने वाले इलाकों को छोड़कर शेष इलाकों के नारियल बागों में सिंचाई शुरू की जा सकती है। उन क्षेत्रों के नारियल बागों में भी सिंचाई की व्यवस्था की जानी चाहिए जहाँ उत्तर पूर्व मानसून से पर्याप्त मात्रा में बारिश प्राप्त नहीं होती है (यदि दस दिनों से अधिक बारिश नहीं मिल रही हो तो)।

यदि थाला सिंचाई विधि अपनायी गयी हो तो प्रति ताड़ 200 लीटर की दर पर चार दिनों में एक बार सिंचाई की व्यवस्था करें।

नारियल के लिए सिंचाई की सबसे उपयुक्त विधि ड्रिप सिंचाई है। पेड़ के तने से एक मीटर के घेरे में समान दूरी में 1 x 1 x 1 आकार के चार छोटे गड्ढ़े खोदने चाहिए। गड्ढ़ों को कयर गूदे से भरना चाहिए। पोलिथीन पाइप की नली के ज़रिए इन गड्ढ़ों की उप सतह पर ड्रिपर/माइक्रोट्यूब स्थापित किया जाना चाहिए। रेतीली मिट्टी में ड्रिपिंग पाइंटों की संख्या छह और अन्य प्रकार की मिट्टियों में यह चार होनी चाहिए। ड्रिप सिंचाई प्रणाली से प्रति दिन प्रति ताड़ 30-45 लीटर पानी की व्यवस्था की जानी चाहिए।

नारियल पौधों की सिंचाई

जल निकासी की व्यवस्था

जिन इलाकों में उत्तर पूर्व मानसून प्राप्त होता है उन इलाकों में पर्याप्त जल निकासी की सुविधा सुनिश्चित की जानी चाहिए। मिट्टी के प्रकार और भौम-जल स्तर के अनुसार समुचित आकार के, कम से कम 50 सें.मी. गहरी और चौड़ी जल निकासी नाली या तो हाथ से या यांत्रिक विधि से बनायी जा सकती है। ताड़ों के हरेक दो कतारों के लिए जल निकासी नाली का निर्माण करना होगा।

खाद प्रयोग

नारियल पेड़ों के लिए ड्रिप फेर्टिगेशन शुरू किया जाए। यूरिया और म्यूरिएट ऑफ पोटेश जैसे जल में घुलनशील उर्वरक ड्रिप सिंचाई विधि के साथ दी जा सकती है। नारियल पेड़ों के लिए सामान्य सिफारिश के अनुसार ये उर्वरक (अनुशंसित मात्रा का 50 प्रतिशत याने प्रति वर्ष प्रति ताड़ के लिए 545 ग्राम यूरिया और 1000 ग्राम म्यूरिएट ऑफ पोटेश) मासिक फेर्टिगेशन कार्यक्रम के ज़रिए दो तुल्य भागों

में दी जा सकती है। किंतु, रासायनिक उर्वरकों की मात्रा मिट्टी की जाँच के परिणामों और लक्षित उपज के आधार पर तय की जानी चाहिए।

जहाँ भी बोरोन की कमी पायी जाती है वहाँ थालों में 100 ग्राम बोरेक्स का प्रयोग किया जाए।

मैग्नीशियम की कमी के कारण जिन नारियल पेड़ों के पत्ते पीले पड़ गए हो उनके थालों में 0.5 कि.ग्रा. मैग्नीशियम सल्फेट का प्रयोग किया जा सकता है।

हरी खाद का प्रयोग

उत्तर पूर्व मानसून का लाभ प्राप्त होने वाले क्षेत्रों में हरी खाद के 50 प्रतिशत पौधों में फूल खिलने लगे तो इनकी जुताई करके नारियल पेड़ों के बीच की जगह पर मिट्टी में मिलाया जा सकता है। इसी प्रकार, नारियल थालों में उगाए जाने वाले हरी खाद पौधों को भी उखाड़के मिट्टी में मिला देना चाहिए।

मातृ ताड़ों का चयन

गुणवत्तापूर्ण रोपण सामग्रियाँ उत्पादित करने के लिए बीजफल एकत्रित करने हेतु मातृ ताड़ों का चयन करें।

लंबी किस्मों में, बीजफलों का एकत्रण उन ताड़ों से किया जाना चाहिए जिनकी आयु 20 वर्ष से अधिक हो, पैदावार बारानी और सिंचित परिस्थितियों में प्रति वर्ष प्रति ताड़ क्रमशः 80 और 120 नारियल से अधिक और फलों का वज़न 600 ग्राम तथा खोपरे का वज़न 150 ग्राम या इससे अधिक हो। यही नहीं ताड़ पर कम से कम 30 पत्ते होने चाहिए और ये रोगमुक्त हों। पेड़ पर चौडे पर्णाधार के साथ छोटा और मज़बूत पर्णवृंत होने चाहिए जो तने से मज़बूती से जुड़ा हुआ हो। गुच्छे का डंठल छोटा, मोटा एवं मज़बूत हो और नीचे की ओर लटकने या झुकने की प्रवृत्ति नहीं दर्शानी चाहिए। ऐसे ताड़ों को न चुनें जिस पर बंध्या फल लगता हो या अधिक संख्या में अपक्व फल का गिराव हो। अधिक आयु के याने 60 वर्ष से अधिक आयु वाले ताड़ों को और खाद के गड्ढ़े जैसे अनुकूल परिस्थितियों में बढ़ने वाले ताड़ों को भी नहीं चुनना चाहिए। जिन ताड़ों पर एकांतर वर्षों में फल लगता हो, ऐसे ताड़ों को भी नहीं चुनना चाहिए। बौनी किस्मों में 12 साल या इससे अधिक आयु के तथा बारानी और सिंचित परिस्थिति में प्रति वर्ष प्रति ताड़ क्रमशः 60 और 100 से अधिक फल देने वाले ताड़ों से बीजफल एकत्र किया जा सकता है। यही नहीं पेड़ पर कम से कम 30 पत्ते होने चाहिए और फल का वज़न 400 ग्राम से अधिक होना चाहिए।

नर्सरी प्रबंधन

- नर्सरी से खरपतवार निकाल देना चाहिए।
- पाँच महीने की आयु के अनंकुरित फलों और मृत अंकुरों को नर्सरी से हटाना चाहिए।
- नारियल के पत्तों या सूखे घास से या हरी खाद फसल उगाकर जीवित पौधों से नर्सरी में पलवार लगाया जा सकता है।
- सिंचाई की व्यवस्था करें।
- कीटों और रोगों के खिलाफ आवश्यकता के अनुसार पौधा संरक्षण उपाय अपनाना चाहिए। यदि दीमक का प्रकोप पाया जाए तो नर्सरी में प्रति लीटर 2 मि.ली. की दर पर क्लोरपाइरिफोस से मिट्टी को शराबोर करना चाहिए। नारियल नर्सरी को सफेद मक्खी के प्रकोप से बचाने के लिए नारियल पत्तों पर पानी का छिड़काव किया जा सकता है।

मातृ ताड़

नारियल नर्सरी

पलवार लगाना

यदि पहले नहीं किया गया हो तो नारियल थालों में पलवार लगाया जा सकता है। पलवार लगाने के लिए नारियल बागों में उपलब्ध सूखकर गिरे नारियल पत्तों का उपयोग किया जा सकता है। बिहार, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़ और पूर्वोत्तर राज्यों जैसे अपरंपरागत इलाकों में मिट्टी का तापमान नियमित रखने के लिए थालों में मोटी परत में पलवार लगाएं। ऐसे क्षेत्रों में निम्न तापमान के प्रभाव को बेअसर करने के लिए सिंचाई शुरू की जा सकती है।

पौधा संरक्षण

वर्तमान में, अभूतपूर्व मौसमीय अनिश्चितताओं के कारण नारियल पर कीटों के नुकसान स्तर पर भारी परिवर्तन देखा गया है। प्रायद्वीपीय और पूर्वोत्तर भारत में आक्रामक कीट रूगोस स्पाइरलिंग सफेदमक्खी *(एल्यूरोडिकस रुगियोपेर्कुलेटस मार्टिन)*, कर्नाटक में कृष्ण शीर्ष इल्ली *(ओपिसिना एरेनोसेल्ला वाकर)* और आँध्र प्रदेश और कर्नाटक में स्लग इल्ली (*डार्ना नरेरिया मूर*) का प्रकोप इस तथ्य के समर्थन के उत्तम दृष्टांत हैं। गैंडा भृंग *(ओरिक्टस रिनोसेरस लिन.)* और लाल ताड़ घुन *(रिंकोफोरस फेरुजिनियस ओलिवर)* सर्वव्यापी कीट है जो भारत के प्रायद्वीपीय क्षेत्रों में मानसून और मानसून के पश्चात् प्रमुख रूप से पाया जाता है। उत्तर-पूर्व मानसून के दौरान घातक शोषक कीट कोरिड बग *(पैराडैसिनस रोस्ट्रेटस डिस्टंट)* का प्रकोप पाया जाता है जिससे हम अनजान रहते हैं। कम से कम 2-3 गुच्छों पर इसका प्रकोप होता है जिससे सारा बुताम गिर जाते हैं और फलहीन गुच्छे रह जाते हैं। कली सड़न रोग, फलों का गिराव, पत्ता सड़न, तना स्रवण और मूल तना विगलन/गैनोडेर्मा मुर्झा जैसे रोगों से भी नारियल को नुकसान होता है। बदलती जलवायु परिस्थितियों में नारियल पर कीटों और रोगों के प्रकोप पर नियंत्रण पाने के लिए व्यवस्थित रूप से अनुवीक्षण करना अत्यंत अनिवार्य है। रोगों और कीटों के प्रकोप की पहचान करने के लिए नारियल बागों में नियमित निरीक्षण और अनुवीक्षण करना चाहिए और फसल को नुकसान होने से बचाने के लिए आवश्यकता आधारित और समुचित पौधा संरक्षण उपाय अपनाना चाहिए। नवंबर महीने के लिए कीटों और रोगों के प्रबंधन हेतु अनुशंसाएं नीचे दी गई हैं:

एकीकृत कीट प्रबंधन

गैंडा भृंग

- बीटल हुक का प्रयोग करके गैंडा भृंगों को निकालकर यांत्रिक विधि से इन पर नियंत्रण पा सकता है। भृंगों को निकालते समय ताड़ की वृद्धि बिंदु को कोई नुकसान नहीं पहुँचना चाहिए।
- रोगरोधी उपाय के रूप में प्रति ताड़ सबसे ऊपर के तीन पर्णकक्षों को 250 ग्राम की दर पर चूर्णित नीम खली/ चालमुगरा (*हाइड्रोकार्पस* प्रजाति/पोंगमिया) समान मात्रा में महीन रेत मिलाकर भरें।
- सबसे भीतर के तीन पर्णकक्षों में 4 ग्राम की नैफ्थलीन गोलियाँ (प्रति ताड़ 12 ग्राम) हरेक पर्णकक्ष में रखकर इसे मिट्टी से ढकना चाहिए।

गैंडा भृंग

- क्लोरएन्ट्रानिलिप्रोल ए.आई.0.4 प्रतिशत (5 ग्राम) या फिप्रोनिल (3 ग्राम) या भा.कृ.अनु.प.-केन्द्रीय रोपण फसल अनुसंधान संस्थान द्वारा विकसित वनस्पति खली (2 ग्राम) निहित छिद्रित सैशे रखें।
- गोबर/कंपोस्ट गड्ढ़ों में भांट *(क्लीरोडेंड्रोन इनफोर्चुनेटम लिन.)* नामक खरपतवार मिला दें।
- प्रजनन स्थानों को हरी मस्कार्डिन कवक *(मेटाराइज़ियम एनिसोप्लि)* से उपचारित करें।

लाल ताड़ घुन

- ताड़ों को घाव लगने से बचें, क्योंकि इससे भृंग अंडा डालने के लिए आकर्षित हो जाएगा। यदि कोई यांत्रिक क्षति लगी हो तो इसे कोल तार से उपचारित करें।
- पत्तों को काटते समय पर्णवृंत को तने से 120 सें.मी. की लंबाई में छोड़कर काटना चाहिए ताकि तने पर घुन का प्रवेश रोका जा सके।

लाल ताड़ घुन

- कीटप्रकोप की गंभीर स्थिति में ताड़ों को काटकर जलाने से तने पर बसे विविध अवस्था वाले कीटों का नाश किया जा सकता है।
- गैंडा भृंग की रोकथाम हेतु पर्णकक्ष भरने के उपाय का जो सुझाव दिया जाता है इसे अपनाना अनिवार्य है क्योंकि यह कीट तने पर लाल ताड़ घुन के प्रवेश के लिए रास्ता बना देता है।
- यदि नुकसान शिखर पर लगा हो तो नुकसानग्रस्त ऊतकों को निकाल देना चाहिए और कीटनाशी घोल, इमिडाक्लोप्रिड (0.02 प्रतिशत) प्रति लीटर पानी में 1 मि.ली. की दर पर डाल दें। यदि घुन तने से प्रवेश करता है तो तने पर लगा छेद सीमेंट/कोल तार से बंद करें और बरमा की सहायता से सबसे ऊपर का छेद तिरछा बनाकर कीप से इस छेद में कीटनाशी घोल डाल दें।

पत्ता भक्षी इल्ली

- बुरी तरह से कीटग्रस्त और सूखे 2-3 बाहरी पत्तों को काटकर जला दें ताकि कीट का फैलाव रोका जा सके।
- संतुलित मात्रा में रासायनिक उर्वरकों और जैविक खादों के प्रयोग के ज़रिए मिट्टी और प्रकापित ताड़ का स्वास्थ्य सुधार सकता है।
- बाग में इस कीट का कुदरती शत्रु जीव काफी अधिक संख्या में रहते हैं, इसलिए *ओपिसीना एरेनोसेला* के प्रबंधन के लिए सामान्यतया रासायनिकों की सिफारिश नहीं की जाती है। इस कीट के लार्वा और प्यूपा की दशा कई परभक्षियों का आहार है, इसलिए कीट का जैविक नियंत्रण प्रभावी और व्यवहार्य प्रणाली होता है। विविध अवस्था वाले परजीवीयों का, जैसे लार्वा परजीवी *गोनियोज़स निफैंटिडिस* (बेथिलिडे) प्रति ताड़ 20 परजीवी की दर पर, *ब्राकोन ब्रेविकोर्निस* (ब्रैकोनिडे) प्रति ताड़ 20 परजीवी की दर पर, पूर्वप्यूपा परजीवी *एलैसमस निफैंटिडिस* (एलास्मिडे) 49/100 पूर्वप्यूपा की दर पर और प्यूपा परजीवी *ब्रेकिमेरिया नोसटोय* (कैल्सिडिडे) 32/100 प्यूपे की दर पर, समुचित समय पर बाग में छुड़ाने से प्रभावी रूप से इस कीट का टिकाऊ प्रबंधन मुम्किन पाया गया है। बाग में विविध अवस्था वाले कीटों पर नियंत्रण पाने के लिए परजीवियों को एक साथ छोड़ना भी अपेक्षित है। परजीवियों को छुड़ाने से पहले लार्वा मल पर उनका अनुकूलन बाग स्तर पर परजीविता बढ़ाने के लिए उचित है।

एरियोफिड माइट

- सबसे बाहरी परागित पाँच नारियल गुच्छों पर नीम तेल - लहसुन - साबुन मिश्रण दो प्रतिशत गाढ़ता पर (10 लीटर पानी में 200 मि.ली. नीम तेल, 50 ग्राम साबुन और 200 ग्राम लहसुन मिश्रित करके)
- या प्रति लीटर पानी में 4 मि.ली. की दर पर 1 प्रतिशत एज़ाडिरेक्टिन निहित नीम दवा का छिड़काव करें
- या 800 लीटर पानी में पाम तेल (200 मि.ली.) और सल्फर (5 ग्राम) के घोल का छिड़काव करें।
- 10 मि.ली. की दर पर एज़ाडिरेक्टिन 10,000 पीपीएम + 10 मि.ली. पानी जड़ों द्वारा देना भी प्रभावी है।
- खादों और उर्वरकों की अनुशंसित मात्रा के साथ साथ 5 कि.ग्रा. नीम खली का प्रयोग भी अनुशंसित है।

कोरिड बग

- परागित गुच्छों पर नीम तेल-साबुन घोल (0.5 प्रतिशत) का छिड़काव करें। एक लीटर पानी में 5 मि.ली. नीम तेल और 8 ग्राम धुलाई का साबुन मिलाकर यह घोल तैयार किया जा सकता है।

रूगोस स्पाइरलिंग सफेद मक्खी

- पत्तों पर रासायनिक कीटनाशी का छिड़काव नहीं करना चाहिए।
- कज्जली फफूँद की परत को निकालने के लिए पत्तों पर एक प्रतिशत कलफ घोल का प्रयोग करें।
- गंभीर प्रकोप की स्थिति में, नीम तेल 0.5 प्रतिशत का छिड़काव करें और किसी भी कीटनाशी की अनुशंसा नहीं दी जाती है।

रूगोस स्पाइरलिंग सफेद मक्खी

- वयस्क सफेद मक्खियों को फँसाने के लिए ताड़ के तने पर पीला चिपचिपा फँदा स्थापित करें।
- परजीवियों *(एनकार्सिया गुआडेलूप)* के प्रवर्धन को बढ़ावा दें और परजीवीकृत प्यूपे को सफेद मक्खी के प्रकोप की शुरुआत वाले स्थानों में पुनः छोड़ दें।
- बाग में ही कज्जली फफूँद भक्षी कीट *लियोक्रिनस निलगिरियानस* के प्राकृतिक आवास का संरक्षण करें।

एकीकृत रोग प्रबंधन

कली सड़न

- कोंपल के रोगग्रस्त ऊतकों को पूरी तरह निकाल दें। सड़े हुए हिस्सों को हटाने और अच्छी तरह साफ करने के लिए यदि आवश्यक हो तो कोंपल के निकट के दो या तीन स्वस्थ पत्तों को भी काट दें। प्रकोपित ऊतकों को हटा देने के बाद 10 प्रतिशत बोर्डो पेस्ट लगाएं और घाव को पोलिथीन शीट से ढक दें ताकि बारिश का पानी अंदर न घुस जाए। सामान्य अंकुर निकलने तक सुरक्षित रूप से ढककर रखें।
- निकाले गए प्रकोपित ऊतकों को जलाकर या गहरे गड्ढे खोदकर मिट्टी में गाढ़ दें।
- आसपास के ताड़ों पर 1 प्रतिशत बोर्डो मिश्रण का छिड़काव करें।

तना स्त्रवण

- पेड़ के तने के निकट कचरा न जलाएं।
- तने पर घाव लगने न दें।
- छेनी से रोगग्रस्त ऊतकों को पूरी तरह हटाकर घाव पर 5 प्रतिशत हेक्साकोनाज़ोल (100 मि.ली. पानी में 5 मि.ली.) का लेप करें और 0.1 प्रतिशत घोल से प्रति पेड़ 25 लीटर की दर पर थालों को शराबोर करें।
- तने पर स्राव निकलने वाले भागों पर ट्राइकोडेर्मा हर्जियानम के टैल्क आधारित दवा के पेस्ट से लेप करें (25 लीटर पानी में 50 ग्राम ट्राइकोडेर्मा मिलाकर पेस्ट तैयार किया जा सकता है)।
- मिट्टी में प्रति ताड़ 5 कि.ग्रा. की दर पर *ट्राइकोडेर्मा हर्जियानम* से संपुष्ट नीम खली का प्रयोग करें और अनुशंसित सिंचाई/नमी संरक्षण विधियाँ अपनाएं।

पत्ता सड़न

- कोंपल के सड़े हुए भाग और आसपास के 2-3 पत्तों को हटाएं और कोंपल के चारों ओर सबसे निचले भाग पर प्रति ताड़ 300 मि.ली.पानी में 2 मि.ली.हेक्साकोनाज़ोल 5 ईसी निहित फफूँदनाशी घोल या प्रति ताड़ 500 मि.ली. पानी में 50 ग्राम की दर पर *स्यूडोमोनस फ्लूरसेंस* या *बैसिलस सब्टिलिस* के टैल्क आधारित दवा का प्रयोग करें।
- गैंडा भृंग के प्रकोप की रोकथाम हेतु उपाय अपनाएं।

मूल तना विगलन/गैनोडेर्मा मुर्झा

- मृत और रोग की गंभीर स्थिति वाले ताड़ों को हटा दें और इन ताड़ों के धड़ और जड़ भागों का नाश करें।
- थाले के चारों ओर 2 मीटर की गहराई और एक मीटर की चौडाई में गड्ढ़े खोदकर रोगग्रस्त ताड़ों को स्वस्थ ताड़ों से अलग करें।
- प्रकोपित बागों में बाढ़ सिंचाई या जुताई न करें ताकि संरोप का फैलाव रोक सके।
- प्रति वर्ष प्रति ताड़ 50 कि.ग्रा. गोबर की खाद या हरे पत्ते का प्रयोग करें।
- प्रति ताड़ 5 कि.ग्रा. की दर पर नीम खली संपुष्ट ट्राइकोडेर्मा हर्जियानम का प्रयोग करें और चार दिनों में एक बार ताड़ों की सिंचाई करें और थालों में पलेवा लगाएं।
- जहाँ भी संभव हो अंतर फसल के रूप में केले की खेती करें।
- प्रति ताड़ 2 प्रतिशत की दर पर हेक्साकोनाज़ोल (प्रति ताड़ 100 मि.ली. घोल) जड़ों द्वारा दें या 40 लीटर घोल की दर पर 0.2 प्रतिशत हेक्साकोनाज़ोल/1 प्रतिशत बोर्डो मिश्रण से मिट्टी को शराबोर करें।

दिसंबर

बीजफलों का एकत्रीकरण और भंडारण

पहचाने गए मातृ ताड़ों से बीजफलों की तुड़ाई सावधानी से की जानी चाहिए और फल के अंदर का पानी सूख न जाए, इसके लिए समुचित रूप से भंडारण करना चाहिए। जहाँ भी ज़मीन ठोस हो, फलों की तुड़ाई करके रस्सी के सहारे उसे नीचे लाना चाहिए।

बीजफलों का भंडारण

नर्सरी प्रबंधन

नर्सरी के पौधों के लिए सिंचाई की व्यवस्था की जानी चाहिए। जहाँ भी आवश्यक हो खरपतवार निकाल देना चाहिए। नारियल के पत्तों से या सूखे घास से या फिर थालों में हरी खाद फसलों की खेती करके सजीव पौधों से पलवार लगाया जा सकता है। यदि नर्सरी में दीमक का प्रकोप पाया जाता है तो क्लोरपाइरिफोस (2 मि.ली. क्लोरपाइरिफोस एक लीटर पानी में घोलकर) से शराबोर करना चाहिए। स्पाइरलिंग सफेद मक्खी के प्रकोप से बचने के लिए नारियल पौधों के पत्तों के निचले भाग पर पानी का छिड़काव करना चाहिए। नर्सरी से पाँच महीने की आयु के अनंकुरित और मृत पौधों को निकालें।

खाद प्रयोग

- सिंचित बागों में दिसंबर के दौरान उर्वरकों की अनुशंसित मात्रा के एक चौथाई भाग का प्रयोग करें।
- जहाँ भी व्यवहार्य हो मासिक कार्यक्रम के अनुसार नारियल बागों में ड्रिप फेर्टिगेशन जारी रखें।
- जहाँ भी बोरोन की कमी पायी जाए नारियल पेड़ों के थालों में 100 ग्राम बोरेक्स का प्रयोग करें।
- मैग्नीशियम की कमी के कारण नारियल पत्ते पीले पड़ जाए तो थालों में प्रति ताड़ 500 ग्राम मैग्नीशियम सल्फेट का प्रयोग करें।

पलवार लगाना और अंतरखेती क्रियाएं

- यदि पहले नहीं किया गया हो तो थालों में पलवार लगाएं। पलवार लगाने के लिए नारियल बागों में उपलब्ध गिरे सूखे नारियल पत्तों का उपयोग किया जा सकता है।
- नारियल बागों में पहले जो टीले बनाए गए थे उन्हें गिरा दें।

छाया प्रदान करना

- नवरोपित और अवयस्क नारियल पौधों को छाया प्रदान करें।

नारियल के पत्तों से नवरोपित पौधे के लिए छाया प्रदान करना

सिंचाई

- दिसंबर के दौरान नारियल बागों में नियमित रूप से सिंचाई शुरू की जा सकती है।
- यदि नारियल थालों में नालों के ज़रिए पानी दिया जा रहा हो तो सिंचाई नालों को साफ करें।
- यदि थाला सिंचाई अपनायी जा रही हो तो प्रति ताड़ 200 लीटर की दर पर चार दिनों में एक बार सिंचाई की व्यवस्था करें।
- नारियल के लिए सिंचाई की सबसे उपयुक्त विधि ड्रिप सिंचाई है। रेतीली मिट्टियों के लिए ड्रिप्पिंग बिंदु छह औरअन्य प्रकार की मिट्टियों के लिए चार होने चाहिए। वाष्पीकरण दर के आधार पर नारियल की खेती किए जाने वाले विभिन्न इलाकों के लिए ड्रिप सिंचाई विधि के ज़रिए दिए जाने वाले

पानी की मात्रा निर्धारित की जा सकती है। केरल में ड्रिप सिंचाई विधि के ज़रिए प्रति दिन प्रति ताड़ 30-35 लीटर पानी और तमिलनाडु एवं कर्नाटक में 35-45 लीटर पानी पर्याप्त होता है।

- नारियल पौधों को पानी देने के लिए ड्रिप या थाला सिंचाई विधि अपनायी जा सकती है। यदि ड्रिप विधि अपनायी जा रही हो तो प्रति दिन प्रति नारियल पौध 10 लीटर की दर पर पानी प्रदान करें। यदि थाला सिंचाई जैसी दूसरी विधियाँ अपनायी जा रही हो तो चार दिनों में एक बार 60 लीटर पानी देना पर्याप्त होता है।
- बिहार, छत्तीसगढ़, मध्य प्रदेश और उत्तर-पूर्वी राज्य जैसे गैर परंपरागत क्षेत्रों में निम्न तापमान के प्रभाव से बचने के लिए सिंचाई शुरू की जा सकती है। ऐसे क्षेत्रों में मिट्टी का तापमान नियमित रखने के लिए ताड़ के थालों में मोटा पलवार लगाना सुनिश्चित करें।

जल निकासी

- जल जमाव की समस्या वाले क्षेत्रों में नारियल बागों में पर्याप्त जल निकासी की सुविधा सुनिश्चित करें।

कीट एवं रोग प्रबंधन

उत्तर पूर्वी मानसून का चले जाना दिसंबर महीने की विशेषता है जबकि जलवायु धीरे धीरे शुष्क हो जाता है और जाड़े के मौसम की शुरुआत के कारण ठंड भी होने लगता है। नारियल के बागान सहित बहुवर्षीय फसलों की खेती प्रणाली में ठंड और सूखे के दौरान कीटों की मौजूदगी अधिक होती है।

नमी के साथ साथ मानसून बारिश के दौरान कीट प्रकोप कम हो सकता है, जबकि सर्दी (दिसंबर) के आगमन के साथ कीट का प्रकोप शुरू हो जाता है और रोगकारक रोगाणुओं की वृद्धि होती है और इसलिए कड़ी निगरानी और स्थायी रूप से तलाशी करने की ओर अधिक ध्यान केन्द्रित किया जाना चाहिए ताकि समय पर कीटों और रोगों का पता लगाया जा सके और इसका प्रबंधन किया जा सके। पत्ता सड़न, तना स्रवण और मूल तना विगलन जैसे साधारण और सर्वकालिक रोगों का प्रकोप इस अवधि के दौरान भी होता है और इनके प्रकोप को झेलने तथा पेड़ को और नुकसान होने से बचाने के लिए ताड़ को पर्याप्त रूप से स्वस्थ बनाया रखना होगा।

गैंडा भृंग और लाल ताड़ घुन जैसे सर्वव्यापी कीट तथा स्लग इल्ली, रूगोस स्पाइरलिंग सफेद मक्खी, कोरिड बग और चूहे का प्रकोप भी इस अवधि के दौरान स्थानीय क्षेत्रों में हो सकता है।

गैंडा भृंग *(ओरिक्टस रिनोसरस)*

यह एक सर्वव्यापी कीट होने के कारण इसका प्रकोप सभी मौसमों में सर्वदा पाया जाता है और अवयस्क ताड़ों को इससे भारी नुकसान होता है। मई-जून के दौरान रोपित नारियल पौधों को इस अवधि के दौरान कीटों की घुस-पैठ से सुरक्षित रखना होगा। प्रायद्वीपीय भारत में ऑरिक्टस रिनोसेरस नूडिवायरस का प्राकृतिक प्रकोप 0.5 प्रतिशत से अधिक रिकार्ड किया गया है और इसलिए ऑरिक्टस रिनोसेरस नूडिवायरस - घातक नारियल गैंडा भृंग-गुआम(सीआरबी-जी) का प्रकोप हमारे देश में उतनी बड़ी समस्या नहीं रही जिसका प्रकोप दक्षिण पूर्व एशियाई क्षेत्रों में बड़ी संख्या में पेड़ों की बरबादी का प्रमुख कारण बन गया था और अंतर्राष्ट्रीय समूह के लिए यह काफी चिंताजनक मामला बन गया था।

प्रबंधन

- रोगरोधी उपचार के रूप में पेड़ के सबसे ऊपर के तीन पर्ण कक्षों में या तो वानस्पतिक खली (नीम खली/चालमुगरा खली/पोंगम खली (250 ग्राम)) उतनी ही मात्रा में रेत मिश्रित करके भरें या 12 ग्राम नेफ्थालीन गोलियाँ रेत मिश्रित करके रखें।
- सुबह सुबह रोज़ाना ताड़ की छानबीन करें और प्रकोपित क्षेत्र से भृंगों को बीटल हुक से निकाल दें। यह प्रक्रिया अपनाने से कीटों की बढ़ती आबादी कम की जा सकती है।
- अवयस्क ताड़ों के कोंपल क्षेत्र को मछली पकड़ने की जाल से सुरक्षित रखें। इससे गैंड़ा भृंग को फँसाया जा सकता है और कीट का प्रकोप रोकने के लिए सबसे ऊपर के तीन पर्ण कक्षों में 3 ग्राम क्लोरएन्ट्रानिलिप्रोल/फिप्रोनिल निहित छेदयुक्त सेशे रखें।
- खाद गड्ढ़ों, जो कि भृंग के प्रजनन स्थान हैं, को प्रति घन मीटर 5 x 10^{11} की दर पर हरी मस्कार्डिन कवक, *मेटाराइज़ियम एनिसोप्लि* (एक घन मीटर के एक गोबर खाद गड्ढ़े में अधपके चावल में प्रवर्धित 100 ग्राम *मेटाराइज़ियम एनिसोप्लि* का प्रयोग) से उपचार करें ताकि गैंडा भृंग की बढ़ती सूँडियों पर जंतुमारी (एपिज़ोटिक) का प्रकोप करा

सके। यह उपाय समूचे इलाके के किसान एकसाथ अपनाने से कीटप्रकोप प्रभावी रूप में कम किया जा सकता है और यह कीटों की संख्या कम करने में परिस्थिति अनुकूल तरीका बन जाता है।

- प्रजनन गड्ढ़ों में भाँट *(क्लिरोडेंड्रोन इनफोर्चुनेटम)* नामक खरपतवार पौधा मिलाने से हार्मोन संबंधी विसंगतियों के कारण कीट की अवयस्क अवस्था में ही इनका विकास रुक जाता है।

भाँट

लाल ताड़ घुन *(रिंकोफरस फेरुजिनस)*

गैंडा भृंग का प्रकोप कम होने के फलस्वरूप घातक कीट लाल ताड़ घुन के प्रकोप की संभावनाएं भी कम होती है, क्योंकि इस कीट को ताड़ पर जमा होने और अंडा देने के लिए ताड़ पर घाव मौजूद होना आवश्यक है। बौनी किस्म के और 5-15 वर्ष की आयु वाले ताड़ों पर अधिकतर इसका प्रकोप होता है। कीट प्रकोपित पेड़ों पर सभी आयु के कीट पाए जाते हैं। ताड़ का खतरनाक शत्रु होने के नाते इसके प्रबंधन हेतु शीघ्र कार्रवाई निर्धारित की जाती है।

प्रबंधन

- अंडा देने के लिए तैयार घुनों को बाग से दूर रखने के लिए ताड़ पर कोई घाव लगने न देना अनिवार्य होता है और इसलिए पत्तों को काटते समय तने से कम से कम एक मीटर लंबाई में पर्णवृंत को छोड़कर काटना चाहिए।
- कीट का प्रकोप कम करने के लिए फसल ज्यामिति और समुचित दूरी बनाए रखना अत्यंत अनिवार्य है।
- प्रकोपित ताड़ों पर प्रकोपित स्थानों में इमिडाक्लोप्रिड 0.002 प्रतिशत (प्रति लीटर पानी में 1 मि.ली.) या इंडोक्सोकार्ब 0.04 प्रतिशत (प्रति लीटर पानी में 2.5 मि.ली.) का यथासमय प्रयोग करने से सूँडियाँ मर जाती हैं और ताड़ प्रकोप से मुक्त होकर उस पर नई कोंपल निकलने लगती है।
- प्रतिरक्षकों और परागणकर्ताओं को उत्तेजित करते हुए नारियल आधारित फसल प्रणाली के ज़रिए फसलों में विविधता (पारिस्थितिकीय जैवइंजीनियरी) रखने से ताड़ से जुड़े वाष्पशील संकेत कम होगा और कीटों की संख्या कम करने में मदद मिलेगी। एकल फसल प्रणाली की अपेक्षा बहुफसल प्रणाली अपनाने से कीट का प्रकोप कम होता है।

स्लग इल्ली *(डार्ना नैरेरिया)*

आँध्र प्रदेश के पूर्व गोदावरी जिले में और कर्नाटक के तुम्कूर में स्लग इल्ली, डार्ना नैरेरिया का प्रकोप हो सकता है क्यों कि इस दौरान नदी के तटों में और खारे पानी वाले इलाकों में लगाए गए नारियल पेड़ों पर इस कीट की आबादी बढ़ने के लिए अनुकूल वातावरण पैदा होता है। कई सैकड़ों इल्लियाँ पेड़ पर एकत्र हो जाएंगी और ताड़ की पत्तियों की निचली सतह को अपना आहार बना लेगी जिससे चमकदार चित्तियाँ उत्पन्न होती हैं और इसके साथ साथ धूसर पर्ण चित्ती रोग का प्रकोप होने से सारी पत्तियाँ जली हुई सी प्रतीत होती है। गंभीर प्रकोप की स्थिति में, पत्तियाँ सूखकर गिर जाती हैं और मात्र मध्यशिरा रह जाता है। उच्च तापमान और ठंडा मौसम इसका प्रकोप बढ़ने के कारण हो सकते हैं।

प्रबंधन

- कीट प्रकोप के प्रारंभ में ही प्रकोपित पत्तों का तुरंत ही पूरी तरह से नाश करना चाहिए ताकि कीटों की संख्या और बढ़ने से रोका जा सके। ध्यान रहे कि इस कीट में ज़हरीले स्कोली मौजूद होने के कारण इनसान की त्वचा के साथ संपर्क में आने पर अत्यंत खुजली उत्पन्न होती है।

स्लग इल्ली प्रकोपित नारियल पेड़

- यूलोफिड लार्वा परजीवी पेडियोबियस इम्ब्रुएस से जैविक नियंत्रण करने के साथ साथ प्रकाश जाल की स्थापना और प्रति लीटर 5 ग्राम की दर पर बैसिलस थुरिंजिएनसिस का छिड़काव प्रभावी पाया गया है।

रूगोस स्पाइरलिंग सफेद मक्खी
(एल्यूरोडिकस रुगियोपेर्कुलेटस)

इस अवधि के दौरान आक्रामक कीट रूगोस स्पाइरलिंग सफेद मक्खी *(एल्यूरोडिकस रुगियोपेर्कुलेटस)* का प्रकोप नए क्षेत्रों में और पहले प्रकोप रिपोर्ट किए गए क्षेत्रों में फिर से होने की संभावना है। ताड़ के पत्तों की निचली सतह पर सफेद मक्खी की कॉलनियों की मौजूदगी और पत्तों की ऊपरी सतह पर काले रंग के कज्जली फफूँद का होना इस कीट के प्रकोप के प्रमुख लक्षण हैं। गंभीर प्रकोप की स्थिति में, पुराने पत्ते जल्दी पीला पड़कर सूख जाते हैं। सफेद मक्खी का प्रकोप पत्तों, पर्णवृंतों और फलों पर भी होता है और केला, बर्ड ऑफ पैराडाइस, हेलिकोनिया प्रजातियाँ सहित पौधों की एक लंबी श्रेणी पर भी इसका प्रकोप रिपोर्ट किया गया है।

प्रबंधन

- अवयस्क ताड़ों में, जेट की गति में पानी छिड़कने से सफेद मक्खी को निकाला जा सकता है और कीट के आहार लेने तथा प्रजनन की क्षमता कम हो जाती है।
- कीटनाशी का प्रयोग कतई नहीं करना चाहिए क्योंकि इससे कीट का पुनःप्रकोप हो सकता है और कुदरती एफिलिनिड परजीवी *एनकार्सिया गुआडेलूपा* का संपूर्ण विनाश होता है।
- पीले चिपचिपे फँदे लगाने से और *एनकार्सिया गुआडेलूपा* का प्रयोग करके जैविक नियंत्रण विधि अपनाने से कीट का प्रकोप 70 प्रतिशत तक कम और परजीविता 80 प्रतिशत तक बढ़ायी जा सकती है।

एनकार्सिया गुआडेलूपा

कज्जली फफूँद भक्षी भृंग

- बाग में कज्जली फफूँद भक्षी भृंग लियोक्रिनस निलगिरियानस के प्राकृतिक आवास का संरक्षण करने से ताड़ के पत्तों पर जमे सारे कज्जली फफूँदों को खा जाता है और पत्ते साफ हो जाने से ताड़ की प्रकाशसंश्लेषण क्षमता फिर से बढ़ जाती है।

समय पर कीट के प्रकोप का पता लगाने के लिए ताड़ का बारीकी से अनुवीक्षण और व्यवस्थित छानबीन करना अनिवार्य होता है ताकि कीट पर नियंत्रण पाने के लिए सही विधियाँ अपनायी जा सके और दुगुनी आय अर्जित करने के लिए फसल का नुकसान कम किया जा सके।

पत्ता सड़न रोग
(कोलेटोट्रिकम ग्लोइयोस्पोरिओयिड्स, एक्सेरोहिलम रोस्ट्रेटम)

यह जड़मुर्झा रोगग्रस्त ताड़ों पर अक्सर पाया जाने वाला रोग है जो सबसे बाहरी कोंपल और निकटस्थ पत्तों पर ऊतकक्षय के रूप में प्रकट होता है। मानसून के बाद दिसंबर महीने के दौरान मुख्यतः यह रोग पाया जाता है। रोगग्रस्त पत्तों का ऊतकक्षय होता है और यह ताड़ से बिना अलग हुए वहीं पर टिका रहता है। प्रारंभ में यह रोग छोटे छोटे घाव के रूप में प्रकट होता है जो बाद में बड़ा होकर एकसाथ मिल जाता है और सड़न अत्यधिक व्यापक होकर ताड़ की प्रकाशसंश्लेषण क्षमता पर बुरा प्रभाव डालता है। यह रोग दक्षिण केरल के जड़मुर्झा रोगग्रस्त क्षेत्रों में अधिक पाया जाता है।

प्रबंधन

- आवश्यकता आधारित छँटाई और प्रकोपित कोंपल तथा निकटस्थ सबसे बाहरी पत्तों को नष्ट करना होगा।
- प्रकोपित कोंपल वाले क्षेत्र पर 300 मि.ली. पानी में हेक्साकोनाज़ोल 2 मि.ली. का प्रयोग करें।

तना स्रवण *(थिलावियोप्सिस (सेराटोसिस्टिस) पैराडोक्सा)*

यह केरल के अम्लीय मिट्टियों में अधिकांशतः सीमित रोग है और इस अवधि के दौरान इसका प्रकोप अधिक होता है। तने पर लाल-भूरे रंग के चिपचिपे तरल पदार्थ रिसने लगता है जो सूख जाने पर काले रंग का हो जाता है। प्रारंभिक स्थिति में लंबवत् दरार के साथ

तना स्रवण रोगग्रस्त नारियल पेड़

रिसने वाले छोटे धब्बे के रूप में यह प्रकट होता है, जो बाद में एकसाथ मिलकर बहुत बड़ा घाव बन जाता है। इसके निचले भाग के ऊतक बेरंग हो जाते हैं और बाद में ये सड़ जाते हैं। गंभीर प्रकोप की स्थिति में पत्तों का बाहरी छल्ला पीला हो जाता है और यह सूखकर समय से पूर्व गिर जाता है जिससे ताड़ के संपूर्ण स्वास्थ्य पर बुरा असर पड़ता है। डायोकैलैंड्रा और क्साइलिबोरस जैसे स्कोलिटिड भृंगों के प्रकोप से तना और भी कमज़ोर हो जाता है।

प्रबंधन

- कचरा एवं ताड़ के अन्य अपशिष्ट तने के निकट नहीं जलाएं ताकि तना/जड़ पर घाव लगने से बचाया जा सके।
- पर्याप्त सिंचाई और मृदा एवं जल संरक्षण उपाय अपनाना अनुशंसित है।
- ट्राइकोडेर्मा हर्ज़ियानम से संपुष्ट 5 कि.ग्रा. नीम खली का प्रयोग और मृदा जाँच आधारित पोषण प्रबंधन तरीका अपनाना चाहिए।
- तने के रिसने वाले घावों पर ट्राइकोडेर्मा हर्जियानम टैल्क के पेस्ट का प्रयोग भी तना स्रवण रोग का फैलाव रोकने के लिए प्रभावी पाया गया है।

मूल तना विगलन रोग (*गैनोडेर्मा* वर्ग)

यह एक विनाशकारी रोग है जो नारियल की खेती किए जाने वाले सभी इलाकों में पाया जाता है और उच्च पीएच वाली मिट्टी में और नम दबाव परिस्थिति में अत्यधिक गंभीर रूप में प्रकट होता है। रोग प्रकोप की प्रारंभिक स्थिति में रोगाणु जड़ तंत्र पर वार करता है जो प्रत्यक्ष रूप से प्रकट नहीं होता है। तमिलनाडु के तंजावुर, आँध्र प्रदेश में पूर्वी गोदावरी जिले के कुछ इलाकों और कर्नाटक के अरसिकेरे में यह गंभीर रूप में पाया जाता है। पत्तों का बाहरी छल्ला सबसे पहले पीले रंगे के और फिर धीरे धीरे भूरे रंगे के हो जाते हैं और बाद में तने से जुड़े भाग से नीचे की ओर झुक जाता है जो नीचे की तरफ लंबवत् रूप में लटककर तने के शीर्ष पर लहँगे के समान प्रकट होता है।

समय के साथ रोग का प्रकोप बढ़ जाने से तने का शीर्ष शंकु आकार का हो जाता है और धड़ क्षेत्र पर रिसाव के लक्षण प्रकट हो जाते हैं। तने के मूलभाग पर लाल भूरे रंग का घाव प्रकट होता है, जिससे गाढ़े चिपचिपे पदार्थ रिसने लगता

गैनोडेर्मा रोगग्रस्त नारियल पेड़

है। ये भूरे धब्बे ज़मीनी स्तर से एक मीटर की ऊँचाई तक फैल जाते हैं और कभी कभी तने से छाल निकलते हुए भी पाया गया है। कभी-कभार प्रकोपित तने पर रोगाणु के फलन काय(बेसिडियोकार्प) का विकास होता है।

प्रबंधन

- तने के निकट कचरा और ताड़ का अपशिष्ट न जलाएं ताकि तना/जड़ को घाव लगने से बचाया जा सके।
- मृत ताड़ और गंभीर रूप से रोगप्रकोपित ताड़ों को काटकर निकालें तथा रोगग्रस्त ताड़ों के धड़ और जड़ भागों का नाश करें ताकि रोग संरोपों को हटाया जा सके।
- रोगप्रकोपित ताड़ों के चारों ओर (तने के निचले भाग से 1.2 मीटर की दूरी में) गड्ढ़े खोदकर (60 सें.मी. गहरा और 30 सें.मी. चौड़ा) आसपास के स्वस्थ ताड़ों से अलग रखें।
- प्रति वर्ष प्रति ताड़ छह महीने के अंतराल में ट्राइकोडेर्मा हर्ज़ियानम(सीपीटीडी 28) टैल्क दवा(50 ग्राम) से संपुष्ट नीम खली(5 कि.ग्रा.) का प्रयोग करने से रोग की तीव्रता कम हो जाती है।
- 2 प्रतिशत की दर पर हेक्साकोनाज़ोल जड़ों द्वारा देना (प्रति ताड़ 100 मि.ली. घोल) और 0.2 प्रतिशत हेक्साकोनाज़ोल या 1 प्रतिशत बोर्ड मिश्रण के 40 लीटर से नारियल थालों में मिट्टी को शराबोर करना अनुशंसित है।

इस प्रकार, लगातार अनुवीक्षण और रोगरोधी उपचार अपनाए जाने से कीटों और रोगों का प्रकोप कम होता है और समुचित समय पर उचित स्वास्थ्य प्रबंधन रणनीतियाँ अपनाना भी आवश्यक होता है।

(तंपान सी., सुब्रमणियन पी, भा.कृ.अनु.प.-केन्द्रीय रोपण फसल अनुसंधान संस्थान, कासरगोड़ और जोसफ राजकुमार, के.रो.फ.अनु.सं. प्रादेशिक केन्द्र, कायंकुलम द्वारा तैयार किया गया है)

भारत नारियल के उत्पादन और उत्पादकता में विश्व का अग्रणी देश

वैश्विक मानदंडों के अनुरूप गुणवत्तापूर्ण उत्पादों से होगी निर्यात में उछाल - श्री नरेंद्र सिंह तोमर

नारियल विकास बोर्ड ने कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार के तत्वावधान में इंटनरेशनल कोकनट कम्यूनिटी (आईसीसी) के स्थापना दिवस के स्मरणोत्सव के सिलसिले में 2 सितंबर 2021 को 23वें विश्व नारियल दिवस मनाया। इस वर्ष विश्व नारियल दिवस समारोह के लिए मुख्य विषय था "कोविड महामारी के बीच और उसके उपरांत सुरक्षित, समावेशी, सुदृढ़ और सुस्थिर नारियल समुदाय का विनिर्माण"।

श्री नरेंद्र सिंह तोमर, माननीय केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री, भारत सरकार ने इस अवसर पर विषयप्रवेश भाषण दिया। उन्होंने अपने भाषण में कहा कि भारत एक कृषि प्रधान देश है। इस दिशा में भारत सरकार के प्रयत्न उल्लेखनीय भी है और स्वागतयोग्य भी। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी की हमेशा से यह संकल्प रहा है कि हमारे किसानों की आमदनी बढ़नी चाहिए और कृषि के क्षेत्र में हमारे किसानों की महारत होनी चाहिए और कृषि उत्पादों की गुणवत्ता भी ऐसी हो कि निर्यात की दृष्टि से वैश्विक मानदंडों के आधार पर हम दुनिया की आवश्यकताओं में महत्वपूर्ण योगदान दे सके। इसलिए पिछले सात वर्षों में कृषि क्षेत्र के बजट को बढ़ाने को लेकर अनेक प्रकार की योजनाओं का सृजन किया गया, उन्हें कार्यान्वित किया जा रहा है और इसका प्रतिफल आज निश्चित रूप से हमें स्थान स्थान पर दृष्टिगोचर भी होता है। आज हम सब लोग नारियल के किसानों के साथ इस कार्यक्रम में एकत्रित हुए हैं। हम सब इस बात को भलीभांति जानते हैं कि नारियल एक ऐसा फल है जिस पर एक तरफ किसानों की आजीविका निर्भर है और दूसरी तरफ देश की आवश्यकता की निर्भरता भी है।

उन्होंने कहा कि देश में फल तो बहुत है लेकिन अगर फल के साथ श्री लगाया गया या श्रीफल कहा गया तो वह सिर्फ नारियल को ही कहा गया है और यह नारियल किसानों के लिए गौरव की बात भी है और हम सब लोगों के लिए प्रसन्नता

विश्व नारियल दिवस 2021 समारोह में माननीय केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री श्री नरेंद्र सिंह तोमर विषयप्रवेश भाषण देते हुए। श्री कैलाश चौधरी, माननीय केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण राज्य मंत्री, श्री संजय अग्रवाल भा.प्र.से., सचिव, कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय और श्री राजबीर सिंह भा.व.से., संयुक्त सचिव (एमआईडीएच) एवं अध्यक्ष, नारियल विकास बोर्ड भी चित्र में दर्शित हैं

की बात भी है क्योंकि हम श्रीफल की खेती में अपना योगदान दे रहे हैं। खेती के क्षेत्र में स्वाभाविक रूप से उत्पादन और उत्पादकता बढ़े, यह अत्यंत महत्वपूर्ण है। साथ ही किसान को उसके उत्पादों के लिए वाजिब मूल्य भी प्राप्त हो। इस दिशा में भारत सरकार ने भी ध्यान केंद्रित किया है और नारियल के किसानों की दृष्टि से हम देखें तो नारियल विकास बोर्ड ने भी अपनी अनन्य योजनाओं के माध्यम से इसको दिशा देने का निश्चित रूप से प्रयत्न किया है। यही नहीं नारियल को न्यूनतम समर्थन भाव से भी जोड़ा गया है।

उन्होंने बताया कि नारियल किसानों को समय समय पर प्राकृतिक आपदाओं से संरक्षण मिल सके, इस दिशा में भी योजना संचालित की जा रही है। लेकिन जिस प्रकार से हमारे नारियल किसान काम कर रहे हैं वे निश्चित रूप से बधाई के पात्र हैं। क्योंकि अभी संयुक्त सचिव(एमआईडीएच) एवं नाविबो अध्यक्ष श्री राजबीर सिंह जी ने अपने प्रस्तुतीकरण में कहा है कि पूरे विश्व में उत्पादन और उत्पादकता के क्षेत्र में हमारी जो प्रगति हुई है वह विश्व भर में उल्लेखनीय है। यह बोर्ड के निर्णय और उनका क्रियान्वयन तथा किसानों का जो परिश्रम है उसी का परिणाम है। इस फसल की अहमियत के मद्देनज़र इसकी खेती में और अधिक किसान जुड़े यह समय की माँग भी है। यहाँ की जलवायु नारियल की खेती के लिए अनुकूल है और हमारे दक्षिण भारत का बड़ा हिस्सा इसके अंतर्गत आता है। समुद्री तटीय इलाके जहाँ जहाँ हैं वहाँ नारियल की बड़ी फसल होती है। किन्तु कभी कभी दुर्भाग्य से प्राकृतिक आपदा भी हमारे किसान के सामने चुनौती बनकर खड़ी हो जाती है और कोशिश यह रहती है कि ऐसी आपदा में किसानों के साथ सरकार कंधे से कंधे मिलाकर खड़ी हो सके।

आगे उन्होंने कहा कि देश में नारियल के प्रसंस्करण का काम भी चल रहा है। इससे किसानों को निश्चित रूप से अपने उत्पादन के लिए वाजिब दाम भी मिल रहा है और रोज़गार के अवसर भी बढ़ रहे हैं। उन्होंने कहा कि हम सब लोगों को इस दिशा में ध्यान केंद्रित करना चाहिए कि जिस क्षेत्र में नारियल की पैदावार अधिक है वहाँ और रकबा कैसे बढ़ाएं। इस दिशा में निश्चित संकल्प बनाकर लक्ष्य तय करके हम लोगों को आगे बढ़ना चाहिए।

रोज़गार के अवसर सृजित करने की दिशा में भी नारियल की खेती का महत्वपूर्ण योगदान है। बोर्ड की जो नारियल प्रौद्योगिकी मिशन योजना है उसके अंतर्गत नारियल उद्योग को सहायता प्रदान की जाती है। हमें इस योजना का भी एक बार पुनरावलोकन करना चाहिए कि उसको और कैसे आगे बढ़ाया जा सकता है। क्योंकि हम सब जानते हैं कि एक ज़माने में देश भर में पूजा के लिए नारियल की उपलब्धता होती थी। लेकिन नारियल के जो अन्य उत्पादें हैं उनकी उतनी उपलब्धता नहीं होती थी। किंतु आज देश के किसी भी कोने में चले जाओ तो हजारों किलोमीटर दूर भी नारियल पानी की आवश्यकता महसूस की जा रही है और उसके लिए बाज़ार की उपलब्धता भी है। नारियल दूध पाउडर की माँग भी बढ़ रही है और इसे उपलब्ध कराने की कोशिश भी की जा रही है। नारियल उत्पादों की माँग को देखते हुए उन्होंने कहा कि नारियल की खेती एक उद्योग को बढ़ावा देने के लिए भी महत्वपूर्ण है और

सुश्री शोभा करंदलाजे, माननीय केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण राज्य मंत्री वीडियो कान्फ्रेंसिंग के ज़रिए भाषण देती हुई

श्री कैलाश चौधरी, माननीय केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण राज्य मंत्री भाषण देते हुए

इसलिए नारियल प्रौद्योगिकी मिशन के माध्यम से हमको इस दिशा में भी कार्य करना चाहिए।

अपना भाषण समाप्त करते हुए उन्होंने कहा कि पिछले दिनों नारियल विकास बोर्ड का जो नियम था उसको लोकसभा एवं राज्यसभा में बदला गया है। अब गैर शासन के किसान की नियुक्ति अध्यक्ष के पद पर होगी और निश्चित रूप से उनकी योग्यता और उनके अनुभव का लाभ नारियल विकास बोर्ड को और नारियल किसान को मिलेगा। विगत दिनों में निश्चित रूप से कुछ दुर्लक्ष हुए थे लेकिन आने वाले दिनों में वह दुर्लक्ष न हो इस दिशा में सरकार चिंता करेगी और नारियल की खेती की दृष्टि से भारत सरकार के जो प्रयास अपेक्षित हैं हर संभव प्रयास किए जायेंगे और यह क्षेत्र किसानों के लिए लाभदायक हो और रोजगार के अवसर सृजित करने के लिए अपनी ठीक भूमिका निभाकर इस दिशा में प्रयत्न करने में कोई कसर नहीं छोड़ी जाएगी।

माननीय केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण राज्य मंत्री सुश्री शोभा करंदलाजे जी ने किसानों को संबोधित करते हुए कहा कि अधिकांश नारियल किसान लघु और सीमांत श्रेणी के हैं और इसलिए हमारे देशीय नारियल उद्योग का भविष्य सामूहिक रूप से फार्म स्तरीय उत्पादन एकजुट कराने, बेहतर आय प्राप्त करने हेतु प्रसंस्करण और मूल्यवर्धन करने, उत्पाद विविधीकरण और विविध उपोत्पादों तथा इसके मूल्यवर्धन के लिए औद्योगिक उपयोगीकरण हेतु नए निष्कर्षों पर ध्यान केंद्रित करने पर निर्भर है।

माननीय केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण राज्य मंत्री श्री कैलाश चौधरी जी ने भी किसानों को संबोधित किया। अपने संबोधन में उन्होंने कहा कि हमारे माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के संकल्प के अनुसार सरकार नारियल किसानों को अपनी आमदनी बढ़ाने के लिए हितलाभ प्रदान कर रही है। केंद्रीय सरकार किसानों के प्रति कटिबद्ध है और कृषि क्षेत्र को अधिक प्राथमिकता दी जाती है और इसलिए ही कृषि बजट में महत्वपूर्ण वृद्धि की गई है। किसान समूहों के ज़रिए बहुत बड़ी संख्या में किसान काफी सारी सुविधाओं के लिए हकदार बनेंगे।

श्री संजय अग्रवाल भा.प्र.से., सचिव, कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय ने इस अवसर पर भाषण दिया। श्री राजबीर सिंह भा.व.से., संयुक्त सचिव (एमआईडीएच) एवं अध्यक्ष, नारियल विकास बोर्ड ने अपने आमुख भाषण में भारत में नारियल की स्थिति और बोर्ड के प्रकार्य एवं योजनाएं विषय पर प्रस्तुति की। देशभर के 500 प्रगतिशील किसानों, उद्यमियों, निर्यातकों, मंत्रालय और बोर्ड के वरिष्ठ अधिकारियों और विविध राज्य बागवानी मिशनों के अधिकारियों ने समारोह में भाग लिया। श्रीमती दीप्ति नायर एस., उप निदेशक, नाविबो ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

इस सिलसिले में नारियल किसानों के लिए एक तकनीकी सत्र भी आयोजित किया गया जिसमें डा.जोसफ राजकुमार, प्रधान वैज्ञानिक, भा.कृ.अनु.प.- केंद्रीय रोपण फसल अनुसंधान संस्थान, प्रादेशिक केंद्र, कायंकुलम, केरल ने नारियल के कीट प्रबंधन में हाल में हुई प्रगति पर और डा.वेणुगोपालन वी.वी., वरिष्ठ प्रधान वैज्ञानिक और अध्यक्ष, कृषि प्रसंस्करण और प्रौद्योगिकी, वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान परिषद-राष्ट्रीय अंतर्विषयी विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी संस्थान, तिरुवनंतपुरम, केरल ने नारियल पानी के मूल्यवर्धन की संभावनाओं पर बात की। विचार-विमर्श सत्र में किसानों ने अपनी शंकाएं उठाईं और विशेषज्ञों ने इनका समाधान किया।

तकनीकी सत्र में प्रस्तुत आलेख का संक्षेप

नारियल के कीट प्रबंधन में हाल में हुई प्रगति

ए. जोसफ राजकुमार, प्रधान वैज्ञानिक (कृषि कीटविज्ञानी)
भा.कृ.अनु.प.- केंद्रीय रोपण फसल अनुसंधान संस्थान, प्रादेशिक केंद्र, कायंकुलम, केरल, भारत

नारियल को प्रकोपित कीटों की विविधता बढ़ती जा रही है और इससे आखिरकार नारियल पेड़ों की उत्पादकता कम हो जाती है और किसान की सुरक्षित आजीविका खतरे में पड़ जाती है। वासभूमि खेती के लिए उपयुक्त बहुवर्षीय फसल होने के नाते नारियल से टिकाऊ उत्पादकता प्राप्त होने के साथ साथ पर्यावरण की सुरक्षा भी सुनिश्चित करने के लिए कीटों के साथ जीना गति पकड़ रहा है। गैंडा भृंग, लाल ताड़ घुन, कृष्णशीर्ष इल्ली, एरियोफिड माइट, सफेद सूंड़ी एवं चूहे और कोरिड बग, स्लग इल्लियाँ, सफेद मक्खी, आक्रामक सर्पिल सफेद मक्खी (*एल्यूरोडिकस रुगियोपेर्कुलेटस*) सहित विदेशी सफेद मक्खियाँ, परदेशी नीड़न सफेद मक्खियाँ (*पैरालैरोड्स बोंडारी, पैरालैरोड्स मिनेइ*) ताड़ सफेद मक्खी आदि को पहचानने एवं इन कीटों के फैलाव संबंधी जानकारी के साथ साथ पर्यावरण अनुकूल तरीकों के द्वारा इनका नियंत्रण करने हेतु सारी आधुनिक तकनीक हमारे पास उपलब्ध है। *ब्रोंटिस्पा लोंगिसिमेमा, एसापिडियोटस रिगिडस* एवं *वैलेशिया जरावा* जैसे संभावी विदेशी कीटों के संबंध में जागरूकता, इनके फैलाव को रोकने हेतु संगरोध का सशक्तिकरण, इन कीटों के प्रकोप पहचानने पर तुरंत अनुपालन करने योग्य उपाय तैयार रखना आदि अति महत्वपूर्ण है। इसका उद्देश्य कृषि-पर्यावरण आधारित फसल विविधिकरण पर ज़ोर देते हुए बेहतरीन एवं बहुविध कृषि रीतियाँ अपनाने के लिए किसानों को सक्षम बनाने हेतु प्रक्षेत्र पाठशाला सहित किसानों की सहभागिता सुनिश्चित करते हुए सामूहिक गतिविधियाँ आदि से किसानों को सशक्त करके देश के सारे नारियल क्षेत्रों में नारियल की उत्पादकता बढ़ाकर किसानों की आय दुगुनी करना है।

पर्यावरण हितैषी खेती पद्धति को विशेषकर नारियल की नाज़ुक दीर्घकालीन कृषि प्रणाली में पेड़ों, कीटों सहित जीवजंतुओं एवं परिस्थिति को पर्यावरणीय तीव्र प्रक्रिया के ज़रिए उभयनिष्ठ स्वास्थ्य संबंधी अवधारणा से देखभाल करने को बहुत बढ़ावा प्राप्त होगा।

नारियल पानी एवं अन्य उपोत्पादों के मूल्य वर्धन की प्रौद्योगिकियाँ

डा.वेणुगोपालन वी.वी, प्रधान वैज्ञानिक
कृषि प्रसंस्करण प्रौद्योगिकी प्रभाग, राष्ट्रीय अंतर्विषयी विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी संस्थान, तिरुवनंतपुरम

वैज्ञानिक एवं औद्योगिक अनुसंधान परिषद के कृषि प्रसंसक्रण प्रभाग के पास विभिन्न कृषि फसलों के मूल्य वर्धन हेतु कटाई उपरांत प्रौद्योगिकियाँ उपलब्ध हैं तथा इनमें से अधिकांश का वाणिज्यीकरण प्रौद्योगिकी अंतरण एवं परियोजना कार्यान्वयन के ज़रिए किया जा चुका है। नारियल इस संस्थान में अनुसंधान का एक मुख्य विषय है तथा यह संस्थान नारियल के क्षेत्र में कार्यरत प्रमुख उद्योगों के साथ उन्हें उत्पाद विकास, प्रक्रिया संबंधी समस्याएँ, मिलावटी तेल पहचानने की क्रियाविधियाँ, नारियल से जुड़े उत्पादें जैसेकि विर्जिन नारियल तेल का वैज्ञानिक विधिमान्यकरण आदि में अनुसंधान एवं विकास हस्तक्षेपों से समर्थन देते हुए निरंतर संपर्क में रहता हैं। संस्था ने नारियल विकास बोर्ड के वित्तीय समर्थन से परिपक्व नारियल पानी के परिरक्षण एवं मूल्यवर्धन की प्रौद्योगिकियाँ विकसित की हैं। ऊर्जा स्रोतों से समृद्ध परिपक्व नारियल पानी नारियल से जुड़े सारे उद्योगों का उपोत्पाद है जिसको एक पेय के तौर पर खपत की जा सकती है। केरल में बहुत सारी नारियल उत्पादक कंपनियाँ हैं परंतु बिक्री की संभावनाओं का लाभ उठाए बिना इन इकाइयों से उत्पन्न नारियल पानी का निपटारा किया जाता है। इस संबंध में नारियल विकास बोर्ड से वित्तीय समर्थन के

ज़रिए नारियल पानी का यथावत् परिरक्षण एवं मूल्य वर्धन के लिए प्रौद्योगिकियाँ विकसित करने हेतु एक प्रायोजित परियोजना की गई। नारियल पानी जल्द न खराब होने के लिए त्वरित शीतन क्रियाविधि की रूपरेखा विकसित की गई एवं प्रोटोटाइप इकाई का संस्थापन किया गया जिसमें नारियल पानी से मैल निकालने हेतु उसे छानकर 4^0 से. में शीतीकृत करके परिरक्षित रखा जा सकता है। इस पानी से बहुविध मूल्य वर्धित उत्पादें जैसेकि सांद्र नारियल पानी, फलों के रस के साथ गाढ़ा मिश्रण, नारियल पानी कॉफी, पीने के लिए तैयार पाउडर आधारित नारियल पानी आदि विकसित किए गए। कुछेक प्रयोक्ता उपभोक्ताओं के समक्ष वाणिज्यिकरण हेतु प्रक्रिया का निदर्शन किया गया।

संस्थान के पास विर्जिन नारियल तेल उद्योग से प्राप्त निचोड़े गए नारियल अवशिष्ट से आहारीय रेशा विकसित करने से जुड़ी प्रौद्योगिकियाँ भी उपलब्ध हैं। यह उत्पाद प्रोटीन एवं आहारीय रेशे का समृद्ध स्रोत है जिसका उपयोग पौषणिक अनुपूरक के रूप में किया जा सकता है।

संस्थान ने नारियल के उपोत्पादों याने के नारियल दूध निकालने के बाद प्राप्त अवशिष्टों से प्राकृतिक रूप से सड़नेवाली थालियाँ, कटलरी, गिलास, स्ट्रॉ, चम्मच आदि का निर्माण किया है। इन उत्पादों का उपयोग प्लास्टिक के बदले में किया जा सकता है। संस्थान ने नारियल से मूल्य वर्धित उत्पादों का विकास किया है और सांद्र रूप में नीरा विकसित किया है।

भा.कृ.अनु.प.-अखिल भारतीय समन्वित ताड़ अनुसंधान परियोजना ने देशभर में विश्व नारियल दिवस मनाया

राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान प्रणाली के अधीन भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के अखिल भारतीय समन्वित ताड़ अनुसंधान परियोजना देश में विभिन्न कृषि-जलवायु परिस्थितियों के अनुरूप स्थान-विशिष्ट और आवश्यकता आधारित नवाचारों के परीक्षण के लिए कार्यरत अनूठा तंत्र है। वर्तमान में इस परियोजना में अनिवार्य फसलों के रूप में नारियल, तेल ताड़, सुपारी, पनई ताड़ और कोको शामिल हैं और 28 केंद्रों में इसका कार्यान्वयन हो रहा है जिसमें से 15 केंद्र नारियल पर, 6 केंद्र तेल ताड़ों पर, 4 केंद्र सुपारी पर, 4 पनई ताड़ों पर और 7 केंद्र कोको पर अनुसंधान कर रहे हैं। देशभर में स्थित अखिल भारतीय समन्वित ताड़ अनुसंधान परियोजना के सभी नारियल केंद्रों में नारियल पर अधिकाधिक जागरूकता पैदा करने के लिए हर वर्ष विश्व नारियल दिवस मनाया जाता है जिससे कि इस फसल पर राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय ध्यान केंद्रित करने में मदद मिल सकेगा।

अलियारनगर

नारियल अनुसंधान केंद्र, अलियारनगर ने "नारियल उत्पादन प्रौद्योगिकी में उन्नत तकनीक" पर राज्य स्तरीय वेबिनार आयोजित किया। इस वेबिनार में पूरे तमिलनाडु से लगभग 270 नारियल किसानों ने भाग लिया। उद्‌घाटन समारोह के दौरान डा.एस.प्रणीता, प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, नारियल अनुसंधान केंद्र, अलियारनगर ने सभा का स्वागत किया। डा.एन.कुमार, कुलपति, तमिलनाडु कृषि विश्वविद्यालय, कोयंबत्तूर ने समारोह की अध्यक्षता की और अध्यक्षीय भाषण दिया। डीन, बागवानी कॉलेज एवं अनुसंधान संस्थान और निदेशक (मुक्त एवं दूरस्थ अध्ययन), तमिलनाडु कृषि विश्वविद्यालय ने विशेष भाषण दिया।

तिरु. कृष्णसामी गाउंडर (बोर्ड सदस्य), तिरु. सेतुपति और तिरु. ओवीआर.सोमसुंदरम (भूतपूर्व बोर्ड सदस्य) ने इस अवसर पर सभा को संबोधित किया। तत्पश्चात संपन्न तकनीकी सत्र में डा.एस.प्रणीता, प्रोफेसर एवं अध्यक्ष ने नारियल की खेती प्रौद्योगिकी पर बात की। श्री वी.शिवकुमार, असिस्टेंट प्रोफेसर (बाग.) ने नारियल की किस्मों पर और डा.सी.सुधालक्ष्मी, असिस्टेंट प्रोफेसर (कृषिविज्ञान) ने एकीकृत पोषण प्रबंधन पर चर्चा की। डा.एम.अलगार, असिस्टेंट प्रोफेसर (कृषि कीटविज्ञान) ने नारियल में कीट प्रबंधन पर और डा.ई.राजेश्वरी, असिस्टेंट प्रोफेसर (पादप रोगविज्ञान) ने नारियल में एकीकृत रोग प्रबंधन पर बात की।

अंबाजीपेटा

बागवानी अनुसंधान केंद्र, अंबाजीपेटा ने विश्व नारियल दिवस मनाया। कार्यक्रम में आसपास के गांवों से लगभग 30 प्रगतिशील किसानों, वीएचए, वीएए, एचओ तथा एफपीओ सदस्यों ने भाग लिया। किसानों, वीएचए, वीएए तथा कोतपेटा मंडल के एचओ के लिए नारियल के ब्लैक स्कोर्चिंग रोग पर जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया गया। डा.वी.गोवर्धन राव, वैज्ञानिक (पादप रोगविज्ञान) ने रोग की पहचान के लिए रोगलक्षण, रोग का फैलाव नियंत्रित करने हेतु अनुवर्ती पूर्वोपाय एवं रोग नियंत्रण हेतु अपनाई जानेवाली प्रबंधन विधियों पर बात की। डा.बी.वी.के.भगवान, प्रधान वैज्ञानिक (बाग.) एवं अध्यक्ष ने इस रोग की जाँच पर किए गए कार्य की स्थिति पर भाषण दिया और रोग पहचान की प्रगति पर किसानों द्वारा उठाए गए शंकाओं का समाधान किया।

विश्व नारियल दिवस पर आयोजित कार्यक्रम के सहभागी

गोवा

अखिल भारतीय समन्वित ताड़ अनुसंधान परियोजना-गोवा केंद्र और भा.कृ.अनु.प.-केंद्रीय तटीय कृषि अनुसंधान संस्थान के अनुसूचित जनजाति संघटक (एसटीसी) द्वारा भा.कृ.अनु.प.-केंद्रीय तटीय कृषि अनुसंधान संस्थान, पुरानी गोवा में विश्व नारियल दिवस मनाया गया। कैंपस के प्रायोगिक क्षेत्र के बी ब्लॉक के अखिल भारतीय समन्वित ताड़ अनुसंधान परियोजना इकाई में नारियल ताड़ारोहण उपकरण के उपयोग का निदर्शन किया गया। सभी सहभागियों ने इस उपकरण का उपयोग करके अभ्यास किया और उपयोग एवं अनुरक्षण संबंधी अपनी शंकाओं का समाधान भी किया। डा.प्रवीण कुमार, निदेशक, भा.कृ.अनु.प.-केंद्रीय तटीय कृषि अनुसंधान संस्थान ने बैठक की अध्यक्षता की और सहभागियों को विश्व नारियल दिवस तथा नारियल किसानों की आजीविका सुरक्षित रखने में और उपभोक्ताओं के स्वास्थ्य में नारियल के महत्व के बारे में जानकारी दी। उन्होंने नारियल की उत्पादकता सुधारने, नारियल आधारित उत्पादों के मूल्य वर्धन बढ़ाने और अंतर फसल प्रणाली द्वारा नारियल बागों के विविधीकरण में सुधार लाने की आवश्यकता पर भी ज़ोर दिया। डा.वी.अरुणाचलम, प्रधान वैज्ञानिक (बागवानी) एवं प्रभारी वैज्ञानिक, अखिल भारतीय समन्वित ताड़ अनुसंधान परियोजना-गोवा केंद्र ने कार्यक्रम समन्वित किया और ताड़ारोहण उपकरण वितरित किए।

विश्व नारियल दिवस के सिलसिले में आयोजित कार्यक्रम में ताड़ारोहण यंत्र का वितरण

काहिकुची

2 सितंबर, 2021 को विश्व नारियल दिवस के अवसर पर अखिल भारतीय समन्वित ताड़ अनुसंधान परियोजना, बागवानी अनुसंधान केंद्र, काहिकुची, गुवाहटी ने कामरूप जिले के बरदोधी, हाजो में किसानों के बाग में एक दिवसीय कार्यक्रम आयोजित किया। कार्यक्रम के उद्घाटन सत्र के दौरान सभा को संबोधित करते हुए डा.जे.सी.नाथ, प्रधान अन्वेषक, अखिल भारतीय समन्वित ताड़ अनुसंधान परियोजना,

नारियल पौध का रोपण

बागवानी अनुसंधान केंद्र, काहिकुची ने विश्व नारियल दिवस के अनुपालन के महत्व और अहमियत, किसान समुदाय के लिए नारियल की खेती को अधिक लाभकारी बनाने के लिए नारियल के औद्योगिक उपयोग, तुड़ाई उपरांत प्रबंधन एवं नारियल के उत्पाद विविधीकरण पर भाषण दिया। प्रशिक्षण कार्यक्रम में डा.जीकेएस बरुआ, प्रधान वैज्ञानिक, बागवानी अनुसंधान केंद्र, काहिकुची ने गुणवत्तापूर्ण बीजफल मिलने के लिए मातृवृक्षों की चयन प्रक्रिया, नारियल पौध के रोपण के तरीके एवं नारियल में उर्वरक प्रयोग पर विस्तृत विवरण दिया और नारियल के अन्य उन्नत उत्पादन प्रौद्योगिकियों के बारे में संक्षिप्त विवरण भी दिया। सुश्री सिबानी बोरा, कनिष्ठ वैज्ञानिक ने नारियल को प्रकोपित विभिन्न रोग एवं कीट प्रबंधन पर भाषण दिया। सुश्री रीता तालुकदार, प्रेसिडेंट, कामरूप जिला परिषद की अध्यक्षता में संपन्न बैठक में 60 किसानों के साथ साथ अन्य हितधारकों ने भाग लिया।

नवसारी

अखिल भारतीय समन्वित ताड़ अनुसंधान परियोजना, क्षेत्रीय बागवानी अनुसंधान केंद्र, एएसपीईई बागवानी एवं वानिकी कॉलेज और कृषि विज्ञान केंद्र, नवसारी कृषि विश्वविद्यालय, नवसारी ने संयुक्त रूप से विश्व नारियल दिवस मनाया। इस सिलसिले में 2 सितंबर, 2021 को "मूल्य वर्धन एवं नारियल रेशे से विविध सामग्रियों के निर्माण" पर प्रशिक्षण आयोजित किया गया। कार्यक्रम में डा.जेड.पी.पटेल, माननीय कुलपति, नवसारी कृषि विश्वविद्यालय, नवसारी; डा.एस.आर.चौधरी, अनुसंधान निदेशक, नवसारी कृषि विश्वविद्यालय, नवसारी; डा.सी.के.तिम्बाडिया, विस्तार शिक्षा निदेशक, नवसारी कृषि विश्वविद्यालय, नवसारी; डा.पी.के.श्रीवास्तव, प्रधान एवं डीन, एएसपीईई बागवानी एवं वानिकी कॉलेज, नवसारी कृषि विश्वविद्यालय, नवसारी उपस्थित थे। माननीय कुलपति ने अपने अध्यक्षीय भाषण में नारियल से मूल्य वर्धित उत्पादों के निर्माण एवं बिक्री द्वारा महिलाओं के जीवन में सुधार लाने के उद्देश्य से महिलाओं द्वारा चलाए जाने वाले नारियल आधारित उद्यमों पर ध्यान केंद्रित किया। उन्होंने विभिन्न नारियल उत्पादों जैसे नारियल खोपड़ी से कोयला, नारियल पानी से सिरका, कोको पीट, जैविक उर्वरक तथा छिलके से कोको-कयर, सब्जियाँ एवं प्रसंस्कृत लघु आहार व पेय आदि पर भाषण दिया। सम्माननीय अतिथि डा.एस.आर.चौधरी ने नारियल के छिलके और नारियल की खोपड़ी से विभिन्न प्रकार के हस्तशिल्प बनाने के लिए महिला किसानों की सराहना की। मुख्यातिथि डा.सी.के.तिम्बाडिया ने नारियल की अहमियत एवं हितलाभों के बारे में जागरूकता पर बात की। उन्होंने रेशे तथा लकड़ी जैसी कच्ची सामग्रियों पर प्रकाश डाला और कहा कि इनके वाणिज्यिक उत्पादन को बढ़ावा देने से ऐसे क्षेत्रों में जहाँ उद्धार करने की आवश्यकता है गरीबी उन्मूलन और पोषक तत्वों से भरपूर सस्ते खाद्य स्रोत प्रदान करने में मदद मिल सकती है। तकनीकी सत्र में डा.जिलेन मायनी, असिस्टेंट प्रोफेसर, पीएचटी, नवसारी कृषि विश्वविद्यालय, नवसारी ने मूल्य वर्धन तथा इसके लाभों के बारे में सूचना प्रदान की जबकि प्रोफेसर आरतीबेन सोनी, वैज्ञानिक, कृषि विज्ञान केंद्र, व्यारा ने नारियल रेशे से निर्मित विभिन्न उत्पादों पर भाषण दिया। कार्यक्रम में 60 से अधिक महिला किसानों ने भाग लिया। डा.पी.पी.भलेराव, परियोजना प्रभारी, अखिल भारतीय समन्वित ताड़ अनुसंधान परियोजना ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

महिला किसान सहभागी वितरित नारियल पौधों के साथ

रत्नागिरी

क्षेत्रीय नारियल अनुसंधान केंद्र, भाट्ये, रत्नागिरी में 2 सितंबर, 2021 को 23वें विश्व नारियल दिवस मनाया गया। इस कार्यक्रम के लिए विषय था "कोविड़-19 महामारी के बीच और उसके उपरांत सुरक्षित, समावेशी, सुदृढ़ और सुस्थिर नारियल समुदाय का विनिर्माण"। माननीय जिलाधीश, रत्नागिरी डा.बी.एन.पटील ने कार्यक्रम का उद्घाटन किया। श्री राजाभाउ लिमाय, भूतपूर्व सदस्य, नारियल विकास बोर्ड, कोची और श्री संजय शिंदे, अपर जिलाधीश, रत्नागिरी

सभा का दृश्य

कार्यक्रम के मुख्यातिथि रहे। डा.संजय सावंत, माननीय कुलपति, डा.बी.एस.कोंकण कृषि विद्यापीठ, दापोली और डा. पी.एम.हलदणकर, अनुसंधान निदेशक ने ऑनलाइन द्वारा कार्यक्रम में भाग लिया। डा.वैभव शिंदे, डा.एस.एल.घावले, अनुसंधान अधिकारी और डा.एस.एम.वानखेड़े, कनिष्ठ कीट वैज्ञानिक ने इस अवसर पर भाषण दिया। केंद्र ने नारियल पत्तों की बुनाई, झाडू निर्माण, वर्मिकंपोस्ट की तैयारी, विर्जिन नारियल तेल, नारियल चिप्स आदि की का उत्पादन जैसी छोटे पैमाने की घरेलू प्रौद्योगिकी विकास गतिविधियों पर निदर्शनों की व्यवस्था की।

पोर्ट ब्लेयर

अखिल भारतीय समन्वित ताड़ अनुसंधान परियोजना के तहत भा.कृ.अनु.प.-केंद्रीय द्वीपीय कृषि अनुसंधान संस्थान में विश्व नारियल दिवस-2021 के अवसर पर 2 सितंबर को "अधिक लाभ के लिए रोपण फसल आधारित फसल प्रणाली" पर जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया। डा.अजित अरुण वामन, प्रधान परियोजना अन्वेषक ने इस समारोह के आयोजन की अहमियत पर बात की। उन्होंने कहा कि द्वीपीय कृषि में रोपण फसलों की महत्वपूर्ण भूमिका है और लाभदायक फसलों के साथ अंतर फसल प्रणाली अपनाने से खेती की लाभदेयता में सफलतापूर्वक सुधार किया जा सकता है। डा.पूजा बोरा, वैज्ञानिक, भा.कृ.अनु.प.-केंद्रीय द्वीपीय कृषि अनुसंधान संस्थान ने अपने भाषण में विभिन्न मुख्य एवं गौण फलदार फसलों के बारे में बताया जिन्हें रोपणी आधारित फसल प्रणाली में शामिल किया जा सकता है।

पीलीकोट

केरा केरलम समृद्ध केरलम कार्यक्रम के तहत उत्पादित संकर नारियल पौधों का वितरण

क्षेत्रीय अनुसंधान केंद्र, पीलीकोट ने विश्व नारियल दिवस के सिलसिले में संकर बीजफल उत्पादन पर किसान सहभागिता कार्यक्रम का उद्घाटन किया। इस अवसर पर "केरा केरलम समृद्ध केरलम" कार्यक्रम के तहत इस वर्ष के दौरान उत्पादित संकर पौधों की आपूर्ति भी की गई।

(एच.पी.महेश्वरप्पा और सुमिता एस., भा.कृ.अनु.प.- अखिल भारतीय समन्वित ताड़ अनुसंधान परियोजना, भा.कृ.अनु.प.- केंद्रीय रोपण फसल अनुसंधान संस्थान, कासरगोड़, केरल, भारत द्वारा तैयार की गई रिपोर्ट)

भा. कृ. अनु. प.- केंद्रीय रोपण फसल अनुसंधान संस्थान ने विश्व नारियल दिवस मनाया

हर वर्ष सितंबर 2 को इंटरनेशनल कोकोनट कम्यूनिटी (आईसीसी) के सदस्य देशों द्वारा विश्व भर में विश्व नारियल दिवस मनाया जाता है और भारत आईसीसी का संस्थापक सदस्य है। आईसीसी द्वारा विश्व नारियल दिवस 2021 के लिए प्रस्तावित मुख्य विषय था "कोविड महामारी के बीच और उसके उपरांत सुरक्षित, समावेशी, सुदृढ़ और सुस्थिर नारियल समुदाय का विनिर्माण"। भा.कृ.अनु.प.- केंद्रीय रोपण फसल अनुसंधान संस्थान ने इस वर्ष का विश्व नारियल दिवस मुख्य विषय के अनुरूप विभिन्न हितधारकों को शामिल करते हुए ऑनलाइन एवं ऑफलाइन माध्यम में देश के विभिन्न स्थानों में विविध कार्यक्रम आयोजित करते हुए मनाया।

केरल

श्री पी.प्रसाद, माननीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री, केरल सरकार ने ऑनलाइन द्वारा भा.कृ.अनु.प.- केंद्रीय रोपण फसल अनुसंधान संस्थान के विश्व नारियल दिवस समारोह का उद्घाटन किया। अपने भाषण में श्री प्रसाद

ने नारियल की खेती से प्राप्त आय बढ़ाने के लिए मूल्य वर्धित नारियल उत्पादों के उत्पादन एवं विपणन पर ध्यान केंद्रित करने की आवश्यकता पर ज़ोर दिया। केरल सरकार ने नारियल प्रसंस्करण एवं विपणन उद्यम चलाने के लिए किसान उत्पादक संगठनों को समर्थन देने का निर्णय लिया है। कृषि प्रसंस्करण पार्कों की स्थापना, उन्नत नारियल किस्मों की गुणवत्तायुक्त नारियल पौधों के वितरण के लिए नारियल विकास परिषद की पहल एवं केराग्रामम योजना के अंतर्गत विविध गतिविधियाँ राज्य में नारियल क्षेत्र को सशक्त करने के लिए उन्मुख हैं। उन्होंने कहा कि नारियल की उत्पादकता एवं लाभकारिता बढ़ाने के लिए नारियल बागों में प्रौद्योगिकियों का प्रभावकारी एकीकरण करने की तुरंत आवश्यकता है ताकि नारियल की समृद्धि वापस लाई जा सके। माननीय कृषि मंत्री ने युवा उद्यमि श्री अभिलाष के.एस को बधाईयाँ दीं, जिन्हें एग्रि बिज़नस इन्कुबेशन सेंटर, भा.कृ.अनु.प.- केंद्रीय रोपण फसल अनुसंधान संस्थान, कासरगोड से प्रौद्योगिकी एवं मार्गदर्शी समर्थन प्राप्त हुआ था। डा.अनिता करुण, निदेशक, भा.कृ.अनु.प.- केंद्रीय रोपण फसल अनुसंधान संस्थान ने माननीय अतिथिगण, किसान, उद्यमीगण एवं अन्य हितधारकों का स्वागत किया। डा. वेंकटसुब्रहमणियम, निदेशक, भा.कृ.अनु.प.-कृषि तकनीकी अनुसंधान संस्थान ने आशीर्वचन भाषण दिया।

डा.अनिता करुण, निदेशक, केंद्रीय रोपण फसल अनुसंधान संस्थान स्वागत भाषण देती हुई

विश्व नारियल दिवस 2021 के सिलसिले में भा.कृ.अनु.प.- केंद्रीय रोपण फसल अनुसंधान संस्थान ने मुख्य विषय के अनुरूप सीमांत समुदायों को समर्थन देने के लिए कार्यक्रम आयोजित किए। श्री के.राधाकृष्णन, माननीय अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति एवं पिछड़े वर्ग तथा देवस्वम मंत्री, केरल सरकार ने वर्चुअल कार्यक्रम में कण्णूर जिले के आरलम फार्म में पुनर्वासित अनुसूचित जनजाति के किसानों को नारियल पौधे वितरित किए।

श्री के. राधाकृष्णन, माननीय अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति एवं पिछड़े वर्ग तथा देवस्वम मंत्री, केरल सरकार द्वारा सब्जियों के बीज का वितरण

श्री राधाकृष्णन ने अपने भाषण में कृषि के प्रति लोगों का नज़रिया अनुकूल बनाने हेतु हस्तक्षेप करने की आवश्यकता पर ज़ोर दिया। उनकी राय में वर्तमान परिस्थिति में यह सबसे महत्वपूर्ण एवं संगत होगा क्योंकि यह रिपोर्ट के अनुसार कोविड 19 महामारी का कुप्रभाव कृषि उत्पादन पर पड़ रहा है और कम क्रयशक्ति वाले सीमांत लोगों पर इस का बुरा असर अधिक पड़ेगा।

कल्पवृक्ष की भूमि केरल में नारियल खेती को बहुत सारी चुनौतियों का सामना करना पड़ रही है और नारियल की गरिमा वापस लाने के लिए प्रयास अपेक्षित है। उन्होंने बताया कि आय एवं रोज़गार के अवसर बढ़ाने हेतु उत्पाद विविधीकरण के ज़रिए मूल्य वर्धन एक महत्वपूर्ण रणनीति है। श्री के.राधाकृष्णन ने तिरुवनंतपुरम में स्थित अपने कार्यालय में आयोजित एक समारोह में अनुसूचित जाति उपयोजना/अनुसूचित जनजाति संघटक योजनाओं के अंतर्गत तोन्नक्कल पंचायत, पोत्तनकोट ब्लॉक, तिरुवनंतपुरम के चुनिंदे अनुसूचित जाति की महिला किसानों को सब्जियों के बीज वितरित किए।

माननीय मंत्री ने ऑनलाइन प्रणाली में नारियल पौधों के वितरण का उद्घाटन भी किया। एड्वोकेट सण्णी जोसफ माननीय विधायक, पेरावूर, श्रीमती पी. पी. दिव्या, अध्यक्ष, कण्णूर जिला पंचायत, श्री बिनोय कुरियन, उपाध्यक्ष, कण्णूर जिला पंचायत, श्री के. वेलायुधन, अध्यक्ष, इरिट्टि ब्लॉक पंचायत, श्री के.पी.राजेष, अध्यक्ष, आरलम ग्राम पंचायत और श्रीमती मिनी दिनेशन, सदस्य, आरलम ग्राम पंचायत ने नारियल पौधे वितरित किए और आशीर्वचन भाषण दिए। डा. तंपान सी., प्रधान वैज्ञानिक ने सभा का स्वागत किया और श्री बिमल घोष, प्रबंध निदेशक, आरलम फार्मिंग कॉर्पोरेशन ने कृतज्ञता ज्ञापित की।

विश्व नारियल दिवस समारोह के सिलसिले में 2 सितंबर 2021 को आरलम में नारियल आधारित खेती प्रणालियों और

उद्यमों के ज़रिए आय एवं रोज़गार के अवसरों में वृद्धि पर अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति के किसानों के लिए क्षमता विकास कार्यक्रम आयोजित किया गया। कण्णूर जिला पंचायत अध्यक्ष श्रीमती पी.पी. दिव्या, उपाध्यक्ष श्री बिनोय कुरियन एवं श्रीमती मिनी दिनेशन, सदस्य, आरलम ग्राम पंचायत ने आशीर्वचन भाषण दिए। डा. सी.तंपान, प्रधान वैज्ञानिक ने स्वागत भाषण दिया और श्री बिमल घोष, प्रबंध निदेशक, आरलम फार्मिंग कॉर्पोरेशन ने उद्घाटन समारोह में कृतज्ञता ज्ञापित की।

कार्यक्रम के अंतर्गत अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति के 20 किसानों के दो बैचों को प्रशिक्षण दिलाया गया। भा.कृ.अनु.प.-केंद्रीय रोपण फसल अनुसंधान संस्थान, कासरगोड, आरलम फार्मिंग कॉर्पोरेशन एवं नारियल विकास बोर्ड के सहयोगात्मक संयुक्त पहल से कार्यक्रम का आयोजन किया गया। आय एवं रोज़गार के अवसर बढ़ाने के लिए नारियल आधारित खेती प्रणालियों एवं उद्यमों के विविध पहलुओं पर अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति के किसानों की जानकारी एवं कौशल बढ़ाने हेतु क्षमता विकास कार्यक्रम आयोजित किए गए। नारियल की रोपण सामग्री के उत्पादन में जानकारी एवं कौशल विकास, वैज्ञानिक फसल प्रबंधन और नारियल आधारित फसल/खेती प्रणाली, आय एवं रोज़गार बढ़ाने के लिए नारियल के मूल्य वर्धित उत्पादों पर आधारित उद्यम तथा नारियल खेती से उच्च आय प्राप्त करने हेतु सामूहिक रूप से कार्य करने के लिए किसान उत्पादक संगठन आदि विषयों पर प्रशिक्षण दिलाया गया। डा. ए.सी. मैथ्यू, डा. पी.सुब्रह्मणियन, डा. तंपान सी. एवं डा. के.षंसुद्दीन, प्रधान वैज्ञानिक, भा.कृ.अनु.प.-केंद्रीय रोपण फसल अनुसंधान संस्थान, कासरगोड ने प्रशिक्षण कार्यक्रम में विभिन्न सत्रों का संचालन किया।

ओडिशा

भुबनेश्वर में 2 सितंबर 2021 को विश्व नारियल दिवस समारोह के सिलसिले में संपन्न समारोह में अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति के चुनिंदे किसानों को 5500 नारियल पौधे वितरित किए गए। इस कार्यक्रम का आयोजन कल्पब्रुख्या फाउंडेशन के सहयोग से अनुसूचित जाति उपयोजना/जनजाति संघटक योजना के अंतर्गत किया गया।

नारियल पौधों का वितरण

डा. सत्या तपस, श्रीमती दीपा प्रज्ज्वलना एवं डा. गोबिंद चंद्र आचार्य ने सभा को संबोधित किया।

लक्षद्वीप

सभा का दृश्य

विश्व नारियल दिवस के सिलसिले में 2 सितंबर 2021 को लक्षद्वीप कृषि विज्ञान केंद्र के सहयोग से कवरत्ति में नारियल अधारित सूक्ष्मउद्यमों पर हितधारकों की एक बैठक आयोजित की गई। श्री अब्दुल खादर, अध्यक्ष, लक्षद्वीप ग्राम (द्वीप) पंचायत ने बैठक का उद्घाटन किया। डा. आनंद, वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं अध्यक्ष, कृषि विज्ञान केंद्र ने सभा का स्वागत किया। डा. षमीना बीगम, वैज्ञानिक, भा.कृ.अनु.प.-केंद्रीय रोपण फसल अनुसंधान संस्थान, कासरगोड ने नारियल के मूल्य वर्धित उत्पादों के सूक्ष्म उद्यमों पर एक सत्र का संचालन किया।

असम

विश्व नारियल दिवस समारोह के अवसर पर 2 सितंबर 2021 को भा.कृ.अनु.प.-केंद्रीय रोपण फसल अनुसंधान संस्थान, प्रादेशिक केंद्र, काहिकुची, असम ने किसानों के लिए वैज्ञानिक नारियल खेती पर प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया। उत्तर पूर्वी क्षेत्र के सर्वोत्तम नारियल किसान पुरस्कार विजेता श्री पंकज दास ने अन्य किसान सहभागियों के साथ नारियल खेती में अपने अनुभव बाँटे ।

रिपोर्ट की तैयारी: सी. तंपान, प्रधान वैज्ञानिक और एस.जयशेखार, वरिष्ठ वैज्ञानिक, भा.कृ.अनु.प.-केंद्रीय रोपण फसल अनुसंधान संस्थान, कासरगोड

नाविबो प्रौद्योगिकी संस्था में अकादमिक परियोजनाओं के लिए अवसर

आलुवा के दक्षिण वाष़क्कुलम में स्थित नाविबो प्रौद्योगिकी संस्था (सीआईटी) नारियल विकास बोर्ड का तकनीकी स्कंध है और नारियल प्रसंस्करण तथा गुणवत्ता आश्वासन के क्षेत्र में कौशल विकास, सूचना प्रसार, प्रौद्योगिकी निदर्शन एवं मानव संसाधन विकास में उत्कृष्टता के लिए प्रतिबद्ध है। अनुसंधान और नवाचार का अधिदेश बेहतर अवसंरचना तथा पायलट संयंत्र सुविधाओं द्वारा अच्छी तरह समर्थित है।

सीआईटी स्नातक और स्नातकोत्तर छात्रों को उत्कृष्ट शोध वातावरण प्रदान करता है जो पाठ्यक्रम के सिलसिले में शोध-निबंध प्रस्तुत करने और अपने शैक्षणिक कार्य के भाग के रूप में प्रशिक्षुता करना चाहते हैं।

खाद्य प्रौद्योगिकी/खाद्य विज्ञान/पोषण/रसायन/सूक्ष्मजीव विज्ञान/अन्य जैविक विज्ञान के स्नातक/स्नातकोत्तर छात्र इस सुविधा का लाभ उठा सकते हैं। नए उत्पाद विकास, नारियल प्रसंस्करण में अनुसंधान एवं विकास, खाद्य उत्पादों का रासायनिक विश्लेषण एवं सूक्ष्मजैविक विश्लेषण के क्षेत्र में वे अपना परियोजना कार्य कर सकते हैं।

गुणवत्ता परीक्षण प्रयोगशाला एनएबीएल (राष्ट्रीय परीक्षण और अंशशोधन प्रयोगशाला प्रत्यायन बोर्ड) द्वारा मान्यता प्राप्त है और एचपीएलसी (हाई पेर्फोर्मन्स लिक्विड क्रोमाटोग्राफी), जीसीएमएस (ग्यास क्रोमाटोग्राफी मास स्पेक्ट्रोफोटोमीटर), एएएस (ऑटोमिक एब्सोर्प्शन स्पेक्ट्रोफोटोमीटर), यूवी-विसिबिल स्पेक्ट्रोफोटोमीटर आदि जैसे परिष्कृत उपकरणों से सुसज्जित हैं। सीआईटी का पायलट संयंत्र भी विभिन्न नारियल प्रसंस्करण एवं पैकेजिंग मशीनरियों से सुसज्जित है।

पिछले वित्तीय वर्ष के दौरान छह कॉलेजों से 15 छात्रों ने सीआईटी में अपनी अकादमिक परियोजना पूरी की है। भारत के प्रमुख संस्थानों जैसे राष्ट्रीय खाद्य प्रौद्योगिकी उद्यमिता और प्रबंधन संस्थान (एनआईएफटीईएम), केरल मत्स्य पालन और महासागर अध्ययन विश्वविद्यालय (कुफोस), गुजरात फोरेंसिक विज्ञान विश्वविद्यालय, सीएफआरडी, कारुण्या विश्वविद्यालय, एमजी विश्वविद्यालय, कालीकट विश्वविद्यालय आदि इस कार्यक्रम के सहभागी रहे हैं।

छात्र परियोजनाओं के सिलसिले में नारियल, नीरा और हॉस्टोरियम से विभिन्न मूल्यवर्धित उत्पादों के प्रसंस्करण के लिए प्रौद्योगिकियाँ विकसित की गईं। उदाहरण के तौर पर प्रशीतित डेसेर्ट, कोको चिप्स क्लस्टर, नारियल/डाब पानी ब्लेन्ड्स, नारियल पानी से स्पोर्ट्स पेय, नारियल दूध आधारित योगर्ट, पनीर आदि छात्रों द्वारा विकसित कुछ उत्पादें हैं। छात्र स्प्रे ड्राइड अनन्नास फ्लेवेर्ड नारियल पानी, खोपरा चूर्ण आधारित उत्पाद जैसे खोपरा चूर्ण मिलाए चॉकलेट, केक आदि का विकास और मानकीकरण, नारियल हॉस्टोरियम आधारित उत्पादों जैसे हॉस्टोरियम कैन्डी, हॉस्टोरियम पाउडर, ताज़ा हॉस्टोरियम ज्यूस, हॉस्टोरियम क्रंचस, हॉस्टोरियम पाउडर मिलाए हेल्थ मिक्स, हॉस्टोरियम पाउडर मिलाए प्रशीतित डेसेर्ट, सूखा हॉस्टोरियम स्टिक एवं खाद्य बीज मिलाके बनाया गया हॉस्टोरियम क्लस्टर, हॉस्टोरियम और नारियल दूध पाउडर समाविष्ट इंस्टन्ट स्ट्यू मिश्रण का विकास एवं मानकीकरण आदि विषयों पर भी कार्य करते हैं। मूल्य वर्धन और उपोत्पाद उपयोग प्रमुख ध्यान केंद्रित क्षेत्र हैं। छात्रों को उत्पाद विकास, मानकीकरण, संवेदी मूल्यांकन, लागत प्राक्कलन, गुणवत्ता विश्लेषण, पौष्टिक विश्लेषण, सूक्ष्मजीवीय गुणवत्ता विश्लेषण, निधानी आयु विश्लेषण आदि के क्षेत्रों में जानकारियाँ प्राप्त होंगी। छात्र नाविबो प्रौद्योगिकी संस्था द्वारा चलाई जा रही विभिन्न अनुसंधान परियोजनाओं का भी हिस्सा बन सकते हैं।

सीआईटी नारियल प्रसंस्करण एवं गुणवत्ता नियंत्रण के क्षेत्र में अध्ययन एवं अनुसंधान करने के लिए छात्रों को बेहतर अवसर प्रदान करता है।

बोर्ड में हिंदी पखवाड़ा मनाया गया

नारियल विकास बोर्ड में 14 से 28 सितंबर 2021 तक हिंदी पखवाड़ा समारोह मनाया गया। 14 सितंबर को अध्यक्ष महोदय की ओर से सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को अपील जारी की गई।

हिंदी पखवाड़े का औपचारिक उद्घाटन 14 सितंबर 2021 को संपन्न हुआ। कार्यक्रम का आयोजन कोविड प्रोटोकोल का अनुपालन करते हुए किया गया। बोर्ड के सचिव श्री आर.मधु ने परंपरागत दीप प्रज्ज्वलित करके कार्यक्रम का उद्घाटन किया। सचिव महोदय ने बोर्ड के सभी अधिकारियों और कर्मचारियों को राजभाषा प्रतिज्ञा दिलायी और उन्होंने राजभाषा कार्यान्वयन में और प्रगति करने का अनुरोध किया।

बोर्ड की उप निदेशक श्रीमती दीप्ति नायर एस. ने आशीर्वचन भाषण दिया। उन्होंने कहा कि हिंदी ही एक ऐसी भाषा है जो पूरे भारतवर्ष को एक माला में पिरो सकती है। केंद्रीय सरकार के कर्मचारी होने के नाते हिंदी में काम करना हमारा कर्तव्य है। हमें पूरे लगन के साथ हिंदी में काम करना चाहिए। उन्होंने खुशी जताई कि बोर्ड में राजभाषा का कार्यान्वयन काफी ज़ोर से हो रहा है। उद्घाटन सत्र में श्रीमती बीना एस., सहायक निदेशक(रा.भा.) ने सभा का स्वागत किया और श्रीमती विंदु रानी एन., वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी ने धन्यवाद अदा किया। बोर्ड के इकाई कार्यालयों के अधिकारियों और कर्मचारियों ने भी वर्चुअल मोड में इस कार्यक्रम में भाग लिया।

तदुपरांत हिंदी पखवाड़े के सिलसिले में 15 से 24 सितंबर 2021 तक बोर्ड में कई प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं। सारी प्रतियोगिताएं कोविड प्रोटोकोल का अनुपालन करते हुए चलायी गयीं। 18 सितंबर 2021 शनिवार को पूर्वा.10.30 बजे से नाविबो के पदाधिकारियों के बच्चों के लिए विभिन्न प्रतियोगिताएं ऑनलाइन माध्यम से आयोजित की गईं। बच्चों के लिए प्रतियोगिताएं सब जूनियर, जूनियर और सीनियर आदि तीन श्रेणियों में आयोजित की गईं। तीनों श्रेणियों में हिंदी कविता पाठ, हिंदी गान और हिंदी भाषण प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं। सब जूनियर श्रेणी में भाषण प्रतियोगिता का विषय था *नीरा के गुण*। जूनियर और सीनियर श्रेणी में भाषण प्रतियोगिता का विषय क्रमशः *नारियल खायें स्वस्थ रहें* और *सौंदर्य प्रसाधन में नारियल तेल* था।

श्री आर.मधु, सचिव, नारियल विकास बोर्ड दीप प्रज्ज्वलित करके कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए

श्री आर.मधु, सचिव उद्घाटन भाषण देते हुए

श्रीमती दीप्ति नायर एस.,उप निदेशक आशीर्वचन भाषण देती हुई

15 सितंबर से 24 सितंबर 2021 तक बोर्ड के अधिकारियों एवं कर्मचारियों के लिए अनुवाद, हस्तलिपि, हिंदी टंकण, कविता पाठ, हिंदी गान, शब्दावली, टिप्पण व पत्र लेखन, श्रुतलेखन, अवतरण पाठ, प्रश्नोत्तरी, हिंदी वार्तालाप, अंताक्षरी आदि प्रतियोगिताएं चलाई गईं। 20 सितंबर 2021 को चालकों और मल्टी टास्किंग स्टाफ के लिए अवतरण पाठ और श्रुतलेखन प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं।

पखवाड़े का समापन समारोह 05 अक्तूबर 2021 को संपन्न हुआ। समापन सत्र में हिंदी पखवाड़े के सिलसिले में आयोजित प्रतियोगिताओं के विजेताओं ने प्रत्यक्ष रूप से और बोर्ड के शेष सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने वर्चुअल मोड में भाग लिया।

श्री आर.मधु, सचिव, नाविबो कार्यक्रम के अध्यक्ष रहे। उन्होंने अपने अध्यक्षीय भाषण में प्रतियोगिताओं के सभी पुरस्कार विजेताओं को बधाई देते हुए कहा कि हिंदी संघ की राजभाषा है और कार्यालयों में हिंदी का प्रयोग बढ़ाना अति आवश्यक है। इस उद्देश्य से ही हम हिंदी पखवाड़ा मनाते हैं। हिंदी अकेली राजभाषा ही नहीं बल्कि आम जनता की और किसानों की भी भाषा है। देश भर के किसान समूह के बीच

हमारी योजनाओं का प्रचार-प्रसार हिंदी में आसानी से कर सकते हैं।

बोर्ड के निदेशक श्री हेमचंद्र जी ने अपने भाषण में हिंदी पखवाड़ा समारोह के सिलसिले में प्रतियोगिताओं के सफल आयोजन के लिए सभी को बधाई दी। उन्होंने कहा कि हिंदी पखवाड़ा के सफल आयोजन का श्रेय आप सभी को जाता है। हिंदी इतनी सरल भाषा है कि इसे कोई भी आसानी से समझ सकती है और पढ़ सकती है। हमें बस इसके प्रति रुचि रखनी चाहिए। उन्होंने बोर्ड के अधिकारियों से अनुरोध किया कि जहाँ तक संभव हो वे अधिकाधिक काम हिंदी में करें। जितना वे हिंदी में काम करेंगे, अपने अधीन कार्यरत कर्मचारियों को भी उतना ही प्रोत्साहन मिलेगा। बोर्ड के मुख्य परामर्शदाता श्री सरदिंदु दास ने भी इस अवसर पर सभा को संबोधित किया। उन्होंने हिंदी पखवाड़े के सिलसिले में आयोजित प्रतियोगिताओं के सभी सहभागियों को बधाई दी।

श्री हेमचंद्र, निदेशक भाषण देते हुए

श्री सरदिंदु दास, मुख्य परामर्शदाता भाषण देते हुए

तदुपरांत संपन्न पुरस्कार वितरण समारोह में बोर्ड के सचिव श्री आर. मधु ने बोर्ड के अधिकारियों एवं कर्मचारियों के बच्चों में से दसवीं और बारहवीं कक्षाओं की परीक्षाओं में हिंदी में सर्वोच्च अंक प्राप्त बच्चों को तथा बोर्ड के अधिकारियों/कर्मचारियों के लिए आयोजित प्रतियोगिताओं के विजेताओं को और हिंदी पखवाड़े के दौरान सर्वाधिक कार्य किए कर्मचारियों को पुरस्कार प्रदान किए। उन्होंने हिंदी में मूल काम करने की प्रोत्साहन योजना में सहभागी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को भी प्रमाणपत्र वितरित किए।

बोर्ड के निदेशक श्री हेमचंद्र ने टीम प्रतियोगिताओं के विजेताओं को और हिंदी में उत्तम कार्यनिष्पादन के लिए विजेता अनुभागों को तथा आज का शब्द सबसे सुंदर ढंग से लिखने के

पुरस्कार वितरण के दृश्य

राजभाषा प्रतिज्ञा लेते अधिकारी और कर्मचारी

सभा का दृश्य

लिए पुरस्कार प्राप्त अनुभागों को नकद पुरस्कार प्रदान किए। बोर्ड के मुख्य परामर्शदाता श्री सरदिंदु दास और उप निदेशक श्री खोकन देबनाथ ने हिंदी पखवाड़े के सिलसिले में बोर्ड के अधिकारियों एवं कर्मचारियों के बच्चों के लिए आयोजित प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कार प्रदान किया।

श्रीमती बीना एस., सहायक निदेशक(रा.भा.) ने सभा का स्वागत किया और श्रीमती संगीता टी.एस., वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

बोर्ड के क्षेत्रीय कार्यालयों, राज्य केंद्रों और प्रदर्शन सह बीज उत्पादन फार्मों में भी हिंदी पखवाड़ा समारोह 2021 का समुचित रूप से आयोजन हुआ। पखवाड़े के सिलसिले में अधिकारियों और कर्मचारियों के लिए प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं और प्रतियोगिताओं के विजेताओं को समापन समारोह में पुरस्कार वितरित किए गए। सभी कार्यालयों में कार्यक्रम का आयोजन कोविड-19 प्रोटोकोल का अनुपालन करते हुए किया गया।

नारियल विकास बोर्ड में नए नियुक्त सदस्य

श्री सुरेष गोपी, सांसद (राज्य सभा)
लक्ष्मी, डी-9, टेंपिल रोड, शास्तामंगलम
तिरुवनंतपुरम-695010
दूरभाषः 011-23722177

श्री पी.रघुनाथ,
अच्युतम, मलपरंबा डाक
कोष़िक्कोट-673 009
दूरभाष 9447778755

श्री के. नारायणन मास्टर
कोयाट्टिल हाउस, ओषूर डाक,
तणलूर मार्ग, मलाप्पुरम-676 307
दूरभाषः 9447004994

श्री आर. इंलगो
सं 157, पेरुमाल कोइल स्ट्रीट
पट्टुकोट्टई, तमिलनाडु-614601
दूरभाषः 9488117474

श्री एस.वी.मुत्तुरामलिंगम,
सिरुकलेंतई डाक
किनत्तुकटवु, कोयंबत्तूर-642 202
दूरभाषः 9443028441

श्री रेणुकुमार बी.एच
सुपुत्र श्री हालगेगौड़ा बी.एस,
बेण्णूर गाँव एवं डाक, कसबा होब्ली,
बेलूर तालूका, कर्नाटक-573 115
दूरभाषः 9945160661

श्री एच.एल अश्वत्थनारायणा
अन्नापुरा, हालेपाल्या डाक, तिप्तूर
कर्नाटक-572 202,
दूरभाषः 6363067478

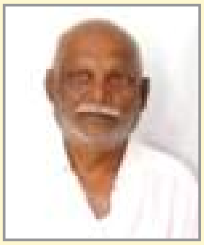

श्री गुरुस्वामी डी.
सुपुत्र श्री दयामप्पा, माविनाकट्टे
बीसनहल्ली डाक, होसदुर्ग तालूका
चित्रदुर्ग, कर्नाटक- 577 527
दूरभाष - 9980817794

द्वीप नारियल की संभावनाओं की खोजः उद्योग-किसान संवाद

नारियल विकास बोर्ड ने लक्षद्वीप संघ शासित क्षेत्र प्रशासन और लक्षद्वीप विकास निगम लिमिटेड (एलडीसीएल) के सहयोग से 23 जुलाई 2021 को कोची में हितधारी सम्मेलन आयोजित किया। इसका मुख्य उद्देश्य नारियल और कयर उत्पादों के प्रमुख निर्यातकों के साथ व्यापार संबंध स्थापित करने और संघ शासित क्षेत्र में प्रसंस्करण इकाइयों में निवेश करने हेतु उद्यमियों/निर्यातकों/निवेशकों के साथ संभावी सहयोग की गुंजाइशों का पता करना या संघ शासित क्षेत्र में स्थापित मौजूदा प्रसंस्करण अवसंरचना को प्रचालनयोग्य बनाना था। नारियल और नारियल उत्पादों के मुख्य निर्यातकों ने बैठक में भाग लिया। कयर बोर्ड के ज़रिए कयर उत्पादों के निर्यातकों को भी आमंत्रित किया गया। कयर बोर्ड, स्पाइसेस बोर्ड, लक्षद्वीप विकास निगम लिमिटेड, केंद्रीय रोपण फसल अनुसंधान संस्थान और लक्षद्वीप कृषि विज्ञान केंद्र के प्रतिनिधियों ने भी सम्मेलन में भाग लिया।

श्री दामोधर ए.टी., भा.व.से., सचिव (कृषि), संघ शासित क्षेत्र के स्वागत भाषण से बैठक का शुभारंभ हुआ। सचिव (कृषि) ने बैठक के उद्देश्यों पर संक्षिप्त विवरण दिया। इसके बाद श्री अनबरसु भा.प्र.से., लक्षद्वीप संघ शासित क्षेत्र प्रशासक के सलाहकार ने उद्घाटन भाषण दिया जिन्होंने द्वीप से वर्चुअल तरीके से बैठक में भाग लिया। श्री ओ.पी.मिश्र, विशेष सचिव और श्री सचिन शर्मा, प्रबंध निदेशक, एलडीसीएल भी बैठक में शामिल हुए।

सलाहकार ने सूचित किया कि एनसीडीसी के सहयोग से संघ शासित क्षेत्र में किसान उत्पादक संगठन गठित करने का प्रस्ताव किया गया है। द्वीप में नारियल किसानों को किफायती आय सुनिश्चित करने के लिए प्रसंस्करण को बढ़ावा देने और प्रसंस्करण इकाइयों को सफलतापूर्वक चलाने के लिए निजी क्षेत्र के साथ सहयोग का प्रस्ताव है। उन्होंने लानिड(LANID) योजना के बारे में भी उल्लेख किया जिसके ज़रिए इस पहल का समर्थन किया जा सकता है। उन्होंने सूचित किया कि घरेलू

सम्मेलन का दृश्य

उपयोग और द्वीपों में चलाए जा रहे वर्तमान प्रसंस्करण की ज़रूरतों को पूरा करने के बाद प्रसंस्करण के लिए लगभग 8.5 करोड़ फल उपलब्ध होंगे। संघ शासित क्षेत्र के कृषि विभाग, नाविबो, कयर बोर्ड और स्पाइसेस बोर्ड शामिल प्रमुख विकास संगठनों ने संघ शासित क्षेत्र में नारियल क्षेत्र के विकास हेतु जो गतिविधियाँ अपनायी जा सकती हैं इनके बारे में और उपलब्ध समर्थन योजनाओं पर विवरण दिया।

इसके पश्चात् बैठक में सहभागी नारियल और कयर उत्पादों के निर्यातकों के साथ परिचर्चा संपन्न हुई। नारियल उत्पादों के लगभग 15 प्रमुख निर्यातकों, कयर निर्यातकों और कयर निर्यातकों तथा व्यापार निकायों के प्रतिनिधियों ने परिचर्चा में भाग लिया। निवेशकों/उद्यमियों ने संघशासित क्षेत्र जो समर्थन प्रदान किया जा सकता है उसके बारे में, बिजली तथा अन्य उपयोगिताओं के लिए प्रभार, परिवहन लागत, पत्तनों में हैंडलिंग लागत, भूस्वामित्व के मामले और पट्टे पर ली गई भूमि के लिए ऋण की अनुपलब्धता, इकाइयाँ जो नए सिरे से सुसज्जित बनानी है में कार्यरत कर्मचारी आदि जैसे मुद्दों के बारे में पूछताछ की। कयर निर्यातकों ने सुझाव दिया कि उत्पादित कयर की गुणवत्ता उतना अच्छा नहीं है। लेकिन 180 कि.मी. की लंबी तटरेखा को मिट्टी के कटाव से बचाने के लिए भूवस्त्र के निर्माण हेतु द्वीप इसका इस्तेमाल कर सकता है।

सवालों के जवाब देते हुए श्री दामोधर भा.व.से. ने बताया कि संघ शासित क्षेत्र नारियल एवं कयर प्रसंस्करण से संबंधित मौजूदा अवसंरचना के लिए तथा नई अवसंरचना में निवेश करने के लिए निजी समर्थन और साझेदारी पर विचार कर रहा है। व्यापार का एक चैनल स्थापित करने हेतु शुरू में परिवहन सहायता देकर मुख्य भूभाग के साथ नारियल और खोपरे के व्यापार की संभाव्यता का पता किया जा सकता है। जैविक क्षेत्र के रूप में द्वीपों के बड़े क्षेत्र के प्रमाणीकरण के लिए भी कार्रवाई की जा रही है।

डा.सी. तम्पान, प्रधान वैज्ञानिक, केंद्रीय रोपण फसल अनुसंधान संस्थान ने सुझाव दिया कि यदि प्रसंस्करण को बढ़ाना हो तो उत्पादन को और बेहतर बनाने की आवश्यकता है। उन्होंने पारिस्थितिकी तंत्र की स्थिरता बनाए रखने के लिए पौधों की आबादी पुनर्गठित करने और प्रसंस्करण के लिए द्वीपवार प्रचालन स्तर विकसित करने की आवश्यकता पर ज़ोर दिया।

अपने भाषण के अंत में सचिव, कृषि ने मौजूदा अवसंरचना और प्रस्तावित बोली-पूर्व बैठक के लिए हित की अभिव्यक्ति दस्तावेज़ के बारे में संक्षिप्त विवरण दिया। नया परिणाम फ्रेमवर्क दस्तावेज़ (आरएफडी) तैयार किया जा रहा है। सितंबर से मौसम शुरू हो जाने के कारण संगठित तरीके से फलों का स्रोत पहचानने का कार्य शुरू करने का प्रस्ताव किया गया था। सलाहकार ने यह भी बताया कि द्वीप में नारियल और कयर के प्रसंस्करण को बढ़ावा देने के लिए आगे की योजना बनाने और अंतिम रूप देने के लिए इच्छुक निर्यातकों/निवेशकों/उद्यमियों के साथ अलग अलग (वन टु वन) ऑनलाइन बैठक आयोजित की जानी होगी।

नारियल ताड़ का अमृत महोत्सव वर्ष मनाया गया

हतीस गांववालों ने 15 अगस्त 2021 को 75वें स्वतंत्रता दिवस और आज़ादी का अमृत महोत्सव तथा महाराष्ट्र के रत्नागिरी के हतीस गाँव में भैरी-जुगाई मंदिर के परिसर में 15 अगस्त 1947 को रोपित नारियल पेड़ के 75वें रोपण दिवस और अमृत महोत्सव वर्ष (2021-22) मनाया।

डा. दिलीप नागवेकर, भूतपूर्व कीटविज्ञानी, क्षेत्रीय नारियल अनुसंधान केंद्र, भाट्ये, रत्नागिरी (महाराष्ट्र) और भूतपूर्व अध्यक्ष, हतीस ग्राम विकास मंडल, हतीस ने गांववालों से 15 अगस्त 2021 को अपने घर के आसपास के क्षेत्रों में या कजली नदी के किनारे 75 नारियल पौधों का रोपण करके पेड़ का "अमृत महोत्सव वर्ष" मनाने का अनुरोध किया। समुचित क्रियाविधि का अनुसरण करते हुए क्षेत्रीय नारियल अनुसंधान केंद्र, भाट्ये से 75 पौधे खरीदे गए और डा. श्रीरंग कद्रेकर (भूतपूर्व कुलपति, डा. बालासाहेब सावंत कोंकण कृषि विद्यापीठ, दापोली), श्री वी.वी.लिमाये (भूतपूर्व उपाध्यक्ष, नाविबो, कोची), जहाजी दिलीप भटकर (मरैन सिंडिकेट प्रा. लि., रत्नागिरी), श्री कुमारजी शेत्ये (भूतपूर्व सभापति, पंचायत समिति, रत्नागिरी), श्रीमती कंचन नागवेकर, सरपंच, टेंभ्ये-हतीस ने गांववालों को पौधे वितरित किए।

डा.कद्रेकर ने अपने भाषण में बताया कि हतीस शायद भारत का एकमात्र स्थान है जहाँ पर भारत की आज़ादी वाले

कार्यक्रम के सहभागी वितरित नारियल पौधों के साथ

दिन को एक नारियल पेड़ का रोपण किया था और पिछले 74 वर्षों से इसका पालन-पोषण किया जा रहा था। उन्होंने बताया कि 75 नारियल पौधे लगाने का आशय बढ़िया है लेकिन किसानों को इन ताड़ों का बेहतर देखभाल भी करना होगा। डा.नागवेकर ने अपने आमुख भाषण में रोपण कार्यक्रम पर बात की। श्री वी.वी.लिमाय, जहाज़ी दिलीप भटकर और श्री कुमारजी शेत्ये ने इस अवसर पर भाषण दिया। बुजुर्ग ग्रामीण श्री लीलाकांत, विजय (बाबन), जयवंत, रवींद्र नागवेकर ने इस समारोह में सक्रिय रूप से भाग लिया। हतीस ग्राम विकास मंडल के सदस्यों और गांववालों ने राष्ट्रीय ध्वजारोहण द्वारा स्वतंत्रता दिवस मनाया और उसके बाद 74 वर्षीय नारियल पेड़ को फूलों की माला पहनायी और इसकी पूजा की। गांववालों ने अपने घर के आसपास तथा कजली नदी के किनारे 75 नारियल पौधों का रोपण किया।

विश्व नारियल दिवस को नारियल में एकीकृत फसल प्रबंधन पर वर्चुअल किसान फील्ड स्कूल आयोजित

कृषि विज्ञान केंद्र, कण्णूर ने केंद्रीय रोपण फसल अनुसंधान संस्थान, कासरगोड़ के सहयोग से 2 सितंबर, 2021 को विश्व नारियल दिवस के सिलसिले में नारियल में एकीकृत फसल प्रबंधन पर वर्चुअल किसान फील्ड स्कूल आयोजित किया। डा. जयश्री कृष्णनकुट्टी, विस्तार निदेशक, केरल कृषि विश्वविद्यालय ने कार्यक्रम का उद्घाटन किया। श्रीमती अजिमोल ई.के., उप निदेशक (बागवानी), कृषि विकास एवं किसान कल्याण विभाग और डा. रेजी जेकब थोमस, प्रधान वैज्ञानिक, केंद्रीय रोपण फसल अनुसंधान संस्थान, कायंकुलम ने इस अवसर पर भाषण दिया। नारियल किसान उत्पादक कंपनियों के प्रतिनिधियों ने अपने अनुभव बाँटे और वर्चुअल किसान फील्ड स्कूल के बारे में अपने विचार व्यक्त किए।

वर्चुअल किसान फील्ड स्कूल तीन नारियल किसान उत्पादक कंपनियों याने तेजस्विनी नारियल किसान उत्पादक कंपनी, तिरुमेनी, चेरुपुष़ा; नारियल किसान उत्पादक कंपनी, परियारम और नारियल किसान उत्पादक कंपनी, इरिट्टी के ज़रिए आयोजित किया गया था। सूक्ष्म जलवायु प्रबंधन, मातृवृक्ष चयन, नर्सरी प्रबंधन, एकीकृत पोषण प्रबंधन, एकीकृत कीट एवं रोग प्रबंधन, प्रसंस्करण एवं मूल्य वर्धन, नारियल सेवा प्रदाताओं का सृजन आदि सहित विभिन्न पहलुओं पर मासिक सत्र के रूप में वर्चुअल किसान फील्ड स्कूल आयोजित किया जाएगा।

बाज़ार समीक्षा

जून 2021

नारियल तेल

नारियल तेल का भाव जून 2021 के दौरान कोची बाज़ार में प्रति क्विंटल 18300 रुपए, आलप्पुष़ा बाज़ार में प्रति क्विंटल 18400 रुपए और कोषि़क्कोट बाज़ार में प्रति क्विंटल 20200 रुपए पर खुला। महीने के दौरान कोची, आलप्पुष़ा और कोषि़क्कोट बाज़ारों में नारियल तेल के भाव में घटाव का रुख रहा।

कोची बाज़ार में नारियल तेल का भाव प्रति क्विंटल 400 रुपए की शुद्ध हानि के साथ प्रति क्विंटल 17900 रुपए पर, आलप्पुष़ा बाज़ार में प्रति क्विंटल 500 रुपए की शुद्ध हानि के साथ प्रति क्विंटल 17900 रुपए पर और कोषि़क्कोट बाज़ार में प्रति क्विंटल 1400 रुपए की शुद्ध हानि के साथ प्रति क्विंटल 18400 रुपए पर बंद हुआ।

कंगयम बाज़ार में नारियल तेल का भाव प्रति क्विंटल 16133 रुपए पर खुला और प्रति क्विंटल 666 रुपए की शुद्ध हानि के साथ 15467 रुपए पर बंद हुआ।

पेषण खोपरा

महीने के दौरान पेषण खोपरे का भाव कोची बाज़ार में प्रति क्विंटल 11950 रुपए, आलप्पुष़ा बाज़ार में प्रति क्विंटल 11850 रुपए और कोषि़क्कोट बाज़ार में प्रति क्विंटल 12000 रुपए पर खुला।

कोची बाज़ार में पेषण खोपरे का भाव प्रति क्विंटल 750 रुपए और आलप्पुष़ा बाज़ार में प्रति क्विंटल 500 रुपए और कोषि़क्कोट बाज़ार में प्रति क्विंटल 900 रुपए की शुद्ध हानि के साथ प्रति क्विंटल क्रमशः 11200 रुपए, 11350 रुपए और 11100 रुपए पर बंद हुआ।

तमिलनाडु के कंगयम बाज़ार में पेषण खोपरे का भाव प्रति क्विंटल 10500 रुपए पर खुला और घटाव का रुख दर्शाकर प्रति क्विंटल 10350 रुपए पर बंद हुआ।

खाद्य खोपरा

रिपोर्टाधीन महीने के दौरान कोषि़क्कोट बाज़ार में राजापुर खोपरे का भाव प्रति क्विंटल 20000 रुपए पर खुला और प्रति क्विंटल 2900 रुपए की शुद्ध हानि के साथ 17100 रुपए पर बंद हुआ।

गोल खोपरा

तिप्तुर बाज़ार में गोल खोपरे का भाव प्रति क्विंटल 16400 रुपए पर खुला और अंतिम सप्ताह के दौरान तिप्तूर बाज़ार से कोई रिपोर्ट प्राप्त नहीं हुई।

सूखा नारियल

कोषि़क्कोट बाज़ार में सूखा नारियल का भाव प्रति क्विंटल 10350 रुपए पर खुला और प्रति क्विंटल 4900 रुपए के शुद्ध लाभ के साथ प्रति क्विंटल 15250 रुपए पर पर बंद हुआ।

नारियल

केरल के नेटुमंगाट बाज़ार में नारियल का भाव प्रति हज़ार फल 18000 रुपए पर खुला और महीने के दौरान प्रति हज़ार फल 2000 रुपए की शुद्ध हानि के साथ प्रति हज़ार फल 16000 रुपए पर बंद हुआ।

तमिलनाडु के पोल्लाच्ची बाज़ार से महीने के पहले तीनों सप्ताहों के दौरान नारियल का भाव रिपोर्ट नहीं किया गया है।

महीने के अंतिम सप्ताह के दौरान नारियल का भाव प्रति हज़ार फल 12000 रुपए था।

कर्नाटक के बेंगलूर बाज़ार में महीने के दौरान नारियल का भाव प्रति हज़ार फल 22500 रुपए पर खुला और प्रति हज़ार फल 27500 रुपए पर बंद हुआ।

अंतर्राष्ट्रीय भाव

नारियल

फिलीपीन्स, इंडोनेशिया, श्रीलंका और भारत के विभिन्न देशीय बाज़ारों में नारियल का भाव सारणी में दर्शाया गया है।

नारियल तेल

नारियल तेल के अंतर्राष्ट्रीय भाव और अन्य देशों के देशीय भाव में महीने के दौरान घटाव का रुख रहा। विविध अंतर्राष्ट्रीय/देशीय बाज़ारों में नारियल तेल का भाव सारणी में दर्शाया गया है।

खोपरा

फिलीपीन्स, श्रीलंका, भारत और इंडोनेशिया में महीने के दौरान खोपरे के भाव में घटाव का रुख रहा। फिलीपीन्स, इंडोनेशिया और भारत के विविध देशीय बाज़ारों में खोपरे का भाव सारणी में दर्शित है।

जुलाई 2021

नारियल तेल

नारियल तेल का भाव जुलाई 2021 के दौरान कोची और आलप्पुषा बाज़ारों में प्रति क्विंटल 17900 रुपए और कोषिक्कोट बाज़ार में प्रति क्विंटल 18400 रुपए पर खुला। महीने के दौरान तीनों बाज़ारों में नारियल तेल के भाव में घटाव का रुख रहा।

कोची और आलप्पुषा बाज़ारों में नारियल तेल का भाव प्रति क्विंटल 500 रुपए की शुद्ध हानि के साथ प्रति क्विंटल 17400 रुपए और कोषिक्कोट बाज़ार में प्रति क्विंटल 400 रुपए की शुद्ध हानि के साथ प्रति क्विंटल 18000 रुपए पर बंद हुआ।

कंगयम बाज़ार में नारियल तेल का भाव प्रति क्विंटल 15467 रुपए पर खुला और प्रति क्विंटल 134 रुपए की शुद्ध हानि के साथ 15333 रुपए पर बंद हुआ।

पेषण खोपरा

महीने के दौरान पेषण खोपरे का भाव कोची बाज़ार में प्रति क्विंटल 11200 रुपए, आलप्पुष़ा बाज़ार में प्रति क्विंटल 11350 रुपए और कोषिक्कोट बाज़ार में प्रति क्विंटल 11100 रुपए पर खुला।

कोची बाज़ार में पेषण खोपरे का भाव प्रति क्विंटल 300 रुपए और आलप्पुषा बाज़ार में प्रति क्विंटल 700 रुपए और कोषिक्कोट बाज़ार में प्रति क्विंटल 100 रुपए की शुद्ध हानि के साथ प्रति क्विंटल क्रमशः 10900 रुपए, 10650 रुपए और 11000 रुपए पर बंद हुआ।

तमिलनाडु के कंगयम बाज़ार में पेषण खोपरे का भाव प्रति क्विंटल 10300 रुपए पर खुला और घटाव का रुख दर्शाकर प्रति क्विंटल 10200 रुपए पर बंद हुआ।

खाद्य खोपरा

रिपोर्टाधीन महीने के दौरान कोषिक्कोट बाज़ार में राजापुर खोपरे का भाव प्रति क्विंटल 17100 रुपए पर खुला और प्रति क्विंटल 1400 रुपए के शुद्ध लाभ के साथ 18500 रुपए पर बंद हुआ।

गोल खोपरा

तिप्तुर बाज़ार में गोल खोपरे का भाव प्रति क्विंटल 15800 रुपए पर खुला और प्रति क्विंटल 400 रुपए के शुद्ध लाभ के साथ प्रति क्विंटल 16200 रुपए पर बंद हुआ।

सूखा नारियल

कोषिक्कोट बाज़ार में सूखा नारियल का भाव प्रति क्विंटल 15250 रुपए पर खुला और प्रति क्विंटल 500 रुपए के शुद्ध लाभ के साथ प्रति क्विंटल 15750 रुपए पर पर बंद हुआ।

नारियल

केरल के नेटुमंगाट बाज़ार में नारियल का भाव प्रति हज़ार फल 16000 रुपए पर खुला और उसी भाव पर बंद हुआ।

तमिलनाडु के पोल्लाच्ची बाज़ार में महीने के दौरान नारियल का भाव प्रति मेट्रिक टन 12000 रुपए पर खुलकर उसी भाव पर बंद हुआ।

कर्नाटक के बेंगलूर बाज़ार में नारियल का भाव महीने के दौरान प्रति हज़ार फल 27500 रुपए पर खुला और उसी भाव पर बंद हुआ।

अंतर्राष्ट्रीय भाव

नारियल

फिलीपीन्स, इंडोनेशिया, श्रीलंका और भारत के विभिन्न देशीय बाज़ारों में नारियल का भाव सारणी में दर्शाया गया है।

नारियल तेल

नारियल तेल के अंतर्राष्ट्रीय भाव में महीने के दौरान मिश्रित रुख रहा।

विविध अंतर्राष्ट्रीय/देशीय बाज़ारों में नारियल तेल का भाव सारणी में दर्शाया गया है।

खोपरा

श्रीलंका और फिलीपीन्स में महीने के दौरान खोपरे के भाव में थोड़ा घटाव का रुख रहा। फिलीपीन्स, इंडोनेशिया, भारत और श्रीलंका के विविध देशीय बाज़ारों में खोपरे का भाव सारणी में दर्शित है।

अगस्त 2021

नारियल तेल

नारियल तेल का भाव अगस्त 2021 के दौरान कोची और आलप्पुषा बाज़ारों में प्रति क्विंटल 17400 रुपए और कोषिक्कोट बाज़ार में प्रति क्विंटल 18000 रुपए पर खुला।

कोची और आलप्पुषा बाज़ारों में नारियल तेल का भाव प्रति क्विंटल 17400 रुपए पर ही बंद हुआ और कोषिक्कोट बाज़ार में प्रति क्विंटल 100 रुपए की शुद्ध हानि के साथ प्रति क्विंटल 17900 रुपए पर बंद हुआ।

कंगयम बाज़ार में नारियल तेल का भाव प्रति क्विंटल 15167 रुपए पर खुला और प्रति क्विंटल 367 रुपए की शुद्ध हानि के साथ 14800 रुपए पर बंद हुआ।

पेषण खोपरा

महीने के दौरान पेषण खोपरे का भाव कोची बाज़ार में प्रति क्विंटल 10900 रुपए, आलप्पुषा बाज़ार में प्रति क्विंटल 10650 रुपए और कोषिक्कोट बाज़ार में प्रति क्विंटल 11000 रुपए पर खुला।

कोची बाज़ार में पेषण खोपरे का भाव प्रति क्विंटल 150 रुपए और कोषिक्कोट बाज़ार में प्रति क्विंटल 200 रुपए की शुद्ध हानि के साथ कोची, आलप्पुषा और कोषिक्कोट बाज़ारों में प्रति क्विंटल क्रमशः 10750 रुपए, 10650 रुपए और 10800 रुपए पर बंद हुआ।

तमिलनाडु के कंगयम बाज़ार में पेषण खोपरे का भाव प्रति क्विंटल 10200 रुपए पर खुला और घटाव का रुख दर्शाकर प्रति क्विंटल 10100 रुपए पर बंद हुआ।

खाद्य खोपरा

रिपोर्टाधीन महीने के दौरान कोषिक्कोट बाज़ार में राजापुर खोपरे का भाव प्रति क्विंटल 18500 रुपए पर खुला और प्रति क्विंटल 700 रुपए के शुद्ध लाभ के साथ 19200 रुपए पर बंद हुआ।

गोल खोपरा

तिप्तुर बाज़ार में गोल खोपरे का भाव प्रति क्विंटल 16500 रुपए पर खुला और प्रति क्विंटल 500 रुपए की शुद्ध हानि के साथ प्रति क्विंटल 16000 रुपए पर बंद हुआ।

सूखा नारियल

कोषिक्कोट बाज़ार में सूखा नारियल का भाव प्रति क्विंटल 15750 रुपए पर खुला और महीने के दौरान उसी भाव पर स्थिर रहा।

नारियल

केरल के नेटुमंगाट बाज़ार में नारियल का भाव प्रति हज़ार फल 16000 रुपए पर खुला और उसी भाव पर बंद हुआ।

तमिलनाडु के पोल्लाच्ची बाज़ार में महीने के दौरान नारियल का भाव प्रति मेट्रिक टन 29000 रुपए पर खुला और प्रति मेट्रिक टन 28500 रुपए पर बंद हुआ।

कर्नाटक के बेंगलूर बाज़ार में नारियल का भाव महीने के दौरान प्रति हज़ार फल 27500 रुपए पर खुला और प्रति हज़ार फल 22500 रुपए पर बंद हुआ।

अंतर्राष्ट्रीय भाव

नारियल

फिलीपीन्स, इंडोनेशिया, श्रीलंका और भारत के विभिन्न देशीय बाज़ारों में नारियल का भाव सारणी में दर्शाया गया है।

नारियल तेल

नारियल तेल के अंतर्राष्ट्रीय एवं देशीय भाव में महीने के दौरान घटाव का रुख रहा। विविध अंतर्राष्ट्रीय/देशीय बाज़ारों में नारियल तेल का भाव सारणी में दर्शाया गया है।

खोपरा

फिलीपीन्स और इंडोनेशिया में महीने के दौरान खोपरे के भाव में घटाव का रुख रहा। फिलीपीन्स, इंडोनेशिया और भारत के विविध देशीय बाज़ारों में खोपरे का भाव सारणी में दर्शित है।

भारतीय नारियल पत्रिका की एजेंसी संबंधी शर्तें

1.भारतीय नारियल पत्रिका का वार्षिक शुल्क 40 रुपए और आजीवन शुल्क 1000 रुपए है।

2. एजेंसी के लिए ऐसे व्यक्ति हकदार होंगे जो कम से कम 10 ग्राहकों को दर्ज करते हों।

3. एजेंटों को 25 प्रतिशत कमीशन दिया जाएगा।

4. ग्राहकों को दर्ज करने के बाद कमीशन काटकर बाकी रकम अध्यक्ष, नारियल विकास बोर्ड, केरा भवन, कोची-682011 के पक्ष में मनी आर्डर/डिमांड ड्राफ्ट (एरणाकुलम में देय) द्वारा भेजें। मनी आर्डर का कमीशन एजेंट को चुकाना होगा।

5. रकम के साथ साथ ग्राहकों के नाम व पता भी स्पष्ट रूप से लिखकर भेजें। रकम प्राप्त होते ही पत्रिका प्रत्येक ग्राहक को डाक द्वारा भेजी जाएगी।

6. हमारे कार्यालय में दर्ज ग्राहकों के नाम व पता एवं पत्रिका भेजने की तारीख से एजेंट को अवगत कराया जाएगा।

7. अध्यक्ष, नारियल विकास बोर्ड, केरा भवन, कोची-11 के पते पर संपर्क करें तो एजेंसी का आवेदन प्रपत्र मिल जाएगा।

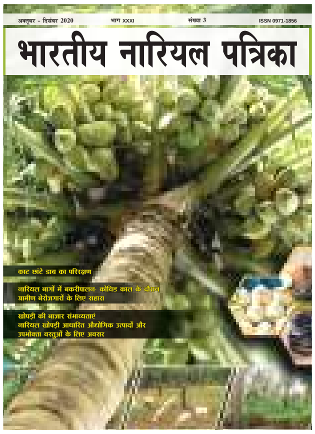

बाज़ार भाव-देशीय

जून 2021

तारीख	नारियल तेल				पेषण खोपरा				खाद्य खोपरा	गोल खोपरा	सूखा नारियल	आंशिक रूप से छिले नारियल		
	(रु. / क्वि.)											(रु./1000 फल)		
	कोची	आलप्पुषा	कोषि़क्कोट	कंगयम	कोची (एफएक्यू)	आलप्पुषा (राशि खोपरा)	कोषि़क्कोट	कंगयम	कोषि़क्कोट	तिप्तूर	कोषि़क्कोट	नेटुमंगाट	पोल्लाच्ची	बैंगलूर
01.06.2021	18300	18400	20200	16133	11950	11850	12000	10500	20000	16400	10350	18000	रि.प्रा.न.	22500
05.06.2021	18300	18300	20000	16267	11850	11800	11600	10700	19000	16000	10350	18000	रि.प्रा.न.	22500
12.06.2021	18300	18300	18900	16000	11850	11800	11500	10500	18500	15300	10350	18000	रि.प्रा.न.	22500
19.06.2021	18200	18200	18700	16000	11750	11650	11350	10600	17500	15900	10350	17000	रि.प्रा.न.	22500
26.06.2021	17900	17900	18400	15400	11300	11350	11100	10300	16800	रि.प्रा.न.	16000	17000	12000	22500
30.06.2021	17900	17900	18400	15467	11200	11350	11100	10350	17100	रि.प्रा.न.	15250	16000	12000	27500

जुलाई 2021

तारीख	नारियल तेल				पेषण खोपरा				खाद्य खोपरा	गोल खोपरा	सूखा नारियल	आंशिक रूप से छिले नारियल		
	(रु. / क्वि.)											(रु./1000 फल)		
	कोची	आलप्पुषा	कोषि़क्कोट	कंगयम	कोची (एफएक्यू)	आलप्पुषा (राशि खोपरा)	कोषि़क्कोट	कंगयम	कोषि़क्कोट	तिप्तूर	कोषि़क्कोट	नेटुमंगाट	पोल्लाच्ची	बैंगलूर
01.07.2021	17900	17900	18400	15467	11200	11350	11100	10300	17100	15800	15250	16000	12000	27500
03.07.2021	17700	17800	18300	15000	11000	11050	10700	10100	16900	15600	15250	16000	12000	27500
10.07.2021	17200	17200	17300	14533	10400	10300	10350	9650	16400	15500	15250	16000	12000	27500
17.07.2021	17200	17200	17400	14733	10400	10300	10450	10000	16500	15800	15250	16000	12000	27500
24.07.2021	17200	17200	17400	15667	10700	10300	10700	10300	17200	15500	15250	16000	12000	27500
31.07.2021	17400	17400	18000	15333	10900	10650	11000	10200	18500	16200	15750	16000	12000	27500

अगस्त 2021

तारीख	नारियल तेल				पेषण खोपरा				खाद्य खोपरा	गोल खोपरा	सूखा नारियल	आंशिक रूप से छिले नारियल		
	(रु. / क्वि.)											(रु./1000 फल)		
	कोची	आलप्पुषा	कोषि़क्कोट	कंगयम	कोची (एफएक्यू)	आलप्पुषा (राशि खोपरा)	कोषि़क्कोट	कंगयम	कोषि़क्कोट	तिप्तूर	कोषि़क्कोट	नेटुमंगाट[1]	पोल्लाच्ची[2]	बैंगलूर[3]
02.08.2021	17400	17400	18000	15167	10900	10650	11000	10200	18500	16500	15750	16000	29000	27500
07.08.2021	17500	17500	18000	15333	11000	10850	11200	10300	18000	16000	15750	16000	29000	22500
14.08.2021	17500	17500	18150	14933	10800	10850	10850	10100	19000	16500	15750	16000	29000	रि.प्रा.न.
21.08.2021	रि.प्रा.न.	रि.प्रा.न.	रि.प्रा.न.	रि.प्रा.न.	रि.प्रा.न.	रि.प्रा.न.	रि.प्रा.न.	रि.प्रा.न.	रि.प्रा.न.	16000	रि.प्रा.न.	16000	रि.प्रा.न.	27500
28.08.2021	17400	17400	17900	14667	10750	10650	10750	10000	19200	16000	15750	16000	28500	रि.प्रा.न.
31.08.2021	17400	17400	17900	14800	10750	10650	10800	10100	19200	रि.प्रा.न.	15750	16000	28500	22500

1. नेटुमंगाट(रु./1000 नारियल)(स्रोत: ईपेपर, केरला कौमुदी)
2. पोल्लाची(रु./प्रति मे.टन)(स्रोत: स्टार मार्केट बुलेटिन)
3. बेंगलूर ग्रेड 1 गुणवत्ता नारियल(रु./1000 नारियल)(स्रोत: कृषि मराठा वाहिन

बाज़ार भाव-अंतर्राष्ट्रीय

जून 2021

तारीख	छिले पानी युक्त नारियल (यूएस $/ मे.ट.)				नारियल तेल (यूएस $/ मे.ट.)					खोपरा (यूएस $/ मे.ट.)			
	देशीय				अंतर्राष्ट्रीय	देशीय							
	फिलीपीन्स	इंडोनेशिया	श्रीलंका	भारत*	फिलीपीन्स	फिलीपीन्स	इंडोनेशिया	श्रीलंका	भारत*	फिलीपीन्स	इंडोनेशिया	श्रीलंका	भारत*
05.06.2021	228	217	314	रि.प्रा.न.	1680	रि.प्रा.न.	1481	3706	2189	984	908	2103	1440
12.06.2021	228	204	302	रि.प्रा.न.	1712	रि.प्रा.न.	1516	3579	2153	990	940	2103	1413
19.06.2021	221	201	रि.प्रा.न.	रि.प्रा.न.	1564	रि.प्रा.न.	1450	रि.प्रा.न.	2153	963	910	रि.प्रा.न.	1427
26.06.2021	रि.प्रा.न.	206	रि.प्रा.न.	370	रि.प्रा.न.	रि.प्रा.न.	1464	रि.प्रा.न.	2072	रि.प्रा.न.	907	रि.प्रा.न.	1386

जुलाई 2021

तारीख	छिले पानी युक्त नारियल (यूएस $/ मे.ट.)				नारियल तेल (यूएस $/ मे.ट.)					खोपरा (यूएस $/ मे.ट.)			
	देशीय				अंतर्राष्ट्रीय	देशीय							
	फिलीपीन्स	इंडोनेशिया	श्रीलंका	भारत*	फिलीपीन्स	फिलीपीन्स	इंडोनेशिया	श्रीलंका	भारत*	फिलीपीन्स	इंडोनेशिया	श्रीलंका	भारत*
03.07.2021	209	185	257	371	1582	रि.प्रा.न.	1487	3064	2022	938	915	1551	1362
10.07.2021	205	186	270	364	1576	रि.प्रा.न.	1493	3064	1960	925	922	1526	1302
17.07.2021	197	179	301	371	1604	रि.प्रा.न.	1497	3052	1987	915	928	1526	1348
24.07.2021	रि.प्रा.न.	179	302	384	1590	रि.प्रा.न.	1490	3127	2113	रि.प्रा.न.	962	1526	1389
31.07.2021	187	180	रि.प्रा.न.	391	1538	रि.प्रा.न.	1514	रि.प्रा.न.	2068	918	938	रि.प्रा.न.	1375

अगस्त 2021

तारीख	छिले पानी युक्त नारियल (यूएस $/ मे.ट.)				नारियल तेल (यूएस $/ मे.ट.)					खोपरा (यूएस $/ मे.ट.)			
	देशीय				अंतर्राष्ट्रीय	देशीय							
	फिलीपीन्स	इंडोनेशिया	श्रीलंका	भारत*	फिलीपीन्स	फिलीपीन्स	इंडोनेशिया	श्रीलंका	भारत*	फिलीपीन्स	इंडोनेशिया	श्रीलंका	भारत*
07.08.2021	185	188	रि.प्रा.न.	394	1528	रि.प्रा.न.	1493	रि.प्रा.न.	2082	890	934	रि.प्रा.न.	1398
14.08.2021	184	188	रि.प्रा.न.	394	1508	रि.प्रा.न.	1488	रि.प्रा.न.	2027	840	925	रि.प्रा.न.	1371
21.08.2021	183	187	रि.प्रा.न.	रि.प्रा.न.	1470	1425	1484	रि.प्रा.न.	रि.प्रा.न.	827	905	रि.प्रा.न.	रि.प्रा.न.
28.08.2021	184	187	रि.प्रा.न.	387	1438	रि.प्रा.न.	1438	रि.प्रा.न.	1991	825	884	रि.प्रा.न.	1358

** भारत : नारियल तेल - कंगयम बाज़ार, खोपरा - कंगयम बाज़ार, नारियल - पोल्लाच्ची बाज़ार*

नारियल विकास बोर्ड के कार्यालय

मुख्यालय

श्री राजबीर सिंह भा.व.से.
अध्यक्ष : 0484 2375216
श्री राजीव भूषण प्रसाद
प्रभारी मुख्य नारियल विकास अधिकारी : 2375999
श्री आर. मधु
सचिव : 2377737

नारियल विकास बोर्ड
(कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार)
पो.बो.सं. 1021, केरा भवन, कोची - 682 011,
केरल, भारत
कार्यालय ईपीएबीएक्सः 2376265, 2376553,
2377266, 2377267

ग्राम्स : KERABOARD
फैक्स : 91 484 2377902
ई-मेल : kochi.cdb@gov.in,
cdbkochi@gmail.com
वेबसाइट : www.coconutboard.gov.in

क्षेत्रीय कार्यालय

कर्नाटक
इ. अरवाड़ी
प्रभारी निदेशक,
क्षेत्रीय कार्यालय सह प्रौद्योगिकी केन्द्र
नारियल विकास बोर्ड, हूलिमावु,
बन्नेरघट्टा रोड, बंगलुरु - 560076.
दू.भा. : 080-26593750, 26593743
फैक्स : 080-26594768
ई-मेल : ro-bnglr@coconutboard.gov.in,
cdbroblr@gmail.com

असम
निदेशक, क्षेत्रीय कार्यालय
नारियल विकास बोर्ड, उत्तर पूर्वी
राज्य कार्यालय/ प्रशिक्षण/प्रौद्योगिकी केन्द्र,
हाउसफेड काम्प्लेक्स, (छठा तल),
वायरलेस बसिष्ठा रोड, लास्ट गेट,
दिसपुर, गुवाहटी -781 006
दू.भा. : (0361) 2220632
फैक्स : 0361-2229794
ई-मेल : ro-guwahati@coconutboard.gov.in,
cdbassam@gmail.com

तमिलनाडु
श्रीमती बाला सुधाहरि
प्रभारी निदेशक, क्षेत्रीय कार्यालय,
नारियल विकास बोर्ड
सं 47, एफ-1,डा. रामस्वामी शालइ,
के.के. नगर, चेन्नई-600 078
दूर भाष 044- 23662684, 23663685
ई-मेल : ro-chennai@coconutboard.gov.in,
cdbroc@gmail.com

बिहार
श्री राजीव भूषण प्रसाद
निदेशक,
किसान प्रशिक्षण केंद्र सह क्षेत्रीय कार्यालय
नारियल विकास बोर्ड, बीएमपी तालाब के
सामने, जगदेवपथ, फुलवारी रोड़, डाक-बिहार
पशु चिकित्सा महाविद्यालय (बी.वी.सी.),
पटना-800014, दू.भा. : (0612) 2272742
फैक्स : 0612- 2272742
ई-मेलः ro-patna@coconutboard.gov.in,
dirropatna@gmail.com

राज्य केन्द्र

अन्डमान व निकोबार द्वीप समूह
उप निदेशक, नारियल विकास बोर्ड
मुख्य डाक कार्यालय के पास,
हाउस एम बी सं. 54, गुरुद्वारा लेइन,
पोर्ट ब्लेयर-744 101, दक्षिण अन्डमान
अन्डमान व निकोबार द्वीप समूह, दू.भा. : (03192)-233918
ई-मेल : sc-andaman@coconutboard.gov.in

महाराष्ट्र
डा. अमेय देबनाथ
उप निदेशक, राज्य केन्द्र, नारियल विकास बोर्ड
फ्लैट नं - 203, दूसरा तल, यूकालिप्टस बिल्डिंग,
घोडबंदर रोड, ठाणे (वेस्ट)-400 610, महाराष्ट्र
दू.भा. : 022-65100106
ई-मेल : sc-thane@coconutboard.gov.in,
cdbthane@gmail.com

ओड़िशा
डा. रजतकुमार पाल
उप निदेशक, राज्य केन्द्र, नारियल विकास बोर्ड
पित्तापल्ली, कुमरबस्ता डाक
खुरदा जिला - 752 055, ओडिशा
दू.भा. : 8280067723
ई-मेल : sc-pitapalli@coconutboard.gov.in,
cdborissa@gmail.com

आंध्र प्रदेश
सहायक निदेशक, राज्य केन्द्र, नारियल विकास बोर्ड, डो.नं. 4-123, राजुला बाज़ार
रामवरप्पडु डाक, जिला परिषद हाइ स्कूल के पास
विजयवाड़ा-521108, कृष्णा जिला, आंध्र प्रदेश
टेलीफैक्स नं. 0866-2842323/मोबाइलः 09866479650
ई-मेलः sc-vijayawada@coconutboard.gov.in, cdbvijap@gmail.com

पश्चिम बंगाल
उप निदेशक, राज्य केन्द्र,
नारियल विकास बोर्ड, डी.ए.-94 -सेक्टर-1
साल्ट लेक, कोलकात्ता - 700 064
दू.भा. : (033) 23599674, फैक्स : 91 33-23599674
ई-मेल : sc-kolkata@coconutboard.gov.in, cdbkolkata@gmail.com

बाज़ार विकास सह सूचना केन्द्र, दिल्ली
सहायक निदेशक, नारियल विकास बोर्ड
बाज़ार विकास सह सूचना केन्द्र,120,
हरगोबिन्द एनक्लेव, दिल्ली- 110 092,
दू.भा.: 011-22377805, फैक्स : 011-22377806
ई-मेल : mdic-delhi@coconutboard.gov.in,
cdbmdic@gmail.com

क्षेत्र कार्यालय, तिरुवनंतपुरम
क्षेत्र कार्यालय, नारियल विकास बोर्ड,
एग्रिकल्चरल अर्बन हॉलसेल मार्कट (वॅर्ल्ड मार्कट)
आनयरा पी.ओ., तिरुवनंतपुरम - 695 029
दूरभाष, फैक्स : 0471-2741006,
ई-मेल : fo-tvprm@coconutboard.gov.in,
cdbtvm@yahoo.in

सी आई टी, आलुवा
उप निदेशक (प्रौद्योगिकी विकास एवं उद्यमिता)
नारियल विकास बोर्ड, प्रौद्योगिकी विकास केन्द्र,
कीनपुरम, दक्षिण वाष़क्कुलम, आलुवा पिन-683105,
दूरभाषः 0484 2679680,
ई-मेल : cit-aluva@coconutboard.gov.in,
citaluva@gmail.com

प्रदर्शन-सह-बीज उत्पादन फार्म

आंध्र प्रदेशः सहायक निदेशक, प्रदर्शन-सह-बीज उत्पादन फार्म, नारियल विकास बोर्ड, वेगिवाडा (गाँव) मकान संख्या 688, तडिकलापुडी (द्वारा), पश्चिम गोदावरी (जिला), आंध्र प्रदेश - 534 452, दू.भा. : (08812) 212359, ई-मेल : f-vegiwada@coconutboard.gov.in, dspfmvgda@gmail.com

असमः सहायक निदेशक, प्रदर्शन-सह-बीज उत्पादन फार्म नारियल विकास बोर्ड, अभयपुरी, बोंगैगांव, असम - 783 384, दू.भा. : 9957694242
ई-मेल : f-abhayapuri@coconutboard.gov.in, cdbdspabhayapuri@gmail.com

बिहारः सहायक निदेशक, प्रदर्शन-सह-बीज उत्पादन फार्म, नारियल विकास बोर्ड, सिंहेश्वर (डाक), मधेपुरा जिला, बिहार - 852 128.
दू.भा. : (06476) 283015., ई-मेल : f-madhepura@coconutboard.gov.in, dspfms@gmail.com

पश्चिम बंगालः सहायक निदेशक, नारियल विकास बोर्ड, डीएसपी फार्म, फुलिया, एसबीआई फुलिया शाखा के पास, एनएच-34, बेलेमठ डाक, नादिया, पश्चिम बंगाल- 741 402
दू.भा. : 03473 234002, ई-मेल : f-fulia@coconutboard.gov.in, dspfarmfulia@gmail.com

कर्नाटकः सहायक निदेशक, प्रदर्शन-सह-बीज उत्पादन फार्म, नारियल विकास बोर्ड, पुरा गाँव, लोकसारा (डाक), मंड्या जिला, कर्नाटक-571478
दू.भा.: (08232) 298015, ई-मेल :f-mandya@coconutboard.gov.in, dspfarmmandya@gmail.com

केरलः सहायक निदेशक, प्रदर्शन-सह-बीज उत्पादन फार्म, नारियल विकास बोर्ड, नेर्यमंगलम, पिन - 686 693, दू.भा. : (0485) 2554240,
ई-मेल : f-neriamangalam@coconutboard.gov.in, cdbnrlm@gmail.com

छत्तीसगढ़ः सहायक निदेशक, प्रदर्शन-सह-बीज उत्पादन फार्म, नारियल विकास बोर्ड, कोंडागाँव - 494 226, बस्तर जिला, दू.भा. : (07786) 242443,
फैक्स : (07786) 242443, ई-मेल : f-kondagaon@coconutboard.gov.in, cdbkgn1987@gmail.com

ओड़िशाः सहायक निदेशक, प्रदर्शन-सह-बीज उत्पादन फार्म, नारियल विकास बोर्ड, पित्तापल्ली, कुमरबस्ता डाक, खुरदा जिला - 752055,
दू.भा. : 8280067723, ई-मेल : f-pitapalli@coconutboard.gov.in, cdbdspfarmodisha@gmail.com

महाराष्ट्रः सहायक निदेशक , नारियल विकास बोर्ड, प्रबीउ फार्म, पालघर, दापोली गाँव, सतपति डाक, पालघर-401405, महाराष्ट्र,
दू.भा.: 02525 256090, ई-मेल : f-palghar@coconutboard.gov.in, dspfarmpalghar@gmail.com

तमिलनाडुः सहायक निदेशक, प्रबीउ फार्म, नारियल विकास बोर्ड, धली, तिरुमूर्ति नगर डाक, उदुमलपेट, तमिलनाडु-642112,
दू.भा.: 04252 265430, ई-मेलः f-dhali@coconutboard.gov.in, dspfarmdhali@gmail.com

त्रिपुराः सहायक निदेशक, प्रबीउ फार्म, नारियल विकास बोर्ड, हिच्चाचेरा, सकबारी डाक, जोलाइबारी(मार्ग), सबरूम, दक्षिण त्रिपुरा, त्रिपुरा-799141
दू.भा.: 038 23263059, ईमेलः f-hitchachara@coconutboard.gov.in, dspfarmhichacharatripura@gmail.com

Regd/7-19817/89
भाग XXXII, संख्या :2

भारतीय नारियल पत्रिका

जुलाई-सितंबर 2021
मूल्य : 10 रु.

पहचानें नारियल की खूबियों को

वित्तीय सहायता प्राप्त करें

नारियल आधारित उद्योग स्थापित करने के लिए नारियल प्रौद्योगिकी मिशन (टीएमओसी) के अधीन

नारियल प्रसंस्करण इकाइयाँ स्थापित करने हेतु वित्तीय सहायता उद्यमियों के लिए परियोजना लागत का 25% अधिकतम 50 लाख रुपए तक और अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति की महिला उद्यमियों के लिए परियोजना लागत का 33.3% अधिकतम 50 लाख रुपए तक।

संभावी उद्यमी/गैर सरकारी संगठन/सहकारिताएं/किसान उत्पादक संगठन/ व्यक्तियाँ वित्तीय सहायता के हकदार हैं।

नारियल आधारित मूल्य वर्धित उत्पाद जैसे डेसिकेटड नारियल पाउडर, फ्लेवर्ड नारियल दूध(तुरंत पीने योग्य), डाब पानी, नारियल दूध पाउडर, विर्जिन नारियल तेल, नारियल दूध, नीरा, नारियल खोपड़ी आधारित पाउडर, कोयला और सक्रियित कार्बन आदि के लिए वित्तीय सहायता प्रदान की जाएगी।

अधिक जानकारी के लिए बोर्ड की वेबसाइट देखें: www.coconutboard.gov.in

नारियल विकास बोर्ड
(कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार)
कोची, केरल, फोन: 0484-2377266, 67

For more details visit Board's website: www.coconutboard.gov.in

Coconut Development Board
[MINISTRY OF AGRICULTURE & FARMERS WELFARE,
GOVERNMENT OF INDIA] KOCHI, KERALA. PH : 0484-2377266, 67